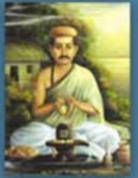
जनवरी - मार्च 2011 20 टका

पूर्वोत्तर मैथिल

पचीसम गौरवपूर्ण अंक



विद्यापति स्मृति पर्व

टटका पीढ़ी पर केन्द्रित

सत्ताक देहरि पर ठाढ़ नारी!



पूर्वोत्तर क्षेत्र : एक मनोरम भारत



हमर समाज



महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह



website: www.purvottarmaithil.com



मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक त्रैमासिक पत्रिका

अंक 25, जनवरी 2011 सँ मार्च 2011

प्रकाशक : **विनय कुमार झा**
मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी

मुद्रक : **बालाजी प्रिंटर्स**
छत्रीबाड़ी, गुवाहाटी, असम

: संपादकीय एवं पत्राचारक पता :
प्रेमकांत चौधरी
फ्लैट नं. 2 सी, ब्लॉक-बी, पुन्य इंक्लेभ,
आरजी बरुवा रोड, (सिन्हा लाज के पीछे)
गणेशगुड़ी, गुवाहाटी-781006
मो. : 094353-42658, 098540-50707

E-mail : purvottarmaithil@gmail.com
msssghy2000@gmail.com

Bank A/C No.
Mithila Sanskritik Samanway Samiti
SBI A/C No. : 31539261052

एहि अंक मे



आर्थिक विकास आ पलायन

मिथिला मे ई बात शदियों सँ प्रचलित अछि जे नव घर उठे आ पुरान घर खसे। यानी प्रगतिशील मिथिला में सबदिन नव पहल के स्वागत भेल अछि। तर्क आ मीमांशा अहि क्षेत्र में सबल रहल जाहि कारणे अहि ठाम कोनो एक स्कूल आ एक विचार अपन स्थायी स्वीकृत नहि पाबि सकल। आर्थिक गतिविधिक ताना वाना भले ही मिथिला में पूर्ण विकसित नहि भ' सकल त' लोक खुद व्यक्तिगत तौर पर विकासक नव द्वार खोलबाक लेल उद्धृत भेलाह। पलायन भले ही कोनो समाज के बीच अभिशाप मानल जायत अछि, लेकिन मिथिला सँ भेल पलायन अहि क्षेत्रक लेल बरदान साबित भेल अछि। अहि क्षेत्रक अकुशल कारीगर ,मेहनत आ मजदूरी करेवाला आ मजदूर पलायन के बाद ही समाज में अपन कीमत जानलक। लेकिन खास बात जे ई तबका भले ही अपना लेल एकटा नवसंसार बनेवाक लेल उद्धृत भेल लेकिन अपन गाम अपन समाज सँ हिनकर दुरी कहिओ कम नहि भेल। आ नहि मिथिला सँ बाहर भेल मजदूर अपन संपर्क मिथिला सँ छोड़लक।

लेकिन मिथिलाक एकटा पलायन कहियो घरमुहा नहि भ' सकल पढ़ल - लिखल लोकक ई वर्ग अपना के कुशल मजदूर मानि जाहि शहर मे रोजी-रोटी क' जुगाड़ में अयलाह पुनः वापस गाम जयबाक इच्छा परित्याग कय देलैंह। देश विदेशक कतेको महानगर में मिथिला सँ आयल लोकक अपन समाज छैन्ह। आ अपन नवसृजित संस्कृति लेकिन अहि ठाम मिथिलाक छाप नदारद अछि। आर्थिक विकास में पलायनक भूमिका के नजरन्दाज नहि कयल जा सकैत अछि लेकिन ओ विकास कि जाही मे बहुत खो कय किछु पाबय के लेल अपन अस्तित्व के दाव पर लगा दी..

- अंजनी कुमार
नई दिल्ली

स्तरीय पत्रिका

पूर्वोत्तर मैथिल जेहन धारदार आ स्तरीय पत्रिकाक लेल समस्त मैथिल परिवार कें साधुवाद। नीक लागल जे रचनाक चयन स्तरीय अछि।

साहित्यक नब रस सभ भरि छाक पीलहुं। मुदा एकटा संशय अछि जे इ प्राय: उपलब्ध रहैछ की ने ? पत्रिकाक निरंतरताक आशा अछि। आ ईहो विश्वास रखैत छी जे आगुओ रचना सभ मे नब 'क्लेवर' भेटैत रहत। साहित्यक घसल विषयक स्थान पर नब प्रतीक, नब साहित्यिक रचना उपलब्ध होइत रहत जाहि सं मैथिली साहित्य समृद्ध होयत, माने प्रसाद गुणक नाम पर वास्तविक साहित्य कें कंठ नहि मोंकल जायत।

- प्रवीण काश्यप
दरभंगा

'पूर्वोत्तर मैथिल'क ई अंक अहांके केहन लागल, अपन विचार, सुझाव लिखिकए पठाऊ। पता अछि :

संपादक, पूर्वोत्तर मैथिल
फ्लैट नं. 2 सी, ब्लॉक-बी, पुन्य इंक्लेभ, आरजी बरुवा रोड, (सिन्हा लाज के पीछे) गणेशगुड़ी, गुवाहाटी-781006

निवेदन

- जनगणना मे सभ मैथिलजन अपन मातृभाषा मैथिली लिखाबी।
- गैर-मैथिल मित्र सभ के उपहार मे मधुबनी पेंटिंग देबाक अभ्यास करी।
- अपन गाम मे कोनो रचनात्मक कार्य सं जुड़ल रही।
- वर्ष मे एक बेर अपन गाम अवश्य आबी।

पूर्वोत्तर मैथिलक अगिला अंकक लेल रचना आमंत्रित अछि।

मैथिली के चाही बेस्टसेलर लेखक



मैथिली के एकटा नियमित पत्रिकाक टटका अंक देखलौंह जे संयुक्त अंक के रूप में छह महीना पर प्रकाशित भेल अछि। संपादकीय में एकर पाछू तर्क देल गेल अछि जे मैथिली मे स्तरीय रचनाक अभाव अछि तैँ विलंब से अंक प्रकाशित भेल। कोनो भाषा-साहित्य के लेल ई चिंताक बात कहल जा सकैत अछि। मैथिलीक प्रबुद्धजन सं बीच-बीच मे गप्प भेला पर यैह सुनैत छी जे मैथिली मे पोथीक मार्केट नहिं अछि। पुस्तक प्रकाशन अखन घरि व्यावसायिक स्तर पर नहिं कयल जा रहल अछि। जे किछु प्रयास भ'रहल अछि से ऊंट क मुंह मे जीरक फोड़न जेंका कहल जा सकैत अछि। किछु लोक साधन संपन्न छैथ आ अपन भाषा सं प्रेम करैत छैथ तैँ अपना स्तर पर किछु प्रकाशन करै मे लागल छैथ। स्तरीय लेखन करैबला साहित्यकारक अभाव अछि। किछु लोक सृजनक क्षेत्र मे नीक लिख रहल छैथ। मुदा एकटा भाषा के उत्कर्षक मार्ग पर अग्रसर करैके लेल किछु गिनल-चुनल लोक के पर्याप्त नहिं कहि सकैत छी।

मैथिली मार्खेज सनक कोनो अद्‌भुत प्रतिभाशाली साहित्यकारक प्रतीक्षा क' रहल अछि। केरल मे साहित्यकार लोकनि सहकारी प्रकाशन संस्था खोलिकए अपन-अपन पोथी प्रकाशित करैत छथि।

मैथिलीक अतीतक समृद्धि से मुग्ध भ'क' हम वर्तमानक विपन्नता के बिसरि नहिं सकैत छी। अतीतजीवी बनिके कोनो जाति अपन उन्नति नहिं क' सकैत अछि। मैथिली भाषा-साहित्यक यज्ञ मे आहुति देबाक लेल बहुत रास नब-नब हरिमोहन झा, राजकमल चौधरी, वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क आवश्यकता अछि। मैथिली के चेतन भगत सनक बेस्ट सेलर लेखकक आवश्यकता अछि। जखन कियो अद्‌भुत आ अनुपम रचना लिखत त' ओकरा पढ़ैके लेल पाठक वर्ग अपने आप आगू आबि जायत। नोबल पुरस्कार विजेता लातिन अमरीकी लेखक गार्बिया गार्सिया मार्खेज स्पेनिश भाषा मे उपन्यास लिखैत छथि, जाहि भाषा के जनैबलाक संख्या बेशी नहिं अछि। मुदा मार्खेजक लेखन अतेक अद्‌भुत अछि जे विश्व भरि मे हुनकर अनुवाद प्रकाशित होइत अछि। मैथिली मार्खेज सनक कोनो अद्‌भुत प्रतिभाशाली साहित्यकारक प्रतीक्षा क' रहल अछि।

केरल मे साहित्यकार लोकनि सहकारी प्रकाशन संस्था खोलिकए अपन-अपन पोथी प्रकाशित करैत छथि। सब लेखक के नीक रॉयल्टी सेहो भेटैत छैक। एहेन प्रयोग मैथिली के लेखक लोकनि किएक नहिं क' सकैत छथि। वास्तव मे जाहि भाषाक कोनो दैनिक पत्र आ साप्ताहिक पत्र नहिं अछि, ओहि भाषा मे चेतनाक अभाव कोनो आश्चर्य गप नहिं थीक। तैयो हमरा सभके हतोत्साहित नहिं भ'क' नबका मार्ग बनेबाक पुरुषार्थ करबाक चाही। प्रसन्नताक बात अछि जे मिथिला सँ बाहर बहुत ठाम प्रवासी मैथिल लोकनि एहि तरहक पुरुषार्थ क' रहल छैथ जेकर नीक फल एक दिन मिथिलाके अवश्य भेटत।

– **दिनकर कुमार,** मो. 9435103755

पूर्वोत्तर मैथिल अपनेक नगर मे उपलब्ध अछि :-

असम : ● **गुवाहाटी :** अरुण कुमार झा, बामुनीमैदान, मो. : 94351-01766, कमलकांत झा, फटाशील आमबाड़ी, मो. : 9864176437, रविकुमार झा, फटाशील आमबाड़ी, मो. : 986417५६२८२ दिलीप कुमार झा, बेलतला, फोन : 94350-13450, श्री तिलकेश्वर झा तरूण नगर, फो. : 9954586540, संतोष कुमार झा फैन्सी बाजार, फो. : 98641-26176, विंदेश्वर मिश्र मालिगाँव पांडू फो. : 98542-87692 ● **जोरहाटः** स्कंद कुमार मिश्र, दुर्गा भंडार, भगदोईमुख, ए.टी. रोड, जोरहाट, फो. : 94357-03453, ● **खारुपेटिया :** पवन कुमार झा, बालचंद खुराना रोड, वार्ड नं. 1, खारुपेटिया, दरंग, फो.: 9435088346, डा. के.के. झा, दरंग कालेज, दरंग, फो. : 9435080059, श्री सतीशचन्द्र झा, डिस्ट्रीक्ट कौंसिल कालोनी, पो.-डिफू, कार्बीआंग्लांग, असम-782420, फो. : 9435366033, ● **बंगाईगांव:** विनयकुमार झा, उत्तरायण मिशन रोड, नतुनपाड़ा, बंगाईगांव, ● **बिहारः पटना**-श्री शरदिन्दू चौधरी, संपादक, समय साल, 2ए-39 इन्दपुरी, पटना -24, फो. : 09334102305, राजेश कुमार झा, मिथिला कालोनी, नशरीगंज, पो. बाटागंज, पटना-18, **मुजफ्फरपुर**- श्री विष्णुकान्त झा, 9470834202, श्री अजीत कुमार झा, फो.: 09472834926, ● **मधुबनी :** श्री गया प्रसाद सिंह, फोन : 9431287158, भोगेन्द्र मिश्र, चित्रगुप्त नगर समिप नीलम सीनेमा, फो. : 09431654303. ● **दरभंगा**-अग्रवाल न्यूज एजेंसी, स्टेशन रोड, आकांक्षा न्यूज एजेन्सी, मो. : 09031416196, श्री मणिकांत झा फो. : 9431451489, पंकज, मो.: 9507429158 ● **जयनगर**-डॉ. कमलाकान्त झा, शहीद चौक, मो. 09934914944 ● **सहरसा** - विनय कुमार चौधरी, कृष्ण कुटिर, पंचमढ़ी, फो. : 228190, डा.एल.एन. झा, फो. : 9431440145 , ● **कटिहार**-ललन झा, रीडर्स कार्नर, होटल राजस्थान, फो. : 09437206661, श्री नारायण झा, कटिहार - 9431260030 **बेगूसराय :** प्रदीप बिहारी 'मैथिल पुत्र' 09431211543. ● **भागलपुर**-डॉ. प्रेमशंकर सिंह, ऋचायन, राधारानी सिन्हा रोड, फो. : 2422666, ● **समस्तीपुर :** डा. नरेश कुमार विकल, फो.: 094302-44114, ● **मोतीहारी :** सुशील कुमार सुमन, मो.-09431022737, ● **सुपौल :** उमेश मंडल, तुलसी भवन, निर्मली, फो. : 9931654742 **दलसिंहसराय** श्री गौरीनाथ प्रदीप विहारी भास्कर, फो. : 06243215228, डॉ.सत्यनारायण महतो, फो. : 9934258434, श्री गोपाल झा, किशनगंज - 9431885999

● **झारखंड :** डॉ. धनाकर ठाकुर, ई.-35, श्यामली, राँची-2, मो. : 9470193694, **बोकारो :** श्री अमीरी नाथ झा अमर, फो. : 249994, **जमशेदपुर**-डॉ रवीन्द्र कुमार चौधरी, फो. : 09334066298, डॉ. अशोक अविचल, फो. : 9006056324

● **प. बंगाल :** राजकुमार गिरी-रतनदीप अपार्टमेंट, ए-5, ब्लाक-बी, 17, बीटी रोड, कोलकाता-56, 9432303617, अशोक झा, 243, रविन्द्र शरणी, कोलकता-75, लक्ष्मण झा सागर, 3बी, तिस्ता अपार्टमेंट 94 एवेन्यु साउथ, संतोषपुर, कोलकता-7, फो. : 3334909576

● **छत्तीसगढ़ : रायपुर,** मनीश कुमार झा, फोन : 9425517092

● **दिल्ली :** श्री गजेन्द्र ठाकुर पौकेट-सी सेक्टर-ए, बसंतकूंज, न्यू दिल्ली-70, फोन : 09911382078, श्री रंजीत कुमार झा, फो. : 09871-212341 , श्री कृपानन्द झा, फो. : 9868551104 , प्रेमकांत झा, सूर्य बिहार, निकट केसा कॉलोनी, नवावगंज, कानपुर-2, फोन : 99364-34557

● **हरियाणा :** श्री जे.एन. मंडल, हाऊस नं. 3074ए, सेक्टर-3, हाऊसिंगबोर्ड कालोनी, फरीदाबाद-121004 फो. : 09312399739, श्री भीमसिंह मैथिल, फरीदाबाद 9050479190,

● **राजस्थान :** जयपुर - श्री नन्दन मोहन, फो. : 9660013301, श्री अशोक ठाकुर, जेडीए, जयपुर, मो. : 9414076234

● **महाराष्ट्रः** डा. रमा झा, बी.-601, सिल्वर टावर, ठाकुर कालोनी, कांदीवली, मुंबई-400101।
श्री अर्जुन मंडल, पुणे - 9423527219

● **आन्ध्रप्रदेश :** श्री दयानाथ झा, हैदराबाद - 9949157553, श्री ज्योति प्रकाश लाल, हैदराबाद - 9885909451

● **गोवा :** श्री उमेश कुमार कर्ण, फो. : 9423835001

● **नेपाल :** श्री रामरिझन यादव विराटनगर फो. : 00977 - 9852830679, डॉ. रामावतार यादव , काठमाण्डू 01. 4421844 021.523191

प्रतिबिंब

लोकसंस्कृतिक परंपरा ओ विद्यापति

स्मृति पर्व विशेष

✍ डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह ''मौन''



विद्यापति मिथिलांचलक विशिष्ट लोक गीतक विधासभ मे सेहो रचना कयलनि अथवा लोक गीतक संसार मे अपना कें स्थापित कए एकटा सांस्कृतिक परम्पराक निर्माण कयलनि। ओ अपना युगक आभिजात्य संस्कृतिक परम्परा पोषण कयलनि आर लोक संस्कृतिकें 'देसिला वयना'क माध्यमे उत्कर्ष प्रदान कयलनि। अर्थात लोक गीतकें नागर प्रतिष्ठा प्राप्त भेल। संस्कृतिक प्रति संवेदन शून्यताक स्थिति मे लोक गीतक धरतीक उत्कर्ष प्रेरणास्पद मानल जाइछ।

लोकविद्या वेद विद्यासँ अधिक प्राचीन अछि। वेद विद्या वस्तुत: लोक विद्याक सांस्कृतिक प्रतिफलन थिक। मुदा दुनूक समानांतरता अद्यपि अवशिष्ट अछि। अत: लोकविद्या लोकजीवनक सांस्कृतिक आत्मा होइछ, जकरा अध्ययन-अनुशीलनक दृष्टिएं तीन उपखण्डसभ मे विभाजित कयल जा सकैछ- लोक धर्म, लोककला ओ लोक

साहित्य।

लोक धर्म- जनपदीय जीवनकें अनुशासित ओ मर्यादित करएवला मानल जाइछ। एकर विस्तार लोक आस्थापक केन्द्र थान, गहवर ओ गोसाउनिक घर आर ओहिमे प्रतिष्ठित लोक देवी-देवता, हुनक पूजा-अर्चना मे विशेष रूपसँ लागल ओझा-गुनी, सेवक भगत ओ धामी-झाँकी, लोक वाद्य पर नचैत गबैत भक्ति विह्वल लोक, गीत ओ गाथासभक स्वर समवेत, वार्षिक पूजनोत्सव, सामाजिक ओ सांस्कृतिक अनुष्ठान आदि मे देखना जाइछ।

लोक कलाक क्षितिज अपेक्षाकृत अधिक व्यापक अछि। लोक कलाक अंतर्गत परम्परित ओ आनुष्ठानिक लोक मूर्तिकलाक प्रतिरूपेँ सलहेस, बरहम, मधुकर बाबा, विषहरा आदि अतिरिक्त आनुष्ठानिक पात्रसभक रूपेँ हस्तिदीप, पुरहर-पातिल, चौमुख दीप, खिरोदनी आदि कैँ राखल जाइछ। लोक कलाक दोसर विधा लोक चित्रकलाक अंतर्गत मधुबनी, मिथिला एवं मधेसक परम्परित लोक शैली मे बनल अरिपन, कोहबर, नयना योगिन, विषहरा आदिक चित्र ओ सलेहस, गणिनाथ आदिक गाथाकैँ रूपयित करयवला चित्रमाला कैँ राखल जा सकैछ। तेसर प्रकार अछि लोक संगीत। अहि मे लोक वाद्यसभक अतिरिक्त लोकनृत्य-नाट्य अंतर्गत विदापत, रास, नारदी, झूमर, जट-जटिन आदि परिगणित अछि।

लोक साहित्यक क्षेत्र सर्वाधिक व्यापक अछि। लोक साहित्यक अंतर्गत गाथा, गीत, कथा कहबी नाट्य आदि समाविष्ट अछि। मैथिली लोक साहित्य वस्तुत: मिथिलांचलक लोकजीवनक दर्पण बनि गेल अछि। विद्यापति अपना युगक भाषा-साहित्य ओ संस्कृतिक दृष्टिएं युगांतकारी पुरुष छलाह। एक दिस ओ राग-रागिनीबद्ध गीतसभक रचना कयलनि तँ दोसर दिस देसी राग-भास मे सेहो गीत सभ सृजित कयलनि। डॉ. सुभद्र झाक 'विद्यापति गीत संग्रह' मे रागबद्ध गीतसभ संकलित अछि। पं. राजेश्वर झा अहि तरहक गीतसभक अनुशीलन कयने छथि। राम इकबाल सिंह राकेश, डॉ. अणिमा सिंह, कामेश्वरी देवी, डा. विभूति आनंद, मोहन भारद्वाज आदि लोकनि लोककण्ठसँ प्राप्त मैथिली लोक गीतसभक संकलन प्रस्तुत कयने छथि जाहि मे विद्यापति भणितांकित गीतसभ सेहो समाविष्ट अछि। यद्यपि एहि तरहक लोक गीत सभक प्रामाणिकताक दावा नहि कयल जा सकैछ तथापि एहि तरहक परम्परित लोक गीतसभक महत्व कें नकारल नहि जा सकैछ। बल्कि ओ लोक प्रमाणित गीत सभ मैथिली लोक गीत साहित्यक अमूल्य निधि बनि गेल अछि, अहि श्रेणी मे सूर, तुलसी, उमापति, नंदीपति, मंगनीराम आदि सेहो आबि गेल छथि विद्यापति जकां। विद्यापतिक 'पुरुष परीक्षा' आभिजात्य ओ लोक जीवनक दर्पण बनि गेल अछि। ओ अपन गीतसभ मे परिष्कृत लोकोक्ति सभक सेहो जीवनानुभूतिक रूपेँ अभिव्यंजित कयने छथि। एवं प्रकारें विद्यापति साहित्य मे मिथिलांचलक लोक संस्कृतिक स्थापत्यक अनुशीलन कयल जा सकैछ।

विद्यापति भणितांकित राकेश द्वारा संकलित एहि नचारी गीत मे प्रतिक्रिया स्वरूप अरिपनकैँ मेटा देल गेल, पुरहर फोड़ि देल ओ चौमुख दीप फेकि देल गेल- 'ऐपन निपलन्हि, पुरहर फोड़लन्हि, फेकलनि चउमुख दीप।' मिथिलांचलक विवाह मंडप पर अरिपनक आलेखन कयल जाइछ, पुरहर ओ पातिल राखल जाइछ आर हस्तिकलश पर चौमुख दीप जराओल जाइछ (राकेश, पृ. 157)। नचारी गीत मे मिथिलांचलक दुख दैन्यक नग्न चित्र सेहो अंकित भेल अछि।

लोक संस्कृतिक स्थापत्यक मूल आधार अछि लोक धर्म। मिथिलांचलक आभिजात्य वर्ग वैदिक धर्म सँ अनुप्राणित अछि तँ जनसामान्य लोक धर्म सँ। मुदा जनसाधारण मे वैदिक कर्मकांड ओ लोकाचार दुनू तत्व समन्वित अछि। एक दिस वैदिक देवता इन्द्र (जट जटिनक प्रसंगे) ओ सूर्य (छठि व्रतक प्रसंगे) पूजित छथि। बरहमक रूपेँ ब्रह्म पूजित छथि, शिव (नचारी) ओ शक्ति (गोसाउनिक प्रसंगे) पूजित छथि तँ दोसर दिस राम ओ कृष्ण वैष्णवधर्मी लोकधाराक प्रतीक रूपेँ गाम-घर मे सर्वत्र अनुष्ठित छथि। विद्यापतिक सम्पूर्ण गीत साहित्य शिव, शक्ति ओ कृष्ण विषयक अनुगूंजित अछि। मिथिलांचल मे नचारीक परम्परा प्राचीन अछि, जाहिमे शिव उपासना, शिवक औघरदानी स्वरूप, शिव-पार्वती व्याजें बेमेल विवाहक अभिव्यक्ति, वैवाहिक लोकविधिक प्रारूप, लोकाचारक विधान आदि व्यंजित भेल अछि। विद्यापति भणितांकित निम्नलिखित गीतांश सभमे बेमेल विवाहक दंश अभिव्यक्त भेल अछि-

भनहि विद्यापति सुनु सखिया।
गौरी कें लिखल छइन बुढवा अइसन पिया।

विद्यापति भणितांकित राकेश द्वारा संकलित एहि नचारी गीत मे प्रतिक्रिया स्वरूप अरिपनकैँ मेटा देल गेल, पुरहर फोड़ि देल ओ चौमुख दीप फेकि देल गेल- 'ऐपन निपलन्हि, पुरहर फोड़लन्हि, फेकलनि चउमुख दीप।' मिथिलांचलक विवाह मंडप पर अरिपनक आलेखन कयल जाइछ, पुरहर ओ पातिल राखल जाइछ आर हस्तिकलश पर चौमुख दीप जराओल जाइछ (राकेश, पृ. 157)। नचारी गीत मे मिथिलांचलक दुख दैन्यक नग्न चित्र सेहो अंकित भेल अछि।

आब प्रश्न उठैत अछि विद्यापति भणितांकित एक तरहक' गीतसभक प्रामाणिकताक। विद्यापति पदावली मे जाहि राजा-रानी अथवा आश्रयदाता लोकनिक संकेत भणिता सभ मे पाओल जाइछ, ओ एकटा समसामयिक इतिहास ध्वनित दस्तावेज थिक, मुदा नचारी गीतक भणिता प्राय: उपदेशात्मक अछि- 'भनहि विद्यापति गौरी पारवती, स्वामीक निन्दा नै करियौ गे माइ (अणिमा सिंह, पृ. 120)। विद्यापतिक शिव गीत मे विवाहक प्रसंगे कोहवर, महुअक, खीर-खांड़, बेदी, लावा, चानन-तिलक, सिनूर-पिठार, चतुर्थी, द्विरागमन आदिक

प्रतीकात्मक अधिव्यक्ति मिथिलांचलक लोकाचारक संदर्भे भेल अछि। योग विषयक संस्कार गीत मे विद्यापति जोगिन कैं सेहो रेखांकित कयने छथि– 'भनहि विद्यापति गाओल, योग लगाओल। दुलहा दुलहिनि समधान अधिन कय राखल।' मिथिलांचलक वैवाहिक संस्कारक संपादन क्रम मे नेत्र योग तांत्रिक विधि लोक प्रचलित छैक, कोहबरक चारू कोन पर नैना योगिनक चित्रांकन कयल जाइछ आर योग गीत मे जोगिनक प्रेमक प्रसंगे चमत्कारक उल्लेख भेल अछि। विद्यापतिक अनुसारे योगनिक चमत्कारक अंत नहि– 'भनहि विद्यापति गाओल। योगिनिक अंत नहि पाओल' (राकेश, पृ. 333)। विद्यापति भणितांकित एहि गीतसभक प्रामाणिकता संदिग्ध रहितो एकर सांस्कृतिक महत्वकैं नकारल नहि जा सकैछ। विद्यापति आभिजात्य ओ लोक दुनू वर्ग मे समादृत छलाह, पूजित छलाह आर मध्यकालीन मंच पर समान रूपैं प्रतिष्ठित छलाह।

तिरहुत मिथिलांचलक अपन विशिष्ट लोक गीत विधा थिक नचारी ओ योग गीत जकां। राकेश जी तिरहुत गीत कैं 'फागुनक अभिसार' कहने छथि। विद्यापति भणितांकित निम्नलिखित गीतांश मे विरहिन ब्रजनारि लोकनिकैं धैर्य धारणक उपदेश देल गेल अछि आर दोसर गीतांश मे ओ कहलनि जे पुरुषक प्रेमक विश्वास नहि–

1. भनहि विद्यापति सुनु ब्रजनारि।
धइरज धय रहु मिलत मुरारि।।– राकेश, पृ. 234.
3. भनहि विद्यापति मान हे सखि,
पुरुषक नहि विश्वास।– राकेश, पृ. 260

बट गमनीक अर्थ होइछ बाट पर गीत गवैत चलय वाली। संयोग ओ वियोग भावसँ अनुरंजित बटगमनीक लोक शैली मे विद्यापतिक किछु गीत सेहो प्रसिद्धि पाबि 'पदावली' मे स्थान पाबि गेल अछि। मिथिलांचल मे विद्यापति जकां अन्यान्य लोक कविसभक एकटा अनंत क्रम बनल अछि, जे विद्यापतिये जकां नचारी, योग, तिरहुत, बटगमनी आदिक रचना कयलनि। मैथिली लोक गीतक संकलन सभ मे उमापति, हर्षनाथ, रमापति, कर्णाट कवि, चन्द्रकला, मंगनी राम, साहेब रामदास, नंदीपति, चंद्रनाथ, रत्नपाणि आदिक नाम उल्लेखनीय अछि। विद्यापतिक नामे लोक प्रचलित निम्नलिखित गीतांश मे विरहिनी नायिका कैं धैर्यधारण करबाक सलाह देल गेल अछि–

भनहि विद्यापति गाओल सजनी गे,
मन जुनि करिय उदासे।
सब सँ बड़ धैरज थिक सजनी गे,
भमर आओत तोहि पासे।– राकेश, पृ. 266

एहि तरहें विद्यापति मिथिलांचलक विशिष्ट लोक गीतक विधासभ मे सेहो रचना कयलनि अथवा लोक गीतक संसार मे अपना कें स्थापित कए एकटा सांस्कृतिक परम्पराक निर्माण कयलनि। ओ अपना युगक आभिजात्य संस्कृतिक परम्परा पोषण कयलनि आर लोक संस्कृतिकैं 'देसिला वयना'क माध्यमे उत्कर्ष प्रदान कयलनि। अर्थात् लोक गीतकैं नागर प्रतिष्ठा प्राप्त भेल। संस्कृतिक प्रति संवेदन शून्यताक स्थिति मे लोक गीतक धरतीक उत्कर्ष प्रेरणास्पद मानल जाइछ। विद्यापतिक गीतसभ मालव, धनछी, आसावरी, मल्हारी, सागरी, अहिरानी, केदार, कानड़ा, सारंगी, गूजरी, वसंत, ललित, विभास आदि राग–रागिनी मे निबद्ध अछि तैं दोसर दिस हुनक गीतसभ जनपदीय (देशी) शैली मे सेहो परम्परित अछि– तिरहुति, नचारी, योग, बटगमनी, गोसाउनिक गीत आदि।

विद्यापति 'कीर्तिलता' ओ 'कीर्तिपताका' सन प्रशस्ति काव्यक रचना कयलनि, ई कोनो गाथाक नहि। मुदा हुनक जीवन वृत्त स्वयं एकटा लोक गाथा बनि गेल अछि। ओ मिथिला ओ मधेसमे (मोरंग–सुनसरी, नेपाल तराई) लोक देवताक आस्पद प्राप्त क' राजाक रूपैं ओहिना थारू–राजवंशी लोकनि मे लोक पूजित छथि जहिना राजा धनपाल, राजा सलहेस आदि।' थारू लोक गीत मे संकलित राजा विरदापतिक गीत मधेस मे



कीर्तनिया नाचक क्रमे गाओल जाइछ–'कत गुन सुमरव तोर रे राजा विरदापति। मिथिलांचल मे लोक देवता सभ राजा (राजा सलहेस, राजा रनपाल, राजा विदापत आदि), बाबा (बरहम बाबा, सोखा बाबा, जोगी बाबा, बाबा गणिनाथ) तथा भुइंया (वसावन, वख्तौरा थारू आदि)क रूपैं संपूजित छथि। चमत्कारिक कृत्य लोक देवता सभक वैशिष्ट्य मानल जाइछ। उगनाक सेवकत्व, अदृश्य वस्तुक वर्णन, आर्त्तपुकार पर गंगाक आगमन, प्रेत वार्ता आदि हुनक चमत्कारिक कृत्य रूपैं उल्लेखनीय अछि।

मधेस मे प्रचलित गाथा मे विद्यापतिक सद्‌गुणसभक सुमिरन कयल गेल अछि, हुनक अंतिम संदेश कें पुत्री आओर पुत्रवधुक लेल आचार संहिता मानल जा सकैछ–

राजा विरदापति रे बेटी रे कहये समुझाय–
जारन फारि बैगन तीमन, इ सभ लाबिअह गे
सिनाये धुनाए बेटी भानुसिये बैठिहऽ
समझि खियाबिहऽ चाउर।
सभकें खियाबिहऽ आपहु खाबिहऽ
पसु के दियाबिहऽ घास।
सभकें सुताबिहऽ आपहुसुतिहऽ
उठिहऽ.... भोरहिं परात।....– थारू लोक गीत, पृ. 70

आलोच्य आचार संहिता मे विद्यापतिक आगां कहब छनि जे आंखि खुजलाक पश्चात

बाढनि सँ घर आंगन साफक' कात लगा देल जाय। बाट चलैत मुस्किएनाइ उचित नहि। बिना कोनो कार्य प्रयोजनक गाम नहि जाउ। पानि भरैत अनावश्यक विलमनाइ आर अड़ोस-पड़ोसक झगड़ा-झंझट मे पड़नाय उचित नहि। लोकोपदेश गाथाक प्राणतत्व थिक।

विद्यापति साहित्य मे संस्कृतक सुभाषित ओ देसिल वयना मैथिली मे कहबी सभ जीवंत ओ सार्थक अभिव्यक्ति भेल अछि, जाहि मे जीवनक अनुभूत सत्यक अभिव्यंजना भेल अछि- 'भनहि विद्यापति न कर लाथ। भूखल न खाह दुहु हाथ।' अर्थात भुक्खलक ई अर्थ नहि जे दुनू हाथे खायल जाय। विद्यापति किछु परम्परित लोकोक्तिसभ कें परिष्कृत कय प्रयोग सेहो कयलनि आर किछु महाकविक लेखनी सॅ प्रसूत भ' जन जिह्वा पर चढ़ि परम्परित ओ लोकप्रिय भए गेल- 'गोढ़िक हेम वदन महँ झलकए।'' तत्युगीन समाज मे कुलीनताक महत्व देल जाइत छल- 'गुनहिं बुझिअ उंच नीच रे।' समाज मे धनवानक प्रतिष्ठा छल, निर्धनकेँ केओ पुछनिहार नहि- 'धनिकक आदर सब तहँ होय। निरधन बापुर पुछय न कोय।'' दोसर अछि- 'पुछिओ न पुछलके बैसलाह जहाँ। निरधन आदर के कर कहाँ।' एवं प्रकारें महाकवि विद्यापति अपन जीवन जन्य अनुभवकेँ सूक्तिबद्ध कए सामाजिक आचारक दिग्दर्शन कयलनि आर देसिल वयनाक अभिव्यक्ति सामर्थ्यकेँ धारदार बनौलनि- 'बहलो पानि बान्ही आड़ी।'

विद्यापति अपन 'पुरुष परीक्षा' मे नृत्य विद्याविद ओ गीत विद्याविदक' स्वरूपक विवेचन कथाक माध्यमे कयने छथि। ज्योतिरीश्वर अपन वर्णरत्नाकर' मे एकरा विद्यावंत कहने छथि। आजुक जनपदीय लोकधर्मी नाट्य परम्परा मे 'मूलगैनक (मूलगायक) वैह महत्व छैक जेहिना ज्योतिरीश्वरक विद्यावंत परिभाषित छलाह। विद्यापति अपन मैथिली नाटक 'गोरक्ष विजय' मे जाहि दखिन देशीय नाच'क उल्लेख कयने छथि ओ वस्तुत: कर्णाट ओ तेलंग देशीय (दाक्षिणात्य) नाट्य छल-

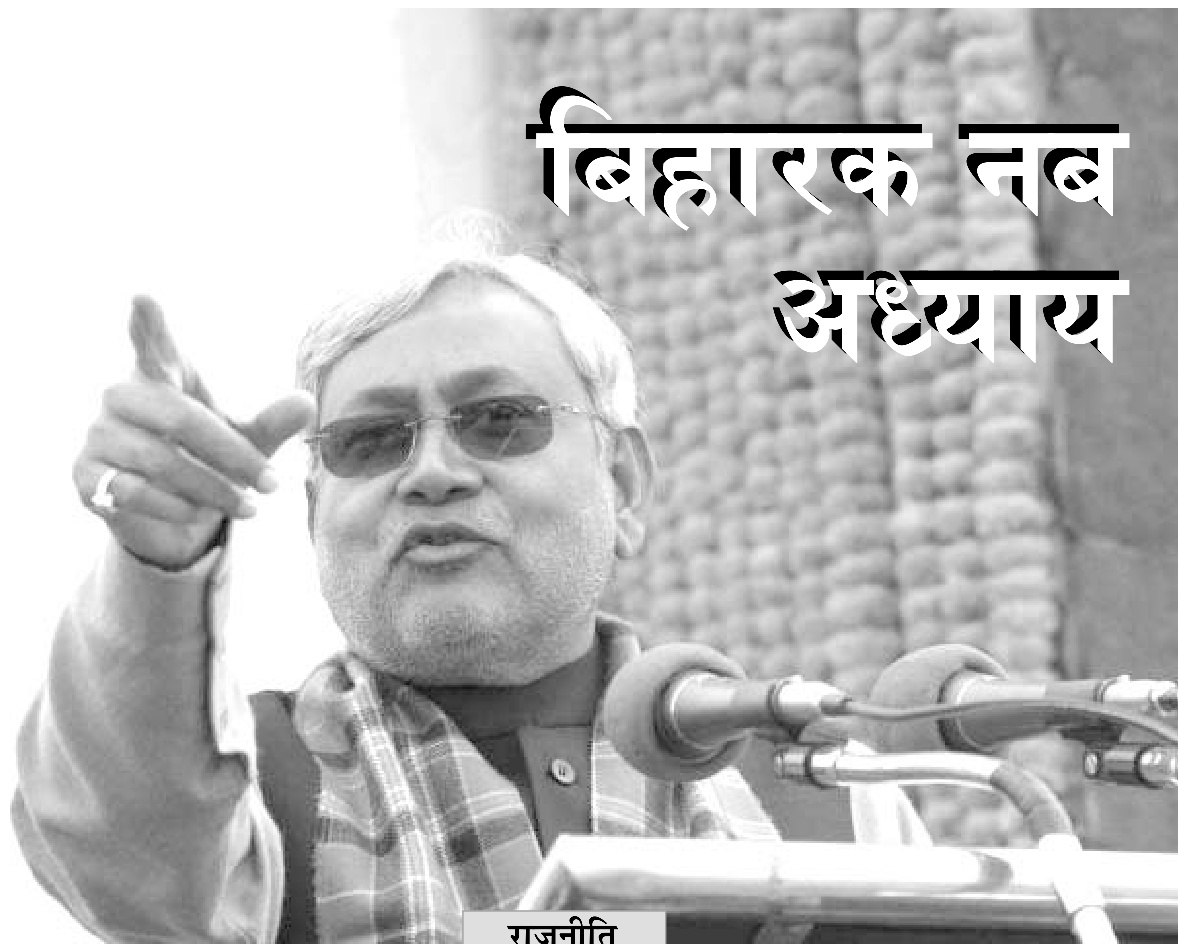
दखिन देश के देखब नाज्च। ध्रुव।
कह प्रतिहारी अवसर आए।
बात बनाव भूमि सिर लाए।

मिथिलांचल मे दाक्षिणात्य राजवंश, नट ओ नाट शैली, राग-रागिनी आदिक प्रवेश कर्णाट शासन काल मे भ' गेल छल। ओ तत्कालीन मिथिला मे प्रचलित दाक्षिणात्य नाट्य देखबाक जिज्ञासा कयने छथि। यद्यपि 'धूर्तसमागम' ओ

'गोरक्ष विजय' वैष्णवधर्मी नाट्य नहि अछि तथापि ज्योतिरीश्वर ओ विद्यापति क्रमश: अपन नाट्यसभ मे भाषा गीतक प्रवेश कराक' संस्कृतक आभिजात्य नाट्य शिल्पकेँ जनोन्मुख कएलनि। अत: आलोच्य नाट्य सभ भाषागीतक प्रवेश द्वार मानल जाइछ, जकर विकास मिथिलांचल मे कीर्तनियां नाट्यक रूपेँ भेल। कीर्तनियां नाट्यक पर्यवसान मिथिला ओ मधेस मे लोकप्रचलित विदापत मे भेल देखना जाइछ। विद्यापतिक भगवती वंदना ओ रास गीत सँ आरंभ विदापत ओ विलक्षण नाट्य विधा थिक, वैष्णवधर्मी कवि ओ नाटककार लोकनि संपोषित कयलनि। अहि नाट्यशैली मे शास्त्रीय ओ लोक नाट्य शैली सभक समन्वय नीक जकां भेल अछि। विद्यापति कृत प्रासंगिक नाट्य गीत सभक प्रधानताक कारणेँ ओ विदापत नाचक रूपेँ अहुखन लोकख्यात अछि। विदापतिक निम्नलिखित प्रवेश गीत राधाकृष्ण लीला विषयक थिक-

कृष्णाक प्रवेश- गीत जय हरि माधव
लेल परवेस।
हाथ बांसुरी धय नट वेस॥
राधाक प्रवेश गीत- लेल परवेस परेम
सुकमारि।
हस्ति गमनि वृषभानु दुलारि॥

एहि तरहेँ मिथिला ओ मोरंग (मधेस) मे विद्यापति अहुखन विदापत नाच, विद्यापति राग, ओ लोक देवता राजा विदापतिक रूपेँ जीवंत बनल छथि। अहि ठामक लोक कण्ठ मे परम्परित गीत ओ कथाक रूपेँ जीवित छथि। लोकोक्ति रूपेँ उद्धृत होइत छथि। विभिन्न मांगलिक ओ आनुष्ठानिक अवसर विशेष पर हुनक गीत गाओल जाइछ। एवं प्रकारें विद्यापति मिथिलांचलक लोक संस्कृतिक वास्तुकार छलाह। ओ प्रासंगिक रूपेँ अपना मे लोक संस्कृतिक विभिन्न तत्वसभकेँ समाहित क' जे अभिव्यक्ति देलनि ओहिसँ लोक धर्म, लोककला ओ लोक साहित्यक अनेक पक्ष सभ उभरिकऽ प्रत्यक्ष भेल आ संपुष्ट भेल।



बिहारक नव अध्याय

राजनीति

✍ पुण्य प्रसून बाजपेयी



बिहार में 1974 के जेपी आन्दोलनक सोच अगर 1989 मे मंडल तर मे दफन भए गेल, तऽ मंडलक सोच आब आर्थिक सुधारक आगां बिलाइत जा रहल अछि। एहि बेरक विधान सभाक चुनाव मे बिहारक बहुत रास यथार्थ मिथ मे बदलि रहल अछि, जकर सहारा पाबि चुनावक राजनीतिक वर्चस्व पांच दशक सं ई राज्य ढोइत आबि रहल छल। परिवर्तनक ई बहैत हवाक रूख, के जिमेदार नीतीशकुमारक सत्ता थिक कि लालू यादवक सत्ताक समय थिक। एहि बातक विचार करए सऽ पहिने थोड़ेक एहि बात के बुझनाई बेसी जरूरी जे बिहार मे समाजक जरूरत कोना बदलैत चल गेल। जेपी 'क संपूर्ण क्रांतिक नारा सँ पांच सालक भितरहिं भ्रम टूटि गेल आओर युवाजन के अपन कैरियर बर्बाद होइत बुझि पड़ल। जखन कि मंडलक तपिश खत्म होएबा मे दस वर्षक अवधि लागल।

बितलाहा दशक के दौरान बिहारक हर तबका के सामने एकटा पैघ सवाल छल जे हुनकर सभक जरूरत की छैन्हि। ओ सभ अपना के भुतलैल जकां बुझैत रहला। आन्दोलन सं समस्त देश के बाट देखानिहार बिहारबासी स्वयं लक्ष्यविहीन जकां भए गेल छलाह। एहि अवधि मे आर्थिक परिस्थितिक बदलाव, देशक परंपरा तोड़ि एकटा नव रस्ता बना रहल छल। परञ्च एहि काल खण्ड मे पूंजीक वर्चस्व संसदीय लोकतंत्र तक पर हावी होइत गेल।

चुनल सरकारक सत्ता कॉरपोरेटक सत्ताक आगां कमजोरि देखाय परल। वोटकक ताकति

सँ चाहे सत्ता बदलि जाइत छल मुदा एहि ताकति सऽ पैघ ताकति पूंजीक ताकति बनि गेल छल। जकर असरि ई भेल जे वोट बा आंदोलन के बाद सौदेबाजीक दायरा पूंजीक मुनाफा सं होइत सत्ता के छुनाइ संभव छल।

मनमोहन सिंहक आर्थिक नीति लोकतंत्रक हर पाया के अपना उपर निर्भर बनैबा वास्ते मजबूर कए देलक। संविधानक अवरोध आओर संतुलन (चैक एण्ड बैलेंस) बिलाइत गेल। गुजरात में नरेंद्र मोदी'क उग्र हिन्दुत्व कथित विकासक हल्ला आओर जगमगाहटक ओत लए लेलक। कश्मीर सं केरल धरि, महाराष्ट्र सं मणिपुर धरि एहि विचारधाराक सत्ता किछु एहन रूप रचैत चल गेल जे आर्थिक सुधारक हिमायत नहिं केनिहार अपराधी नजरि आबए लगलाह। एहि दौर मे बिहारक भूमिका जं बढल तऽ ओ छल दोसर राज्य मे पलायन। – बाहुबलि सभ सऽ निजात पएबा वास्ते पलायन।

– मुनाफा वास्ते पूंजीक पलायन।

– शिक्षाक वास्ते पलायन।

– रोजगार हेतु पलायन।

कन्यादानक हेतु तेहन वर'क खोज बढ़ि गेल जे बिहारक होइतहु काज धंधा अन्यत्र करइत होथि। 1995 सँ 2006 धरि प्रायः घर-घर कें यैह हकीकत छल, जे जखन घरक सभटा लोक जमा होइत छलाह तखन कुनो समस्याक समाधानक रस्ता बिहार सऽ बाहर लए जाय बला होइत छल। बिहार मे 1990-2000 केर दशक घपला-घोटाला आओर जंगल राजक दौर मानल जाइछ। एकर मतलब भ्रष्टाचार आओर अपराधी केर बोलबलेटा नहि छल बल्कि बुनियादी ढांचाक पर ध्यान नहि देनाइ आओर जाति के अंदर बाहुबलीके पहचान बनौनाई सेहो छल।

बाहुबलि सभके महत्व देनाई एक तरहें कानून व्यवस्था के ताख पर रखनाई तऽ छलबे कएल, ई खेल पिछड़ा-अगड़ा के भेद सेहो मेटौलक। राजन तिवारी, आनंद मोहन आओर पप्पू यादव होथि कि शहाबुद्दीन, जाति परिधि मे भले अलग-अलग छलाह मगर सभक पहचान एक रंगाहे छल। तें जखन नीतीश कुमार सरकार अपराधी सभ कें नथनाई शुरू कएलनि, तखन कुनो तरहक जाति संघर्ष नहि उभरल बल्कि अपराध खत्म आओर कानूनक राज होयत तकर संदेश गेल।

एहि दौर मे ओहि तरहक जाति-जाति के बीच तनाव सेहो कम होमए लागल जे भूमि संबंधी संघर्ष होइत छल। जाहि तनाव के सहारे राजनीति होइत छल। भूमि आओर खेती बिहार मे जातिगत संघर्षक मुख्य कारण बुझना जाइत छल। परञ्च पलायन बिहार के बाहर बिहारी समाजक नव पीढ़ी के द्वारा राज्य के पुनः नव तरीका सऽ जोड़नाइ शुरू कएलक। छात्र सऽ लऽकऽ विवाहिता धरि, मजदूर सऽ व्यापारी धरि, जखन-जखन बिहार लौटति गेलाह राज्यक बाहरक समाजिक, आर्थिक परिस्थितिक तुलनात्मक बहस होइत रहल।

अपराधी आओर बाहुबली सभ के नीतीश सरकार द्वारा दमन कएला सऽ मात्र कानून-व्यवस्थे मजगुत नहि भेल बल्कि जाति आधारित तनाव सेहो कम भेल, अओर ओहि आर्थिक परिस्थिति मे सेहो बदलाव आएल जकर आधार पर जातिय विभाजन अनेरे नजरि अबैत छल।

खास कऽ उपार्जनक सहभागिताक बोध हरेक जाति के भीतर एहि सोच के विकसित कएलक जे जीवनक जरूरति रोजगार थिक, जातिय समीकरण नहिं। 2001 सऽ 2006 के दौरान आर्थिक सुधारक हवा जातिय घेराबा मे जिवै वला लोकके सोच मे बहुत बदलाव आनलक। जेना मॉल संस्कृति जाति आधारित धंधा के सेच के ध्वस्त कए देलक। बजार संस्कृति, धंधा पर कुनो तरहक आफत अएला उतर जातिए आधार पर नहिं कानून व्यवस्था के नजरिया सऽ सोचल गेल। माने ई भेल जे सोच पहिने जातिय समीकरणक आधार पर सत्ताक छाली खएबाक वास्ते छल, ओ आब सत्ताक बरदहस्त लए अपन धंधा चमकैबा मे लागि गेल। सत्ता के मतलब जतिय दबंगई के सांती सुशासन भए गेल। एहि तरहक विचार आई सभ जातिक थिक जे सभ कल्हि धरि जतिय समीकरण के सहारे सत्ताक खेल रचैत छलाह। मतलब इ जे बिहारक चुनाव मे विकास जे मुद्दा बनि रहल अछि तकर पाछां ओ तमाम परिस्थिति अछि जहि मे समाज अपन जरूरति के पूरा होइत देखि पावि रहल अछि। जे पहिने जातिय समीकरणक बले होइत छल।

दलित छथि कि ब्राह्मण, राजपूत छथि कि कुर्मी सभक सामुहिक जरूरति बिना कुनो सामाजिक आन्दोलन कें एके रंगक होइत चल गेल। यद्यपि महादलित एवं मुस्लिम समुदाय अखनो धरि ओहन वाट ताकि रहल छथि जे हुनकर सभक जरूरति सरकारी योजना सऽ कोना पूर्ण होयत। वस्तुतः सत्ता अपना नीति सऽ महादलित आओर मुस्लिम के सत्ता कें आश्रित बनौने अछि।

तें दुआरे से महादलित अपन अनुकूल सरकारक उमेद मे छथि तऽ मुस्लिम समदाय अपना एकजुटता सऽ खुद के "किंग मेकर" के भूमिका मे राखए चाहति छथि। दरअसल सत्ता के तौर-तरीका बिहार मे जातिय उग्रता के सत्ता सऽ दूर हटौलक अछि। उदाहरण स्वरूप, एक दौर मे श्री बाबू (श्री कृष्ण सिंह) के मुख्यमंत्री काल मे भूमिहार जाति खास दबंग आओर उग्र भए गेल रहैक, तऽ लालू प्रसाद यादव के दौर मे यादव। तकरे ई असरि अछि जे जाति के उग्र चेहरा के सरकार बनैबाक दिस पुनः मान्यता नहिं भेटल। श्री बाबू के बाद कुनो भूमिहार बिहारक मुख्यमंत्रीक नहिं बनि सकलाह तऽ लालू यादव के बाद सएह स्थित बुझना जाइत अछि।

एकर एकटा दृष्टांत 2005 आओर एहिबेरक चुनाव मे छपरा मे नजरि आएल। 2005 मे छपरा मे धर्मनाथजी के मंदिर के ठीक सामने धर्मनाथ दूबे के परिवारक लोक कैमराक आगां कुनो प्रतिक्रिया देबाक हिम्मति नहिं रहनि, जखन कि एहि बेर प्रतिक्रिया देबा में कुनो परहेज नहि कैलनि।

"असल मे ई चेहरा विकासक नहिं बल्कि विकासक दिस उठल कदम सऽ पहिने के सोच थिक। जे कुनो समाज के आगां बढ़बाक वास्ते पहिल जरूरति होइत अछि। आने कि पहिलबेर चुनाव में जातिय समीकरण हावी नहिं अछि। तें सवाल नीतीश कुमार कि लालू यादव नहि थिक। बल्कि सवाल ओहि परंपरा

के टूटबाक उपरान्त बनल माहौलक अछि, जे लोक पहिल बेर अपना भविष्य के बजार कि रोजगार के द्वारा टोइया रहल अछि।'' तकरे असरि जे चुनाव प्रचार में नीतीशक पांच साल शासन से बेसी लालू-राबड़ी के पन्द्रह साल बार-बार गुंजिरहाल अछि।

आने कि लालू पहिल बेर नीतीश के नकारात्मक विकल्पक तौर पर चुनाव मैदान मे बेसी नजरि आबि रहल छथि। जतऽकि कांग्रेस ओहि दूनूह मोर्चा पर विफल नजरि आवि रहल अछि जकरा सहारा सऽ बिहार मे एकटा डांरि परि सकैत छल। दरअसल जतिय समीकरण के सांती जे विकासक सवाल प्रमुख भए गेलअछि, आओर नव वर्गक युवा एवं महिलाक सक्रियताक नेतृत्व प्रदान केनिहार कुनो दल समर्थ नहि बुझि परैत अछि। राहुलगांधी आओर सोनिया गांधी एहि वर्गक एकटा आश भरि बनि सकल अछि विश्वास नहिं। कारण जे बिहार अखन घरि कांग्रेसक अनुकूल नहिं बनि सकल अछि एवं मनमोहन सिंहक अर्थव्यवस्थाक बिहार मे मान्यता नहिं भेटल अछि। मगर नीतीशक सरकार पर कांग्रेस दिल्ली सऽ अंकुश जरूर लगा सकैत अछि तेहन तरहक सोच जरूर उभरि रहल अछि।

मतलब ई जे कांग्रेस बिहार मे विपक्षी दलक भूमिका निभा सकैत अछि।

एहि परिस्थिति मे एकटा मुख्य सवाल ई अछि जे नीतीश कुमारक सकारात्मक विकल्पक केओ नहिं बनि पावि रहल छथि।

एना मे पुरान परि चुकल जेपी आंदोलन सऽ बहरायल पीढ़ी होय कि चालीस पार मंडलक पीढ़ी, एहि दूनूह आंदोलनक प्रेरणा आजुक बिहारी युवा के रग मे नहिं दौड़ि रहल छैक। जेपी आन्दोलन आओर मंडल सऽ निकलल बिहारी लोकनि राजनीतिक संघर्षक जीवन छोड़ि चुनावी हिसाब सऽ चलनाइ शुरू कए देने छलाह। आओर चुनावी गणित राजनीतिक मंत्र बनि गेल छल। नव पीढ़ी राजनीतिक गणित के हिसाबे चलबाक पक्ष मे नहि बुझि पड़ैत अछि। हुनका सभके नीतीश कुमार कि लालू यादव किओ आदर्श नहिं लागि रहल छन्हि। ई पीढ़ी उदारीकरण जगमगाहट के सेहो अपन यथार्थ नहिं मानैत छथि। जेपी कि मंडल एहि नव बिहारक जरूरत नहिं अछि। तें चुनाव परिणाम नें तऽ चौंकाब बला होयत ने अन्तिम सत्य। [इ लेख चुनाव परिणाम से पहिले लिखल गेल अछि आ 'जनसत्ता' से साभार लेल गेल अछि।]

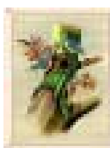
अनुवाद - ललित कुमार झा



सत्ताक देहरि पर ठाढ़ नारी

सुलगैत प्रश्न

मुन्नाजी



'जखन जगै-ए मौगी तऽ भगै-ए पुरुष! नेना में अपन दीदी सँ ई कहावत सुनैत छलौं। ई अनबुझ पहेली सन छल हमरा लेल। मुदा मौगी माथ उठेलक, पुरुष गौरवान्वित भेल, आ मौगिक स्वर मजगुत भेल।

प्राचीन समय मे बात अलग छलै जे स्त्री के दैनिक उपभोग मात्रक वोस्त बुझल जाइत छलै (किछु हद तक एखनो छै) आ ओ खुटेसल गए-माल जकाँ घुटि-घुटि कऽ जीवा लेल वाध्य होइत छल। लेकिन आइ-कालिहक अर्द्धांगिनी अपन स्वतंत्र सत्ता पेवाक लेल सत्ताक दुआरि धरि उपस्थिति दर्ज रहली हे। ऐ पर पुरुष मात्रक दया, सद्भावना नै वरण स्वयं स्त्रीक सशक्तताक परिणाम विद्यमान अछि। ओना तऽ पौराणिके समय में स्त्रीक अपन अस्तित्वक लड़ाई लड़वाक प्रारम्भ कऽ देने छलीह। जखन शंकर जी के अपन ससुर द्वारा आयोजित यज्ञ में आमंत्रित नै कएल गेल छलनि। तखन पार्वती सब देवी के संगोर क हुनक सलाह पर अपन पतिक वास्ते अलग यज्ञक आयोजन केलनि। मुदा तहिया सँ आइ धरि स्त्री अपन स्वतंत्र अस्तित्व वास्ते संघर्षरत अछि। एकर मुख्य कारण रहल- स्त्री के पुरुषक अर्द्धांगिनी होइते पुर्ण रुपेण अपन पति पर आश्रित भऽ गेनाइ। सनातन सँ आधुनिक समय धरि स्त्री धरक धेरेवा के भीतरे मात्र के अपन संसार बुझि जीवन जीवैत रहल।

ई सत्य अछि, जे अधिकांश स्त्री में अपन स्वतंत्रताकेँ लऽ के अकुलाहट अछि। ओकर वावजुद ई एकजुट नै भऽ पावि रहल छथि। एकजुटता तऽ दुर इहो

सब पुरुषे सन स्वभावी भऽ एक दोसर के टांग घीचऽ मे लागल रहैत छथि। वाचनक माध्यमे ई अपन दब्बुपन वास्ते पुरुष के दोषी मानै छथि। मुदा कि ई सत्य नै है, जे स्त्री स्वयं कहियो सासुक रूप में तकहियो ननैद आ दियादनीक रूप में एक दोसरा पर अधिकार जनवैत, सतवैत रहलीह। कहल जाइछ जे मायक ममता बच्चा के (धिया-पुता) शक्ति प्रधान करैत अछि। मुदा आइयो माय बेटा आ बेटी के फराक नजरिये देखबाक प्रयास करैत अछि किएक ? ई माय कहियो बदलि सकैछ अपन बेटीक भविष्य ?

सब से वेशी घृणित कृत्य आ सत्य त अछि जे नारी अपन सदृश दोसर नारी के जनमऽ तक से बाध्य करैत अछि। कोना ? स्त्री भ्रूण हत्या पर एतेक कानून बनि रहल अछि। एतेक रास आंगुर उठएल जा रहल अछि पुरुष पर लेकिन की आई सौ प्रतिशत सत्य नै छै जे-स्त्री भ्रूण स्त्रीये के पेट में पनपैत आ पलैत अछि, जै स्त्री नै चाहय तऽ पुरुषक औकाति सँ बाहर अछि जे ओ भ्रूण हत्या करवा दिएए। त ऐ तरहें की स्त्रीये स्त्रीक दुश्मन नै अछि ?

ई कटु सत्य, हमरा सब कैं स्वीकार कर' पड़त जे -स्त्री त प्रकृति प्रदत्त कमजोर अछि। प्रकृतिये एकरा कोमलांगी आ पुरुष के कठोर हाड़-मास बला बनौलक। आओर इएह मुख्य कारण छै जे स्त्री पुरुषक छत्रछाया में पलाइत रहली। पुरुष, वर्षा, गर्मी आ जाड़क संग अन्यान्यो दुश्मनक रक्षार्थ ठाढ़ भेल। आ इएह परम्परा आइ धरि स्त्री के पुरुषक स्तर सँ नीचा देखबैत रहल। हाँ, बीच-बीच मे लड़ाई लड़ैत रहल। एकर उदाहरण अछि-पुराण समय के विदुषी सँ लऽ आई नीक ओहदा पर बैसल महिला।

आब युग बदलि रहल अछि। एका एकी कऽ विदुषी, छत्राणी आ रानीक ओहदा पाबऽ वाली स्त्री सब एकजुट भऽ आगू आबि रहल अछि। अही एक जुटानक परिणाम स्वरूप हिनका सबके आगू बढ़बा लेल संविधान सम्मते आरक्षण दऽ पुरुषक बराबरीक अवसर देलक अछ। आब स्त्री वर्ग मे परिवर्तन रेखा जगजियार होमऽ लगलै निम्न वर्गक महिला खेत, कारवाना मे काज कऽ तऽ पैघ धरक बहु-बेटी शासकीय स्तर पर जा पुरुषक बाँहि पूरवाक आ अपन क्षमता प्रदर्शन करवाक प्रयास केलक अछि। आव पुरुषों एकर बराबरी मानि स्त्रीवर्ग के आगू बढ़बा/बढ़वा मे संग पुर लगलाह अछि। आब अय सँ ई साबित भऽ रहल अछि जे जनी-जाति कोठरी वा घेरेवा सँ बहरा सत्ता वा स्वतंत्रताक देहरि धरि पहुँच गेलीह अछि।

सत्य ! स्त्री ओ शक्ति अछि जे जँ सहृदय जागय तऽ पुरुषोक बिना पुरे परिवार के सम्हारि सकैए पुरुष अपन बर्चस्व तऽ देखा सकैछ, लेकिन बच्चा के पालनाइ आ ओकर पूर्ण अस्तित्व प्रदान करव स्त्री वगैर संभव नै अछि। तखन आव स्त्री के सत्तासीन होयब बाधक किएक ?

- द्वारा मनोज कर्ण
म.न.-11, नंगली रजापुर, पो.- निजामुद्दीन पुर्वी
नई दिल्ली-110013, मो. 09958396353

व्यक्तित्व

महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह

कुमारजी (अरुण कुमार)



सर डा. कामेश्वर सिंह ''दरभंगा महाराज'' जिनका मिथिलेश वा मिथिला नरेश सेहो कहल जान्हि, मिथिलाक महान सपूत छलाह। मिथिला आओर मैथिलीक उत्थान वास्ते हुनकर प्रयास अतुलनीय अछि।

मिथिला में औद्योगिककरण

महाराजाधिराज के समय सापेक्ष चिन्तन शक्ति रहनि। ओ मिथिलांचल मे बहुत रास उद्योग लगैबाक प्रयास कैलनि। जाहि मे दूटा चीनी मिल (लोहट आओर सकरी मे) जे बढ़िया नफा देबाक संग भारतक उच्चकोटि के चीनी मिल मानल जाइत छल। समस्तीपुर मे रामेश्वर जूट मिल के स्थापना कैला उपरान्त अन्यान्य उद्योग धंधाक विचार रहनि, जेना दरभंगा इन्वेस्टमेंट, दरभंगा कंस्ट्रक्शन, दरभंगा डेयरी आदि। एतहधरि कि मृत्यु सऽ पूर्व समस्तीपुर मे अशोक पेपर मिलक स्थापनाक प्रयास कए रहल छलाह। जे हुनका मृत्यु पश्चात रुकि गेल।

मीडिया (संचार)

हुनकर सोचब रहनि जे मिथिलाक विकास एवं सुरक्षा वास्ते मजगूत मीडियाक आवश्यकता अछि। ताहि उद्देश्य सं पटना सं मे एकटा अखबार समूहक स्थापना कैलनि। दूटा दैनिक समाचार पत्र इंडियन नेशन (अंग्रेजी) आओर आर्यावर्त्त (हिन्दी) एवं मैथिली पत्रिका ''मिथिला मिहिर'' सफलता पूर्वक प्रकाशित होइत छल। ओ दूनूह अखबार अपना समय मे बिहार के मुख्य अखबार छल। मिथिला मिहिर मिथिला आओर तिरहुतक जनवाणी एवं लोक प्रियताक चरम उत्कर्ष प्राप्त केने छल।

महाराजाधिराज कोलकाता के भारतक सुविख्यात प्रकाशन संस्था theker spink & Co. (1933) के मालिक सेहो रहथि।

शिक्षाक पृष्ठपोषक

दरभंगा राज परिवारक शिक्षाक क्षेत्र मे जे योगदान होइत आबि रहल छल तकर ओ संवाहक बनल रहलाह। ''कलकत्ता विश्वविद्यालय'' जे तहिया बंगाल, बिहार, उड़ीसा के मुख्य शिक्षा केंद्र छल, राज परिवार द्वारा पोषित छल। विश्वविद्यालय 'दरभंगा बिल्डिंग' मुख्य बिल्डिंग मानल जाइत अछि। तहिना पटना, बनारस, इलाहाबद, अलीगढ़ आदि के विश्वविद्यालय निर्माण मे राज परिवारक बढ़िया आर्थिक सहियोग रहलनि।

ओरियंटल कन्फ्रेंस (1948)

महाराजाधिराजक प्रयास सऽ ई कंफ्रेंस दरभंगा मे आयोजित कएल गेल। जाहिमे समग्र देश समेत

एशियाक अन्यान्य देशक विद्वान लोकनि आएल रहथि। जाहि मे प्रसिद्ध इतिहासकार डा. रमेश मजमुदार सेहो भाग लेने रहथि। ओहि आयोजनक स्वागत समितिक मुख्य रहथि डा. अमरनाथ झा। दरभंगा मे आयोजन सं दुनिया भरि के लोक, मैथिली भाषा, संस्कृति सऽ प्रभावित भेलाह। महाराजाधिराज डा. कामेश्वर सिंहके ई योगदान अतुलनीय अछि।

निर्धन वर्ग सऽ सहानुभूति विस्तार

हुनका निर्धन वर्ग सऽ सदिखन सहानुभूति रहलनि। ओ दरभंगा स्थित ''महारानी अधिरानी कामेश्वरी प्रिया पूअर होम'' के स्थापना कैलनि। जाहि मे निर्धन वर्गक नि:शुल्क इलाज एवं रहबाक व्यवस्था कएल गेल।

हुनकर महानतायक एकटा आओर उदाहरण जुड़ल जे पूअर होमक मुख्य इमारतक नाम ''दानबी ब्लॉक'' राखल गेल। श्री दानबी हुनकर मैनेजर रहथिन्ह। श्री दानबी के पूअर होमक एकटा ट्रस्टी सेहो बनाओल गेल। दरभंगा के एकटा रस्ता के नाम सेहो श्री दानबी के नाम पर राखल गेल छल।

राज होस्पीटल

महाराजाधिराज दरभंगा मे राज होस्पीटलक स्थापना करौलनि। जकर उद्घाटन भारतक तत्कालीन वाइसराय के कनिया (पत्नी) लेडी इर्विन द्वारा संपन्न भेल रहैक।

स्वतंत्रता आन्दोलन में सहयोग

दरभंगा राज परिवार स्वतंत्रता पूर्व, स्वतंत्रता आन्दोलन मे टका आओर समर्थन दूनूह सं मदति केने रहथिन्ह।

महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह एवं हुनक पिता महाराजाधिराज रामेश्वर सिंह आन्दोलन में बहुत तरहें मदति केने रहथिन्ह। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, डा. राजेन्द्र प्रसाद, बिहारक मुख्यमंत्री श्री बाबू आदि स्वतंत्रता आन्दोलन मे मोटका चन्दा प्राप्त केने रहथि।

व्यक्तित्व आओर व्यवहार

महाराजाधिराज एक टा महान विद्वान रहथि। हुनका पुस्तकालय मे दुर्लभ ग्रंथ आओर पाण्डुलिपि संग्रहित रहनि। एक तरहें इस पुस्तकालय भारतक राष्ट्रीय पुस्तकालय समकक्ष आओर समानान्तर रहल होयत।

हुनकर स्वर्गारोहण पश्चात 1962 मे जखन नेहरू सरकार देशक सुरक्षाक वास्ते सहयोगक



आह्वान केने रहथिन्ह, राज परिवारक लोक देशक रक्षार्थ आगां बढ़ि कऽ सहयोग केलनि। महाराजाधिराजक जेठ भागिन राजकुमार जीवेश्वर सिंह 13 मन सऽ बेसी सोना देश के दान कए देलथिन्ह।

महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहजी ओतेक पैघ शक्ति संपन्न रहितहुं जनसाधारण वास्ते उपलब्ध रहैत छलाह। हमर ओहि महान आत्मा सं भेट करबाक हमरा व्यक्तिगत अनुभवक सौभाग्य सेहो प्राप्त भेल अछि। हम चाहइत छी जे ओहि महान एवं भद्र लोकक सानिध्यक संक्षिप्त वर्णन करी।

जखन 1954 मे मालदा मे आयोजित अखिल भारतीय मैथिली महासभा मे महाराजाधिराज पधारने रहथि, ओहि समय हम अपन विद्यालयक स्काउट लीडर रही। हुनकर आगवानी वास्ते हम रेलवे स्टेशन स्काउटक प्रतिनिधि रूपे पहुंचल रही। जखने ओ रेलवे सैलून सऽ बहरैला तखन हम माल्यार्पन करैत संग मे एकटा फोटो खिचबाक आग्रह कैलिअनि। ओ सहर्ष तैयार भेला। फोटो खिचवा उपरान्त जावति हम धन्यवाद कहितिआनि ओहि सऽ पहिनही हमरा ओ कहला 'धन्यवाद' हम लजा कऽ कठौत होइत नर्भस भए गेल रही। दोसर बेर भेट हमरा बनारस मे भेल रहथि।

हम बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे अध्ययनरत छलहुं। एक दिन सांझ कऽ दसश्वमेघ घाटक नजदीक बंगाली टोला लेन मे एक गोट डोली मे सवार भए चल जाइत रहथि।

हम दुरहि सऽ चिन्ह गेलहुं जे वो महाराजाधिराज छथि आ अपन मुंसीघाट क महल मे जा रहल छथि। एकटा जिज्ञासू छात्र जकां ओहि काफिलाक पाछां धए लेलहुं। महल के गेट पर उपस्थित कर्मचारी के हम जखन अपन पिता जी के नाम बतौलअनि तऽ थोड़बे कालक बाद हमरा महलक भीतर जएबाक आज्ञा भेटि गेल। हम महाराजाधिराज लऽग जा उपस्थित भेलहुं जतए ओ कुमार गंगा नन्द सिंघ संग बालकोनी मे आसीन रहैथ। ओ बालकोनी गंगा नदी के किनार पर अवस्थित छल।

महाराजाधिराज बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयक प्रो. चांसलर छलाह। हमारा स्थान ग्रहण करवाक आदेश भेटल तत्पश्चात बहुत तरहक प्रश्न पुछलाह जाहि मे, हमरा पिता जी के बारे मे हमर पाढ़ाइयक बारे मे, छात्रावासक जीवनक बारे मे, मुख्य रूपें छल। बिच-बिच मे प्रस्थान करबाक आज्ञा चाहइत रही मुदा मोन मे एकटा संकोच रहे जे कहूं ई महाराजाधिराजक सम्मान मे अनिष्ठा तऽ नहि भए जाएत। मुदा तीन घंटा उपरान्त स्वयं ओ पुछलाह जे छात्रावासक गेट कतेक बजेधरि खुजल रहैत अछि, तत्पश्चात कहला जे आब आहां प्रस्थान करु नहि तऽ छात्रावासक गेट बन्न भए जाइत। हम ओतए सऽ 9 बज प्रस्थान कएने रही।

तेसर बेर महाराजधिराज सऽ भेंट 1955 मे अखिल भारतीय मैथिल महासभा के बैसार मे भेल। ओत: हम अपन बाबू संगे गेल रही। ओहि खुला अधिवेशन मे हम सब पंडालक गेट पर ठाढ़ रही, महाराजाधिराज ओहि गेट सं प्रवेश केलनि। प्रवेश करिते दूनूह कात उपस्थित लोक सभ सऽ नमस्कारक आदान-प्रदान कैलनि। हमरा दिस नजरि परिते मुस्कराइत बजला हम सब फेरो च्एक बेर भेट रहल छी। हमर मोन श्रद्धा सऽ ओहि महान आत्मा के कृतज्ञता ज्ञापन कए रहल छल। जे एकटा छोट बच्चा सऽ भेंट एतेक दिन स्मरण रहनि। हमरा दिस देखि हुनकर मुस्की आइयोधरि हमरा मोनक अमूल्य धरोहरि अछि।

परंपरा

मिथिलाक लोक गीत

✍ डा . अजय मिश्र



महर्षि याज्ञवल्क्य अनुसार–

वीणा वादन तत्त्वज्ञ श्रुति जाति विशारदः।
तालज्ञश्चा प्रयासेन मोक्षमार्ग नियच्छति॥
गीताज्ञौ यदि गीतेन नाप्नोति परमंपदम्।
रुद्र स्यानुचरो भूत्वा तेनैव सह मोदने॥

अर्थात् जे मोक्ष कठिन वैराग्य सं प्राप्त होइछ से गान विद्याक माध्यमसं सहजहि सुलभ भऽ सकैछ। भारतीय सांस्कृतिक वैशिष्ट्य आ एकर पौराणिक स्वरूप के सुरक्षित रखवामें मिथिलाक महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि। मिथिलाक अपन पृथक् सांस्कृतिक,धार्मिक, साहित्यिक आ ऐतिहासिक परम्परा रहल अछि जकरा अभिरक्षित रखवा मे मैथिली लोक – गीतकें सर्वाधिक श्रेय देमक चाही।

उमापति उपाध्याय विरचित 'पारिजात हरणम्' क भूमिका मे चेतनाथ झाजी लिखने छथि – ''आबतं ई वक्तव्य जे मिथिला मध्य गान विद्याक चर्चा कहियासं ? महाशयगण। ब्राह्मणक उत्पत्तिक पूर्वाहि सं जखन वेद नित्ये अछि आ ब्राह्मण सब ब्रह्मचर्यक अवस्थहिसं वेदगानक अभ्यासी, तखन जहियासं मिथिला मध्य महर्षि याज्ञवल्क्यक शुक्ल यजुर्वेद, जाहि मध्य प्रति मन्त्र उदात्त अनुदात्त स्वरित सं भरल, जकर अभ्यास सब



ब्राह्मण कें तनिका गान विद्या करतले आ जाहि मिथिला मध्य आधा ब्राह्मण यजुर्वेदी आ आधा ब्राह्मण सामवेदी ताहि ठाम गान विद्याक कथा कोन।''

हमरा लोकनि जाहि लोक-गीत परम्पराक निर्वाह कऽ अपनाकै गौरवान्वित अनुभव करैत छी तकर जड़ि सम्पूर्ण मिथिला मध्य पसरल अछि।

'पारिजात हरण, उमापति, भूमिका, पृष्ठ 2-3

महाकवि लोचन अपन रागतरंगिणीक तेसर तरंगमे मैथिल लोक संगीत आ मिथिलाक अतिविशिष्ट रागादिक चर्चा केने छथि। लोचन मैथिली गीतक यात्रारंभ भवभूति सं मानैत छथि-

विख्यात भूदेव सुवंश सूति
विद्या विभूति भविभूत रासीत्
स देवनामाः किल सिद्धि योगान्
काव्यं पुराण प्रतिमं चकार॥

प्रख्यात ब्राह्मण वंशमे उत्पन्न, विद्यासं अलंकृत, परम मेधावी भवभूति नामक विद्वान् भेलाह। देवता लोकनिक सिद्धि पावि ओ पुराणोपम काव्यक रचना कएलनि। ओहि अद्‌भुत मनहर काव्यकें पढ़ि सुमति नामक कलाविद् ओकरा कथाक स्वरूप देलनि आ ओहि समयक राजा लोकनि कें तकरा सस्वर गाविकें सुनओलनि। सर्वथा नवीन लोकरंजन शैलीक सर्वत्र स्वागत भेल। आ लोक मे सुमतिक 'कथक' नाम पड़ल-

अतस्त दानीं सुमतिः कलावान्
कायस्थ सूनुः कथकोः वभूव॥

सुमतिक प्रतिभाक अनुरूपे हुनक पुत्र भेलाह उदय। उदयक पुत्र जयत कें राजा शिवसिंह अपना लग रखलनि। पछाति कविशेखर विद्यापतिक निकट रहबाक आज्ञा देलथिन। इएह संगीतवेत्ता लोकनि स्वर समूहक समुद्रक भीतर जाए जागृत आ मनहर स्वर समूहक द्वारा विकसित नाना रागक उद्‌भावना कएल। महाकवि विद्यापति जे ध्रुवपद बनओलनि तकरा गावऽ वला पहिल निष्णात गायक भेलाह जयत-

तज्ज्ञानार्थं तु विद्यापति कवि कृतिना कल्पितास्तु ध्रुवायाः

तासामेकोग्र- गाताभवदिह जयतः संसदि श्री नृपस्य।

जयतक सुपुत्र कृष्ण अपन पितेक समान गुणज्ञ, कलामर्मज्ञ आ संगीत शास्त्रक ज्ञाता भेलाह। अपन वैयक्तिक प्रतिभाक कारण ओ पहिल राज गायक नियुक्त भेलाह। हिनकहि सं उत्पन्न भेलाह कामदेवापम, निर्मल बुद्धि आ उत्कृष्ट ज्ञानवान पण्डित हरिहर मल्लिक। हरिहरक काया आ स्वर दुहू अद्‌भुत अपूर्व छल। हरिहरकें तीन पुत्र भेलथिन्ह- घनश्याम, खड्‌गराम आ बल्लीराम। मेधावी घनश्यामकें तीन पुत्र भेलनि लच्छिराम, माधवराम आ टीकाराम। दैवयोगतै ई तीनू भाइ संगीतज्ञ भेलाह आ स्वदेशी रागकें सुमधुर स्वरें गओलनि। प्रसिद्ध अछि-

रामान्ता लछि- राघव टीकाख्याः शील सम्पदः।

स्वदेशी गायकास्ते तु घनश्याम सुतास्त्रयः॥

महाकवि लोचनक मेधा विख्यात छल। ओ अपन जीवन कालहि मे परम सम्मानित छलाह। कविशंकर विद्यापतिक काव्य रचनादि मे आ हुनक पदावलीक अनुगमन करैत लिखल गेल तत्सदृश गीतादि मे प्रयुक्त राग कें लोचन अत्यन्त श्रमपूर्वक संकलित कएलनि। ओहि राग सभ कें 'सतद्‌देशीय' कहि ओकर नामोल्लेख कएलनि। ई राग अछि-

भैरवी, बड़ारी, कौशिक, देशारव, सुखदायक रामकरी, ललिता, केदार, कामोद, श्री राग, वसना, मालव, आशावरी, मलारी, भूपाली, गुर्जरी आदि।

1. रागतरंगिणी, लोचन, तेसरतरंग- 65

2. हिन्दी पदावली पर मैथिल लोकसंगीत के प्रभाव डा. अजय मिश्र, पृ. 78

मैथिली लोकगीत संगीत तत्त्वपूरित अछि। ई समयानुरूप आ अवसरानुरूप गाओल जाइछ। जतय समदाओनक स्वर आंखिकें सजल क उठैछ ओतहि वटगवनी आ कमरथुआक स्वर-लहरी थाकल थहियाएल पैर मे गतिशीलता आ द्रुतता आनि दैछ। ''शास्त्रीयता तं एतुका माटि-पानिमे मीलि गेल छैक। शास्त्रक अध्ययन आ शास्त्रीय शैली मे लोक -आख्यानक आ सुललित पदक गायन इएह तं रहल अछि मैथिलक विशिष्टता।''

मैथिल लोकगीतक किछु खास रागिनी अछि - तिरहुत -नचारी आ महेशवाणी। मिथिला मे संगीतज्ञ शास्त्रीय पक्ष अपन

लोकपक्ष सँ एहि तरहें घुलि-मिलि गेल अछि जे दुहूमे पथिक्य दृष्टिगोचर नहिं होइछ। नचारी, गोसाओनिक गीत जोग आदि एकर पुष्ट प्रमाण अछि। मिथिलाक रमणी लोकनि सामवेदक गानक सदृश मैथिली लोक-गीतकें आरोह-अवरोह आ ताल-लय-गति मे बान्हिकें प्रत्येक स्वर पर जोर दैत गबैत छथि। कहुखनकें सुननिहारकें एहन प्रतीत होइछ जेना संगीतक स्वर-बलक कारणें चराचर जगत मे संगीत व्याप्त भऽ गेल हो। मिथिला मध्य उच्चवर्गीय महिला लोकनि गायनक क्रम मे ताल आ वाद्ययंत्रक प्रयोग नहिं करैत छथि। एहिसै जतऽ मौलिकता मे ह्रास अबैछ जतहि स्वर भंगक संभावना सेहो बढ़ि जाइछ। गायनक वैशिष्ट्य तै तहिखन जखन बिना साजके संगीतक रक्षा कएल जाय। मिथिला मे प्राय: सभ वर्गक लोक संगीतक अनुरक्षण मे निष्णात छथि-

बड़ रे जतन सं हम सियाजी कें पोसलौं।
सेहो रघुवंशी नेने जाइ, आ हे सखिया॥
धुन - ग रही ध नि सा सा
नि ग ग री ग सा री ग सा
ग री ध नि सा सा सा
बड़ रे जतन सं हम सिया जीकें पोसलौं
नि ग ग टी ग सा टी ग सा
से हो रघुवंशी नेने जाइ, आहे सखिया।
ग री री ध नि सा - सा सा

भारतीय संगीत मे षड़ज, ऋषभ, गांधार, पंचम, धैवत आ निषाद क संक्षिप्त स्वरूप अछि - सा, रे, ग, म, प, ध, नि। संगीत सुनवाक चीज छी जकरा सुनलासै हृदय प्रभावित आ प्रफुल्लित होइछ। मैथिल लोक संगीत मे सुनवाक बड़ महत्त्व अछि एहि लोक संगीतक पृष्ठिभूमि मे इएह संगीत अछि जे एकरा अमरता प्रदान करैछ। कोशी, कमला, वाग्मती, गहुमा आ त्रियुगाक कात पसड़ल ग्राम- मेखला मे ई सहज भावे गाओल जाइछ। जेहने मिथिलावासीक चित्र निर्मल, जेहने एतुका माटि पानि मे अनुरागाधिक्य तेहने एतुका लोक-गीतक माधर्यु विश्व-विश्रुत अछि। मैथिल लोक-संगीतक तिरहुत-शैलीमे शास्त्रीय पद्धतिकें स्पष्ट रूपें अनुभव कएल जा सकैछ।

वस्तुत: मिथिलावासीक उच्चतम आदर्शे मैथिली सांस्कृतिक प्रेरक भाण्डार अछि। महाराज हरिसिंह देवक राज्यकाल मे अन्य सांस्कृतिक गतिविधिक संग लोक-संगीतक सेहो प्रचार-प्रसार भेल। स्वयं महाराज सेहो संगीत शास्त्रक ज्ञाता छलाह। विद्यापति विरचित पुरुष परीक्षा मे 'नृत्यविद्य कथा' आ 'गीत-विद्य-कथा' मे एकर मार्मिक उल्लेख भेल अछि। महराज हरिसिंह देवक नेपाल गमनक पश्चात् ओतऽ शक्र भूपोल, रत्नधन तथा जगद्धर द्वारा एहि विद्याक विकास होइत रहल। विद्वान आ रस मर्मज्ञ जगद्धर 'संगीत-सर्वस्व' नामक एक दिव्य ग्रन्थक रचना कएलनि। मल्ल नरपति मे जगज्ज्योतिर्मल्ल क योगदान विशेष रूपें उल्लेखनीय। ई स्वरोदय टीका, संगीत भाष्कर, संगीत-सारार्णक, संगीत सार, संगीत चन्द्र आदि संगीत-शास्त्रीय ग्रन्थक रचना कएलनि। हिनक लिखल 'गीत पंचाशिका'' मे मैथिली राग-रागिनीक स्वर-निरुपण अत्यन्त मानक रूपें भेल अछि। रागतरंगिणी सँ प्राचीन एहि रचना मे जतऽ मैथिल रागादिक स्पष्ट उल्लेख अछि ततहि लगनी, कोबर, झुमरि आदिक सोदाहरण वर्णन अछि।

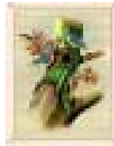
ओइनिबार राजपति लोकनि सेहो संगीत रसानुरागी भेलाह। विशेषत: महाराज शिवसिंह, जनिक आश्रयमे महाकवि विद्यापति ठाकुर कोमलकान्त पदावलीक रचना कएल आ जे आइयो जन-कण्ठ-हार बनल अछि ... एकरा घाट - बाट - घर - आंगन - भोर-सांझ कहुखन अनुभव कएल जा सकैछ-

कंचुक देह हृदय पर भोर
परसि पयोधर भै गेल भोर
कंठ पहिराओल मनिमय हार
अंग विलपन कुंकुम भार
वसन पेन्हाओल कए कत छंद
किंकिन जालहि नीबि निबंध॥

यात्रा – संस्मरण

पूर्वोत्तर क्षेत्र : एक मनोरम भारत

डा. कमलकान्त झा



गत फरवरी मासमे सूचना भेटल छल जे मेघालयक राजधानी शिलांग मे पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमीक तत्त्वावधानमे दि. 22 सँ मई धरि एकटा भव्य 'हिन्दी विकास सम्मेलन' आयोजित होमय जारहल अछि, जाहिमे हमहू आमंत्रित छी। हिन्दीक चर्चित कथाकार श्रीआलोक भारतीक प्रबल आग्रहकेँ हम ठोकरा नहि सकलहुं। सम्मेलनक संयोजक श्रीअकेलाभाईक पत्रक सेहो अवलोकन कयलहुं। स्वीकृति देबाक दोसरो कारण छल– बाल्यकालहि सँ पढ़ैत सुनैत आबि रहल छलहुं जे आसामक चेरापूंजी (ता मेघालय पृथक राज्य नहि बनल छल), विश्वक सर्वाधिक वर्षाक क्षेत्र अछि। किन्तु ओहि क्षेत्रक भ्रमण करबाक सुयोग आइधरि नहि प्राप्त भेल छल। एहि यात्रासं 'सुकटीक बनीज आ पशुपतिक दर्शन' दूनू भऽ जायत। सम्मेलनो कऽ लेब आ चेरापूंजीक भ्रमण सेहो भऽ जायत। तेँ दूनू साहित्यकार सपत्नीक जयबाक योजना बना लेलहुं। ओना पोंत्रक उपनयन आ पत्नीक एकादशी व्रतोद्यापन अगिलेमास 21 जून कऽ छलनि तथापि घरहुसं स्वीकृति भेटि गेल। अन्तर राष्ट्रीय मैथिली परिषदक वरिष्ठ सदस्य श्रीप्रेमकान्त चौधरी (गुवाहाटी) सँ फोन पर सम्पर्क कयलहुं तँ ओ प्रसन्नता व्यक्त करैत कहलनि – ''अवश्य भाग लेल जाय। एकदिन पूर्व गुवाहाटी आबि गेल जाय – हमरहु लोकनि एकटा कार्यक्रम कऽ लेब।'', ज्ञातव्य जे श्रीचौधरी मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक अध्यक्ष तथा मैथिलीक प्रसिद्ध

हमरालोकनि शुक्रदिन 21 मईक भोर चारि बजे मे गुवाहाटी जंक्शन पहुंचल रही। मोबाइल पर चौधरीजीसं सम्पर्क भेल। ओ दू तीन दिन सं माँ कामाख्या मन्दिर पर अपन पारिवारिक कार्यक्रममे व्यस्त छलाह। तेँ ओतेक सबेर स्टेशन पहुंचब कठिन छलनि। हुनक निर्देशानुसार लगहिमे अवस्थित प्रशान्ति टूरिस्ट लॉजमे हमरालोकनि दूटा कोठली लऽ लेलहुं।

त्रैमासिक 'पूवोत्तर मैथिलक' प्रबंध सम्पादक सेहो छथि। हुनकासं गप्प भेलाक बाद यात्राक निश्चय आर दृढ़ भऽ गेल।

तदनुसार जीवछ लिंक (अवध असम) एक्स. मे 20 मईक आरक्षण करालेल गेल छल। हमरालोकनि चारुगोटे 19 मईक रातुक ट्रेन पकड़ि दरभंगा जं. पहुंचल रही। 20 कऽ भोरे ट्रेन छल। जीबछ लिंकबला बोगीमे साढ़े चारि बजे भोरहि मे अपन-अपन आरक्षित स्थान ग्रहण कऽ लेलहुं। गाड़ी साढ़े पांच बजेमे खुजल, मुदा समस्तीपुर सँ अवधअसम मे जोड़ि प्रस्थान कयलक साढ़े आठ बजेमे। संगमे दूनू परिवार पर्याप्त खाद्य सामग्री अनने रही- सेसब भरिबाट खाइत पीबैत आगां बढ़ल रही। गाड़ी किशनगंजसं जखन आगां बढ़ल तं चाहक खेती यत्र तत्र देखऽ लगलहुं, संगहि सुपारीक गाछक संख्या जेना जेना आगा बढ़ल जाइत रही तेना बढ़ैत गेल। गोवा जकां आसाममे सेहो सुपारीक खेती अधिक होइत अछि। सुपारीकेँ मैथिली, बांग्ला ओ असमियां भाषामे 'गुआ' कहल जाइत छैक। ओहीसं भेल अपनासभक गुआमाला। सुपारीक पैघ हाट जाहिठाम लगैत छल से भेल गुवाहाटी।

हमरालोकनि शुक्रदिन 21 मईक भोर चारि बजे मे गुवाहाटी जंक्शन पहुंचल रही। मोबाइल पर चौधरीजीसं सम्पर्क भेल। ओ दू तीन दिन सं माँ कामाख्या मन्दिर पर अपन पारिवारिक कार्यक्रममे व्यस्त छलाह। तेँ ओतेक सबेर स्टेशन पहुंचब कठिन छलनि। हुनक निर्देशानुसार लगहिमे अवस्थित प्रशान्ति टूरिस्ट लॉजमे हमरालोकनि दूटा कोठली लऽ लेलहुं। एकटामे दूनू महिला आ दोसरमे तीनू पुरुष। तेसर साहित्यकार छलाह सीवानक भगवानसिंह भास्कर, जे ओही ट्रेन सं आबि रहल छलाह, जाहिमे हमरा लोकनि छलहुं। गुवाहाटीक कार्यक्रममे उक्त तीनू साहित्यकारकें रहबाक सम्भावना अछि से सूचना दस दिन पूर्वहि श्रीचौधरीजीकेँ दऽ देने रहियनि। हमरालोकनि कैँ कामाख्या मन्दिर लऽ जयबाक हेतु श्रीप्रेमकान्तजी अपन गाड़ीक संग नौ बजेधरि टूरिस्ट लाज पहुंचि गेल रहथि। ताधरि पांचो गोटे स्नानादिसँ निश्चित भऽ चुकल रही। हुनका संग गाड़ीमे बैसि पूजन दर्शन हेतु मन्दिर पहुंचलहुं। दर्शनार्थीलोकनिक भारी भीड़ छल। कियैक नहि, शक्तिक उपासना हेतु कामरूप कामाख्या मन्दिर मे अपार भीड़ होयब स्वाभाविके छल। कतोक हजार वर्षक एहिठामक इतिहास छैक- लाखो वर्षक कहि सकैत छली। मिथिलाक प्राकृत भाषामे हजारोवर्ष पूर्वक एक लोकोक्ति भेटल अछि - 'दिन मे बहुड़ी काम डरे भाआ, राति भइलें कामर जाअ।' अर्थात् दिनमे तँ बहुरिया कौआक डरेँ भागि जाइत छथि मुदा राति मे कामरूप कामाख्या सं भऽ अबैत छथि। निहितार्थ ई भेल जे बहुरिया हां - कलि डाइन छथि। आधुनिक मैथिली रूपान्तर भऽ गेल अछि - 'दिनमे धनियाँ काग डेराथि, राति भेने धनि कामरु जाथि।' एहि सँ मन्दिरक प्राचीनता ओ व्यापक परिचय प्राप्त होइत अछि। एकटा पहाड़ीपर उक्त मन्दिर अवस्थित अछि। एक फर्लांग पहिनीसं सड़कक दूनू भाग व्यवस्थित सब किछु, पार्किंग स्थल सेहो निर्धारित। किछु आर आगां बढ़लापर दूनू भाग फूल, चप्पल राखि प्रसाद -मिठाई नारिकेर आदिक दोकान। एकटा दोकानमे जूता चप्पल राखि प्रसाद कीनि आगाँ बढ़लहुं। आब हमरालोकनि मन्दिर परिसर मे पहुंचि चुकल रही। पार्श्वमे एकटा भाड़ाक कोठलीमे चौधरीजीक माता-पिता सहित सम्पूर्ण परिवार एक धार्मिक अनुष्ठान लेल डेरा खसौने छलथिन। हुनक पत्नी श्रीमती कल्पना चौधरी सं पता चलल जे ओ एकमास पूर्व भयंकर अस्वस्थ भऽ गेल छलाह, जगदम्बेक कृपासँ बांचि सकलाह।

आब मां कामाख्याक दर्शन लेल हमरालोकनि व्यग्र छलहुं, मुदा ओतेक भीड़मे दर्शन करब आसान नहि छल। तें सपत्नीक चौधरीजी आ हम पांचों कुल सात गोटोक लेल पांच-पांच सयबला सातटा टिकट कटा लेल गेल। एक एकटा टिकट हाथमे लऽ कऽ हमरालोकनि आगां बढ़ल रही। मुख्य मन्दिरक पार्श्वबला सीढ़ीपर उतरैत काल हम पिछड़ि गेलहुं। दुनू तरहत्थी नीचां टोपा गोल, जाहि बलेँ देहक सन्तुलन सम्हारि कहुता बड़का खतरासँ बाँचि गेलहुं। लागल जगदम्बा स्वयं बचा लेलनि, अन्यथा हाड़ पांजर आ डांड़ तं थौआ भैए जाइत। केवल दहिना हाथक गट्टापर कनेक बल पड़ि गेल। फेर सबकेओ पण्डाजी द्वारा मुख्य मन्दिरमे प्रवेश करा देल गेलहुं। आब दसे मिनटमे माताक निकट पहुंचि गेल रही। पण्डाजी मन्त्र पढ़ा-पढ़ाकऽ पूजा करा रहल छलाह, मुदा मंत्र छल टूटल फूटल संस्कृतमे वा आसामी संस्कृत भाषामे। हुनक अनुसरण तीन-चारि स्थानमे करैत दान दक्षिणा दैत हमरालोकनि एक स्थल पर नारिकेर फोड़ि प्रसाद लैत घुरि गेल रही। ताधरि एगारह बाजि चुकल छल आ सभक पेट कुलबुला रहल छलनि। चौधरीजी सपत्नीक अपन माता-पिता दिस बढ़लाह आ हम पांचो गोटे आगां बढ़ि एकटा जलपान गृहमे प्रवेश कऽ गेल रही। जा अल्पाहार कऽ बाहर निकललहुं ता चौधरीजीक पत्नी श्रीमती कल्पना आबि गेलीहि। ओ अपन गाड़ीमे हमरालोकनिकैँ बैसा स्वयं ड्राइव करैत प्रशान्ति टूरिस्ट लॉज पहुंचा देलनि आ घुरिकऽ मन्दिर चलि गेलीहि। प्राय: समस्त परिवारकैँ अपन आवास लऽ जयबाक छलनि। हुनका सलवार समीज पहिरने कार ड्राइव करैत देखि प्रसन्नता भेल जे मैथिलानी लोकनि आब कोनहु क्षेत्रमे पाछां नहि छथि। 'सौभाग्यवती भव' एवं 'यशस्वी भव' केर आशीर्वाद देलियनि।

दिनक भोजन हमरालोकनि लॉजक भोजनालयमे कयलहुं। बड़ महग छल - अस्सी वा पचासी टके प्रति भोजन छल।

कोठलीक किराया सेहो तँ तेहने छल-प्राय: साढ़े पांच सय प्रति शय्या। चौधरीजी पूर्वहि कहि देने रहथि जे सन्ध्या छौ बजे धरि तैयार रहल जाय। साँझमे ओलोकनि बहुभाषा काव्य-संध्याक आयोजन कयने छलाह।

तदनुसार जानकी नवमीक पूर्व सन्ध्यापर दि. 21 मइकऽ (जानक नवमी 22 मइकऽ छलैक) गुवाहाटीक एक प्रसिद्ध होटलक प्रेक्षागृहमे मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक तत्त्वावधानमे आयोजित बहुभाषा काव्य-सन्ध्या अंतर राष्ट्रीय मैथिली परिषदक केन्द्रीय अध्यक्ष आ वरिष्ठ साहित्यकार डा. कमलकान्त झाक अध्यक्षतामे भेल, जाहिमे हिन्दी, मैथिली, भोजपुरी, असमियां आ बांग्ला भाषाक दर्जनो कविलोकनि भाग लेलनि। मि. सां. समन्वय समितिक अध्यक्ष श्री प्रेमकान्त चौधरी आगत अतिथिलोकनिक स्वागत कयलनि। श्रीभगवान सिंह 'भास्कर' भोजपुरी एवं हिन्दीक काव्यगान कऽ श्रोताक मनोरंजन कयलनि। असमियांक कवि राजीव फूकन अपन रचनामे मोबाइल पर व्यंग्य कयलनि। वरिष्ठ गजलकार श्री आलोक भारती अपन हिन्दी ओ मैथिलीक चर्चित रचना प्रस्तुतकऽ श्रोताक मनोरंजन कयलनि। अध्यक्षीय काव्यपाठमे डा. झा एक दू उत्कृष्ट रचना द्वारा मिथिला भूमिक महत्वकेँ रेखांकित कयलनि। अन्य काव्य पाठ कयनिहारमे प्रमुख छलाह सर्वश्री किशोर जैन, मिहिर मजुमदार, डा. एन.के. मिश्र, ललित कुमार झा, केके तिवारी, जेलोकनि विविध भाषाक माध्यमसं उग्रवाद, ब्रह्मपुत्र पर बनि रहल सन्दिग्ध बान्ह सहित कतेक विषयपर ध्यान आकर्षित कयलनि तथा अपन प्रस्तुतिसं श्रोताकेँ मन्त्रमुग्धकऽ देलनि। उक्त अवसर पर श्रीदिलीप कुमार झा माँ जानकीक किछु भजन सेहो प्रस्तुत कयलनि। कार्यक्रमक संयोजक श्रीललित कुमारझा धन्यवाद ज्ञापन करैत अहूसँ पैघ आयोजन भविष्यमे करबाक संकल्प व्यक्त कयलनि।

मिथिला सां. समन्वय समितिक सौजन्यसं एक अन्य स्थानमे रात्रिभोजक आयोजन छल, जाहिमे सबकेओ आमंत्रित छलहुं। कतके महत्त्वपूर्ण लोकसबसँ भेट ओ परिचय भेल छल। एगारह बजे राति धरि टूरिस्ट लॉजमे रात्रिविश्राम हेतु पहुंचा देल गेलहुं। भास्करजी कार्यक्रमक बीचहि मे अपन पुत्रक संग मेघालय जाचुकल छलाह।



शनि दिन 22 मइकऽ दुप्पहर धरि शिलांग पहुंचब आवश्यक छल, तँ भोरे तैयार भऽ लॉजसँ बाहर आबि चारूगोटे अल्पाहार, कयलहुं फेर आवास आबि सामान सरियाकऽ तैयार भऽ तीयां आबि व्यवस्थापकसँ फराकति लऽ प्रस्थान कऽ गेलहुँ। स्टेशनक निकट सूमो गाड़ी शिलांग लेल भेटि गेल- ओहिपार जयबाक काजो नहि पड़ल। नौ बजे धरि गाड़ी प्रस्थान कऽ गेल। रेलवे गुमती टपि गुवाहाटीक पलटन बाजार होइत गाड़ी मेघालय राज्यमे प्रवेश कयलक। कतहु चाहक खेती पहाड़ी ढलानपर, कतहुकटहर गाछक अधिकता, कतहु पहाड़ी जंगल आ मूल्यवान लकड़ीबला वृक्षसब देखैत आगाँ बढ़ि रहल छलहुं। वर्नीहाट, नोंगपोह, उम्सनिंग, बारापानी आदि बाजार होइत बारह बजे मध्याह्नेमे हमरालोकनि शिलांग शहरमे प्रवेश कयलहुं। रंग विरंगक मांस सँ लदायल गाड़ीसब अबैत जाइत देखाइ पड़ल। मोन कनेक घिन भऽ गेल। भेल कतके असभ्य एखनो अछि एहि इलाकाक लोक सब! गाड़ीबलाकेँ पहिनहि कहि देने छलियैक जे राजस्थान धर्मशाला लग उतारि दिहऽ से ओ उक्त अतिथिनिवासक कनेक आगां बढ़ाकऽ रोकि देलक। गाड़ीसँ उतरि सामानसँ लदफद होइत धर्मशाला दिस बढ़लहुं। अंदर प्रवेश कयलापर हमरालोकनिकेँ आवास एवं कार्यक्रम लेल ऊपर जयबाक संकेत भेटल छल। ऊपर बाल्कोनीमे राजस्थानक कवियित्री श्रीमती आशा पाण्डेय सँ परिचय भेल छल। आवास प्राप्त करबामे कनेक कठिनाइ भेल, सबटा भरलेजकां छल, तथापि ओही कसमकसमे निर्देशानुसार स्थान ग्रहण कयलहुं। फेर भोजनक बजाहटि भेल नीचा एक बजे मे। बुके सिस्टम अर्थात् स्वरूचि भोजन छल। समय आ सामग्री भीन बचत होइत छैक ओहि तरीकाक भोजनमे।

मिथिलाक मनोवृत्तिक ठीक विपरीत, मुदा कयले की जाय? परिस्थितिक अनुकूल तं चलहि पड़ैत छैक।

अपराह्न 3 बजेसँ उद्घाटन सत्र छल। भारतीय प्रशासनिक सेवाक अवकाशप्राप्त अधिकारी श्रीप्रमोद प्रकाश श्रीवास्तवक अध्यक्षतामे समारोह प्रारंभ भेल छल। मुख्य अतिथि छलाह वरिष्ठ आइ.पी.एस. श्री ए.के. माथुर, अतिरिक्त आरक्षी महानिदेशक, मेघालय तथा विशेष अतिथि छलाह मुख्यमंत्रीक विधि सचिव जनाब शइदुल्लाह नंगरुम। निदेशक अम्बाला छावनीसं प्रकाशित 'शुभतारिकाक' सम्पादक सुश्री उर्मिकृष्ण छलीहि तँ संरक्षक छलाह मेघालयक पैघ व्यापारी श्रीओमप्रकाश अग्रवाल। एक अतिथि छलीहि श्रीमती शमीम इस्मत, पूर्व केन्द्रनिदेशक, दूरदर्शन त' दोसर अतिथि छलाह डा. ओमप्रकाश भारती, उपसचिव, संगीत नाटक अकादमी एवं मुख्य सलाहकार डा. सुशील कुमार शर्मा, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग नेहू, शिलांग छलाह। मंच संचालनमे पुरुष स्वरबला छलाह डा. अशोक पाण्ड्या (राजस्थान) तथा स्त्री स्वरवाली छलीहि सुश्री अंजना सवि (भोपाल), जे विलक्षण समा बान्हि रहलि छलीहि। सर्वप्रथम संस्कृतमे गणेश वन्दना प्रस्तुत कयलनि श्रीमती आशा पाण्डेय एवं हुनक पुत्री सुश्री अम्बुधि पाण्डेय (राजस्थान)। सरस्वती वन्दना सुष्मितादास ओ अर्पिता चौधरी प्रस्तुत कयलनि तथा स्वागत भाषण कयलनि डा. सुशील शर्मा। अध्यक्षक परिचय करौलनि डा. शिप्रा बासु तथा मुख्य अतिथिक परिचय करैलनि सुश्री सरला मिश्र। डा. अरुणा उपाध्याय समारोहक संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत कयलनि। किछु पुस्तक एवं पत्रिकाक लोकार्पण सेहो करौल गेल। बीज भाषण कयलनि डा. ओमप्रकाश भारती। अन्य अतिथि लोकनि पूर्वोत्तरमे हिन्दीक विकासपर प्रकाश देलनि। डा. भगवान सिंह भास्करकैँ धन्यवाद ज्ञापन करबाक छलनि, किन्तु हुनका चेरापूंजीसँ अयबामे विलम्ब भऽ गेलनि। तखन स्वयं संयोजक श्री अकेलाभाइ आभार व्यक्त कयलनि।



सायं छौ बजेसँ बहुभाषी काव्य-गोष्ठी निर्धारित छल, जे 6.30 मे प्रारंभ भऽ गेल। अध्यक्षता कयलनि डा. जगदीश चन्द्र चौरे, वरिष्ठ साहित्यकार (भोपाल), मुख्य अतिथि छलाह अतुल कुमार माथुर, अतिरिक्त आरक्षी महानिदेशक, मेघालय, विशेष अतिथि शइदुल्लाह नंगरुम एवं परमजीत सिंह राघव, उपमहानिरीक्षक, सीमा सुरक्षा बल, मेघालय तथा अन्य अतिथिमे क्षीरदा कुमार सइकिया (गुवाहाटी), डा. कमलकान्त झा (मधुबनी, बिहार), उमाशंकर दूबे मनमौजी (भोपाल) एवं राजेन्द्र सिंह ठाकुर, पूर्व महानिरीक्षक, सीमा सुरक्षा बल। मंच संचालन कयलनि पं. मुकेश चतुर्वेदी 'समीर' (सागर, म.प्र.) तथा स्वागत कयलनि शुभाशीष कुमार सिंह (गोपालगंज, बिहार)। पहिल झोंकसे काव्य पाठ कयलनि सर्वश्री श्रीमती आशा पाण्डेय, उदय ठाकुर, अंजना सवि, परमजीत सिंह राघव, आलोक भारती, डा. कमलकान्त झा, छाया सिंह, आशीष भटनागर आदि।

दोसर खेप मच संचालन करबाक हेतु सुश्री अंजना सवि अयलीहि, जाहिमे काव्यपाठ कयलनि सर्वश्री राधेश्याम शाक्य, भगवान सिंह भाष्कर, संजीव सौरभ, रुक्शाना सिद्दीकी, अतुल कु. माथुर, फैयाज अहमद खान, जगदीश चन्द्र चौरे एवं अशोक पाण्ड्या खोड़न। तेसर खेपक मंच संचालन करबाक हेतु अयलहि डा. रुक्शाना सिद्दीकी तथा काव्यपाठ कयलनि सर्वश्री कृष्णपाल सिंह, जान मोहम्मद अंसारी, रामबाबू ज्योति, अरुणा उपाध्याय, जगदीश चन्द्र वर्मा, श्रीकृष्ण सैनी, राजेन्द्र सिंह ठाकुर एवं मंजू लामा आदि। चारिम खेपक मंच संचालन लेल अयलाह कैप्टेन दिनेश भारद्वज सिंह तथा काव्य पाठ कयलनि सर्वश्री शुभाशीष कु. सिंह, सरिता मिश्र, देवेन्द्र कु. जैन, यमुना वीनी, उमाशंकर दूबे मनमौजी, वीणा अग्रवाल, उमाकान्त खुवालकर, नरेन्द्र कुमार गौड़, सुवासिनी साहिल, डी. सत्यलता, अशोक सक्सेना अनुज, पंकज शर्मा, सन्तोष कुमार, गोविन्द पॉल, बी.के. सिंह एवं अकेलाभाई। आभार प्रकट कयलनि श्रीकृष्ण सैनी।

डा. अकेला भाइक ओतेक व्यवस्थित कार्यक्रम सँ हम बहुत प्रभावित भेलहुं। मोनमे भेल हमरहुलोकनिक कार्यक्रम जँ ओहने

व्यवस्थित भेल करैत तँ कतेक नीक होइत! छौ मास पूर्वसँ दिनराति तैयारीकरऽ पड़ैत छैक तखन जाकऽ कार्यक्रम व्यवस्थित भऽ पबैत छैक, जे हमर आयोजक, संयोजक लोकनिसँ सम्भव नहि भऽ पबैत छनि। ओहन व्यवस्थित कार्यक्रम भेल छल सातम अन्तर राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन जमशेदपुरमे जनवरी, 2000 ई.मे।

बाल्य कालहिसँ सुनैत आबिरहल छलहुं जे विश्वक सर्वाधिक वर्षाक क्षेत्र चेरापुंजी अछि। ताहि क्षेत्रकें देखबाक प्रबल इच्छा छल। सर्वप्रथम शिलांग नगरसं आगां बढ़लापर 'एलिफेंटा फाल (जलप्रपात) देखलहुं, जे दर्शनीय छल। किन्तु चढ़ैत उतरैत जांघ भरि गेल। आगां बढ़ला पर एकटा पार्क भेटल, जकर नाम छैक 'मट्टिलाग अम्यूजमेंट पार्क' तथा जे अपर शिलांग क्षेत्र कहबैत अछि।

रवि दिन 23 मइकऽ दस बजे पूर्वाह्न सँ संगोष्ठी प्रारंभ भेल, जकर विषय छल– 'पूर्वोत्तर भारत मे हिन्दी का विकास।' अध्यक्षता कयलनि श्रीबोढ़न मेहना बिहारी, मुख्य अतिथि छलाह प्रो. चन्द्रप्रकाश आर्य (करनाल), अतिथि श्रीक्षीरदा कुमार सैकिया, डा. भगवान सिंह 'भाष्कर' एवं डा. अशोक पाण्ड्या तथा संचालन डा. उमाकान्त खुवाल्कर कयलनि। स्वागत भाषण कयलनि श्रीजान मोहम्मद अंसारी। प्रतिभागी लोकनि मे छलाह सर्वश्री गोविन्द पाल, रश्मि वार्ष्णेय, डा. जगदीश चन्द्र चौरे, संजीव सौरभ, डा. रुख्शाना सिद्दीकी, डा. भारत विजय बगेरिया, आलोक भारती, सुवास दीपक, अमर वानिया 'लोहोरो' (सिक्किम) श्याम शंकर सिंह (ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश) विमलकान्त अरिबम, ब्रजकुमार शर्मा (इम्फाल, तादाम रुती (ईटानगर), काकोली गगोई, अजय कुमार साहु (शिलांग), सन्तोष कुमार (जोवाइ, मेघालय) डा. हरेराम पाठक (डिगबोई,आसाम)। अधिकांश वक्ता पूर्वोत्तर मे हिन्दीक प्रचार प्रसार पर सन्तोष व्यक्त कयलनि। विशेषकऽ अरुणाचल प्रदेशक श्यामशंकर सिंह, तादाम रुती, तारो सिन्दिक, आ सुश्री जमुना बीनीक देशभक्तिपूर्ण भाषणमे हिन्दीक प्रबल पक्ष देखि प्रसन्नता भेल। लागल चीन कहियो हमर अरुणाचल प्रदेशकेँ हड़पि नहि सकत, मोछ पिजयते रहि जय तैक, ओना चीनीकेँ मोछ दाढ़ी हिसाबहि सं होइत छैक। अरुणाचल प्रदेशक नागरिक लोकनि अत्यधिक देशभक्त ओ हिन्दी भक्त छथि। संगोष्ठीक अन्तमे आभार व्यक्त कयलनि स्वयं डा. अकेलाभाई।

अपराह्न 3 बजेसं अखिल भारतीय हिन्दी लेखक सम्मान समारोह प्रारंभ भेल, जकर अध्यक्षता अवकाश प्राप्त भारतीय प्रशासनिक अधिकारी श्री प्रमोद प्रकाश कयलनि। मुख्य अतिथि छलाह प्रो. प्रमोद टण्डन, कुलपति, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय। अन्य अतिथि लोकनिमे छलाह सर्वश्री अतुल कु. माथुर, शंकर लाल गोयनका, सुश्री उर्मिकृष्ण, क्षीरदा कुमार सइकिया, विमल कु. बजाज एवं आशीष भटनागर। स्वागतभाषण डा. अकेलाभाई कयलनि। सरस्वती वन्दना श्रीमती वीणा अग्रवाला प्रस्तुत कयलनि आ अन्तमे आभार व्यक्त कयलनि श्री विमल कु. बजाज। पचासो साहित्यकारकें माला, दोपटा एवं स्मृति चिह्न सँ सम्मानित कयल गेल छलनि।

सायं 6 बजे सं रंगारंग सांस्कृतिक समागम कार्यक्रम छल जाकर मुख्य अतिथि श्री एन. मुनीश सिंह, क्षेत्रीय अधिकारी, भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद छलाह। संचालन कैप्टेन दिनेश भारद्वाज सिंह कऽ रहल छलाह तथा स्वागत कयलनि श्रीमती सरला मिश्र। भजन श्रीमती वीणा अग्रवाल, देशभक्ति गीत सुस्मिता दास, अर्पिता चक्रवर्ती एवं देवस्मिता दास, रवीन्द्र संगीत (बांग्ला हिन्दी) संचयिता राय एवं विश्वजीत सरकार, बिहू नृत्य काकोती गगोई, जया गगोई एवं तुलमोती डेका, राजस्थानी लोकनृत्य सुश्री अम्बुधि पाण्डेय, मणिपुरी लोकनृत्य एन सन्ध्यारानी देवी, अरुणाचली माला लोकनृत्य जमुना बीनी, तादाम रुती एवं तारो सिन्दिक, भरत नाट्यम तानिया दास, नेपाली लोकनृत्य आकृति लामा, कत्थक नृत्य पाण्डेय, तिमाड़ी लोकगीत अंजना सवि, गजल फैयास अहमद खान एवं लोकगीत रामबाबू ज्योति प्रस्तुत प्रस्तुत कयलनि। आभार व्यक्त कयलनि स्वयं सम्मेलन संयोजक डा. अकेला भाई। तीन घण्टाधरि दर्शक श्रोतागण झूमैत रहलाह।

सोमदिन 24 मइ कऽ प्रात: 6.30 सं सायं 4 ब्जे तक पर्यटन कार्यक्रम छल। हमरालोकनि संख्या 80 छल, जे एक बसमे बैसब सम्भव नहि छल, मुदा माथुर जी एवं सशस्त्र सुरक्षाबल अधिकारीलोकनिक कृपासं दूटा बस भोरे आबिकऽ अतिथि गृहक बाहर लागि गेल, जाहिमे जलपानीपरान्त हमरालोकनि अपन-अपन स्थान ग्रहण कयलहुं। सात बजेधरि दूनू गाड़ीसं हमरालोकनि दक्षिण मुंह प्रस्थान कऽ गेलहुं। आइ चेरापूंजी धरिक भ्रमण करबाक छल। बाल्य कालहिसँ सुनैत आबिरहल छलहुं जे विश्वक सर्वाधिक वर्षाक क्षेत्र चेरापुंजी अछि। ताहि क्षेत्रकें देखबाक प्रबल इच्छा छल। सर्वप्रथम शिलांग नगरसं आगां बढ़लापर 'एलिफेंटा फाल (जलप्रपात) देखलहुं, जे दर्शनीय छल। किन्तु चढ़ैत उतरैत जांघ भरि गेल। आगां बढ़ला पर एकटा पार्क भेटल, जकर नाम छैक 'मट्टिलाग अम्यूजमेंट पार्क' तथा जे अपर शिलांग क्षेत्र कहबैत अछि। आगां जाकऽ 'मिल्लियम गांव' भेटल, जाहिठाम भयंकर मेघ लागल छल। आगां ईबे पार्क देखलहुं, जतय खूब मेघ लागल छल। प्राय: अधिकठाम मेघे आच्छादित कयनै रहलाक कारण एहि प्रान्तक नाम मेघालय पड़ल हेतैक। चेरापुंजी क्षेत्रमे जखन प्रवेश कयलहुं तं मोसमाइ गुफा भेटल। हमरालोकनि टिकट कटाकऽ फाटकक अन्दर परिसरमे प्रवेश कयलहुं। गुफाक बाहरहिमे चाह जलपानादिक दोकान किछु लागल छल। हमरालोकनि विस्कुट आ पानिक बोतल किनबहुं। संगमे जे जल लऽ गेल रही से



सठि गेल छल। आब आगां गुफा दिस बढ़लहुं मुदा अन्दर प्रवेश करबाक साहस नहि भेल। कारण थाल पानि पिच्छड़ आ पाथरक टुकड़ा सबमे चोट लगाबाक खतरा बुझि पड़ल। तथापि किछु लोक भऽ अयलाह। ओहिठामसँ आगां बढ़ला पर पहाड़क चढ़ाई आ घनघोर वर्षाक दृश्य उपस्थित भऽ गेल। एकतँ पहाड़क रास्ता ताहूमे एक दिस पहाड़ दोसर दिस भीषण गहिंरइ। ताहिपर मेघ अन्हार कयने वेश कौतूहल जगा रहल छल। बसक चालक जे अर्धसैनिक जवान छलाह, कें अन्हार आ वर्षाक कारण कठिनाइ भऽ रहल छलनि। जानकारी भेटल जे पहाड़क नीचां नदीक ओहिपार बाङ्लादेश देखाइ पड़ि रहल छल। आब हमरालोकनि 'थांगख्रांग पार्क' पहुंचि गेल रही, जे वेश व्यवस्थित आ दर्शनीय छल। 2.30 ब्जे अपराहनमे ओहिठाम पहुंचल रही। भोजन ओतहि करबाक छलैक। पेयजल नीक सुविधा बुझिपड़ल। टिकट कटा भीतर प्रवेश करैत गेलहुं। बुझिपड़ल पार्क नव आ विकासोन्मुख अछि। थोड़ोक काल टहललाक बाद भोजन सामग्री निकालल गेल - पूरी, तरकारी अंचारादि, जे शिलांगहिसं भोरे बनबाकऽ अकेलाभाइ लऽ अनने रहथि। सबकेओ संक्षिप्ते भोजन करैत गेलहुं। लगभग चारि बजेमे ओहिठामसं प्रस्थान कऽ गेल रही आ सोझे शिलांग धर्मशाला 5.30 बजेमे आबि गेलहुं। ओहिठाम चाह-विस्कुटक व्यवस्था छल। हम, आलोकजी आ भास्करजी बजार टहलबाक हेतु निकललहुं। लगहिमे सड़कक ओहिपार टैक्सीस्टैंड होइत सीढ़ी पकड़ि ऊपर जखन गेलहुं तं विलक्षण बजार देखाइ पड़ल। तीनू गोटे किछु फल कीनैत खाइत टहलैत टेलिफोन बूथसँ 'जयनगर फोन कयलहुं, कारण चारिदिन सं कोनो सम्पर्क नहि भेल छल। आसाम प्रवेश करितहि सभक मोबाइल बेकार भऽ गेल छल। सभक आउटगोइंग सुविधा समाप्त भऽ चुकल छल। श्री चौधरी जी पूर्वहि हमरा फोन पर कहि देने रहथि। कोनहु कारणसं पूर्वोत्तरमे ओ सुविधा नहि छैक। तें कतहुं फोन करबाक हेतु बूथहिपर जाय पड़ैत छल। बजार घमिकऽ सन्ध्या 7.30 धरि धर्मशाला आबि गेलहुं।

सिक्किम केर साहित्यकार अमर वानियां 'लोहोरो' हमरा तकैत आवाससे अयलाह आ अपन पुस्तक (त्रयभाषिक) 'जीवन चित्र' काव्य संकलन भेंट कयलनि। मूलकविता नेपालीमे तथा स्वयं ओकर हिन्दी आ अंग्रेजी अनुवाद कऽ एकसंग उक्त पोथीमे प्रकाशित करौने छथि जे किछु नवीन आ नीक लागल। हुनका धन्यवाद देलियनि तथा कहियो सिक्किम अयबाक वचन देलियनि। गत राहुक हमर काव्यगान हुनका नीक लागल छलनि।

मंगलदिन 25 मइकऽ भोरे हमरालोकनि तैयार भऽ शिलांगसं प्रस्थान कऽ गेल रही। संयोगसं धर्मशालाक फाटकहिपर सूमो भेटि गेल छल। एगारह बजे पूर्वाह्नमे गुवाहाटी स्टेशन लग पलटन बजारमे उतारि देलक। सामने बला होटलमे एकटा कोठली तीन डबल बेडबला लऽ लेलहुं जे ओहिमे आबि छबोगोटे स्थान ग्रहण कयलहुं। संगमे भास्कर जी आ बोढ़न मेहता बिहारी सेहो छलाह। रातुक अवध असम सं सबकें प्रस्थान करबाक छल, तथापि दिनभरिक लेल ठहरबाक व्यवस्था तँ चाही। सबकेओ दिनक भोजन लेल निकटवर्ती भोजनालयमे प्रवेश कयलहुं। सामान्य भोजन छल, जे आलोकजीक श्रीमतीकैँ नीक नहि लगलनि- "कोनोकरम के भोजन नइ हई। अहाँ आउरके कोनो नीक होटल नइ मिलल?" हुनक खौंझाहटि पर आलोकजी डँटलखिन- "तुम्हें नहीं खाना है तो मत खाओ, हमलोग थके हुए हैं, इस समय कहाँ अच्छा होटल खोजत जायेंगे? हुनक श्रीमतीजी एहिपर आगि बबूला होइत उठिकऽ ठाढ़ि भऽ गेलीहि आ भागिकऽ अपन आवासमे आबि गेलीहि। आब आलोकजी जल्दी-जल्दी भोजन समाप्त कऽ दौड़लाह हुनका मनयबाक हेतु। हमरालोकनि ओहि दृश्यक मजा लैत रहलहुं।

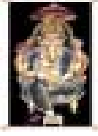
अपराह्न तीन बजेमे सबकेओ पलटल बजार भ्रमणमे निकललहुं। आन बजारसं ई कनेक सस्ता लागल, मुदा मोल मोलइ अधिक छल। जकरा जे मोन भेल से कीनैत गेलहुं। सन्ध्या 7.30 धरि रातुक हमरालोकनिकें किछु दूर एकटा नीक आवासीय होटलक भोजनालयमे लऽ गेलीहि। भोजन ठीकेठाम छल मुदा मूल्य चुकबय पड़ल नीक, जेना प्रशान्ति टूरिस्ट लॉजमे भेल छल। अस्तु सबकेओ आवास आबि 9 बजे रातिमे तैयार भऽ होटलसं निकलि टैक्सी पकड़ि ओहिपार स्टेशन आबि गेलहुं। पूछताछमे पता कऽ अपन प्लेटफार्म पर पहुंचलहुं, जतय गाड़ी लागल छल। सबकेओ अपन-अपन स्थान ग्रहण कयलहुं। बुध दिन 26 मइकऽ सबकेओ अपनर अपन घर आबि गेलाह, मुदा हम चारुगोटे जयनगर पहुंचलहुं मध्य रात्रि मे आ ताधरि तं तारीख सेहो बदलि चुकल छलैक।

सम्पर्क - तारा वीरेश्वर भवन,
ग्राम+पो. - हरिपुर डीहटोल,
भाया - कलुआही, जि- मधुबनी
मिथिला

पोथी

अगस्त्यायनी महाकाव्यक विशेषता

✍ कुमारी संध्या



परिवर्तन प्रकृतिक शाश्वत नियम थिक। साहित्यक प्रत्येक विधामे सेहो नव-नव परिवर्तन देखबामे अबैत अछि।मैथिली महकाव्यमे सेहो युगानुरूप रचनाकाकर, लोकनि नव-नव विषयक समावेश कएने छथि। अगस्त्यायनी महाकाव्यमे सेहो कवि पौराणिक कथावस्तु कें लए नवीन विचारधाराक संग प्रस्तुत कएने छथि।

अगस्त्यायनी महाकाव्यक नवीनताक संबंधमे श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार लिखैत छथि-

''अगस्त्यायनी महाकाव्यक कलेवर मे आबद्ध रहितहुं शुद्ध नव परम्पराक काव्यधारक वस्तु थिक। एहिमे कथासूत्र तं वैदिक युगसं लेल गेल अछि, किन्तु एकर शिल्प ओ संदेश दुनू नि:सन्देह अधुनातन अछि ओ ताहि सं जं एकरा नव काव्यधारक प्रथम महाकाव्य कही तं कोनो अनुचित नहि होयत।''

राष्ट्रीय भावनासं ओतप्रोत एहि महाकाव्यक विशेषता एहि प्रकारें अछि-

यथा- काव्यशास्त्रीय लक्षणमे नवीनता, प्राकृतिक उपादन द्वारा मानव-जीवनकें परिभाषित करब, सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रीय एकताक भावना, भारतीय नारीक रूपमे लोपामुद्राक चारित्रिक विशेषता, जन-कल्याण कार्य आदि।

महाकाव्यकार स्वयं अगस्त्यायनी के राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतानाक महाकाव्य कहने छथि। महाकाव्यकारक अनुसार स्वतंत्राक पश्चात् भारतक विभिन्न भौगोलिक प्रक्षेत्र, विविध भाषा स्वरूप, भिन्न-भिन्न भाषा संस्कृति एवं धार्मिक, साम्प्रदायिक वैषम्य भारतक राष्ट्रीय अखण्डता पर जे प्रश्नचिह्न लगौने अछि, तकर समाधान महाकाव्यकार अत्यन्त उत्तम ढंग सं एहि महाकाव्यमे कयलनि अछि।

अगस्त्यायनी कथानकक संबंधमे डॉ. बासुकीनाथ झा लिखैत छथि जे- अगस्त्यायनी महाकाव्यक कथानक ऋग्वेद, महाभारत एवम् पौराणादिमे वर्णित अगस्त्य ऋषिक कथापर आधारित अछि.... कवि पौराणिक आधारक संगहि कल्पनाक सफल सहयोग लेलनि अछि। एकर विशेषता ई अछि जे कवि प्राचीन कथाक द्वारा आधुनिक युगक महत्वपूर्ण समस्यार्कें चित्रित कएलनि अछि। एहिमे आधुनिक वैज्ञानिक युगक विकासक चित्र उपस्थित करैत मार्मिकता एवम् यांत्रिकता मध्य सहस्तित्वक भाव प्रदर्शित कएल गेल अछि।

रमणीय ई अछि जे अगस्त्यायनी महाकाव्यमे प्राचीन एवम् नवीन मिश्रणसं अभिनवताक सृजन भेल अछि।

श्री गोविन्दकान्त झा 'सरोज अपन' ''मैथिलीक नव्यतम महाकाव्यमे'' अगस्त्यायनीक कथानक पर प्रकाश दैत लिखलनि अछि-

''अगस्त्यायनीमे वेद, पुराण एवं महाभारतमे उपलब्ध अगस्त्यायनी कथाक समावेश कएल गेल अछि, कवि अपन कल्पना तथा तमिल साहित्यमे उपलब्ध कथाक आधार पर अनेक नवीन प्रसंगकें सम्मिलित कएल गेल अछि, जे संस्कृत सहित समस्त भारतीय आर्य भाषामे अनुपम अछि। उदाहरणस्वरूप, रावणक संग अगस्त्यक वीणायुद्ध आ महादेव द्वारा पाणनिक संग-संग अगस्त्योंकें तमिल व्याकरणक दीक्षा आदिक प्रसंगक उल्लेख कयल जा सकैछ। अगस्त्यायनी अगस्त्य कथाक काव्यानुवाद नहि एक स्वतंत्र, मौलिक एवं अभिनव महाकाव्य अछि।''

''दस मुद्रा (सर्ग)मे विभाजित श्री मार्कण्डेय 'प्रवासी'के आधुनिक महाकाव्य 'अगस्त्यायनी'क नायक छथि अगस्त्य एवं नायिका हुनक पत्नी लोपामुद्रा। कनि एहि कृतिक रचनामे शास्त्रीय लक्षण सबहिक अवहेलना नहि कएने छथि, प्रञ्च एकर प्रमुख विलक्षणता थिक ललित कोयल शब्द-संवरन, प्रवाहपूर्ण आधुनिक छन्द-विन्यास, लाक्षणिक अभिव्यक्ति-भांगिमा एवं स्वाभाविक चरित्र-चित्रण।''[3]

काव्यशास्त्रीय लक्षणमे नवीनता-

''अगस्त्यायनी यद्यपि आधुनिक महाकाव्य अछि, तथापि ई केवल 'मंगलाचारण कें छोड़ि महाकाव्य प्राय: सभटा शास्त्रीय लक्षणकें आदर्श मानिक' पूर्ण भेल अछि। दस (मुद्रा) सर्ग मे विभाजित एहि प्रबन्धकाव्यक नायक ऋषि श्रेष्ठ अगस्त्य छथि, जनिक धीरोदात्रतामे संदेह नहि कयल जा सकैछ। मंगलाचारणक खानापुरीक बाद सर्गारम्भ करब हमरा मोने तै आधुनिक चेतनाक अनुकूल जँचल आ ने काव्य-कथा यात्रेक अनुकूल। तें हम मंगलाचारणक चिप्पी नहि साटिक एहि महाकाव्यक प्राय: प्रत्येक 'मुद्रा' (सर्ग)क आरम्भ मंगलमय प्रसंग सं कयलहुं अछि। एहि महाकाव्यमे सर्ग कें 'मुद्रा' कहल गैलेक अछि।''[1]

''लोपामुद्रे!
शृंगारक शय्या त्यागि कुशासन पर बैसू!
मुद्रिका फेकि मणि-माणिक्यक
धो गंगाजलसं हाथ प्रिये,

साधना, दीपकेर बाती
कने दियौ उकसा!''[2]

एहि महाकाव्यक आधुनिकताक परिचय दैत डॉ. बासुकीनाथ झा लिखैत छथि।

''अगस्त्यायनी एक आधुनिक महाकाव्य थिक। आधुनिक युगक भावनाकें, आधुनिक युगक समस्याकें, आधुनिक रूप-स्वरूपकें एहिमे पौराणिक परिवेषमे सफलतापूर्वक अभिव्यंजित कएल गेल अछि। आधुनिक गुणसं समन्वित रहितहुं एहिमे महाकाव्यक प्राय: सभ शास्त्रीय लक्षणकें समेटल गेल अछि।''[3]

डॉ. देवकान्त झा सेहो अपन पोथी A Modern History of Maithili Literature मे एहि महाकाव्यक नवीनताक सम्बन्धमे कहैत छथि-

''Agastysyani in ten section called 'Mudras' is a landmark in presenting Indias national ethos. It is a modern poem unfalling all the national problems with models of Solutions''[4]

प्राकृतिक उपादान द्वारा मानव-जीवनकें परिभाषित करब-

कवि प्राकृतिक उपादान द्वारा मानव-जीवनकें एहि प्रकारें परिभाषित कएने छथि।

''जिनगी अछि नदी
सदा गत्यात्मकता जकरामे रहिते छै
एक ठां ठमकने
कहबै अछि डबरा-पोखरि।''[1]

उपर्युक्त पांतिमे कवि मानव-जीवनकें नदी सं तुलना कएने छथि, जहिना नदीमे जल प्रवाहक कारणें गतिमान रहैत छैक आ गति रुकि जएबाक कारणें डबरा-आ पोखरि बनि जाइत छैक, तहिना मानव-जीवनमे गतिशीलता रहवाक चाही।

''एकटा फूल अछि नहि जिनगी
जे एक-दू दिनक पाहुन हो
जीवन अछि पुष्पोद्यान
जाहिमे रंग-बिरंगक पुष्प-समूह
फुलाइत अछि।''[2]

एहि पांतिक माध्यमसं कवि मानव-जीवनकें पुष्पोद्यानसं तुलना कएने छथि, जाहिमे अनेक रंग-बिरंगक पुष्प-समूह फुलाइत अछि।

जाहिप्रकारें जीवनमे अनेकानेक उतार-चढ़ाव लागल रहला सं मनुष्यकें प्रत्येक बेर एकटा नवीन पुष्पक नव रंग रूपि अनुभव भेटैत अछि। अगर जीवनमे नीक-अद्यलाहक अनुभव नहि होयत तं जिनगी नीरस भा जेतैक। जिनगी एक-दू दिनक पाहुन नहि अछि। मनुष्य जीवन फूल जकां दुइए दिनक नहि छैक, जे तुरंत खत्म भ जाएत एहि जिनगी मे अनेक उतार-चढ़ाव, नीक-अधलाह, पुष्पोद्यानक रंग-बिरंगा फूल सन लागले रहैत अछि।

''जीवन समुद्र अछि
दैछ उमंग-तरंगक ध्वनि।
जगबैत रहै, अछि
प्रतिक्षण-
जन्म-मरण-तटकें;
चेतना-चन्द्रिका पाबि
उर्ध्वमुख रहिते अछि।
नहि जानि कते
मणि मोती, सितुआ, शंख, मांछ
सिन्धुमे रहै अछि गर्भस्थे।
तहिना विशिष्ट जीवन
अपनामे बहुत रास
भावना तथा
कल्पना-किरणकें पचबै अछि।''[1]

उपर्युक्त पांतिक द्वारा समुद्रसं तुलनाकए कवि जीवनक शाश्वत सत्यसं परिचय करबैत छथि, जाहिमे उमंग-तरंगक संग-संग जीवन-मरणक उदाहरण दैत छथि जेना समुद्रक गर्भमे अनेक शंख, मांछ, सितुआ, मोती रहैछ, ताहि प्रकारें मनुष्यो अपन म'न रुपि गर्भमे अनेक कल्पना-किरणकें पचौने रहैत छथि।

जाहि तरहे जीवनमे अनेक उमंग-तरंगक संग-संग म'न रुपि गर्भमे अनेको दु:ख-सुख अवसाद, भावना-कल्पना दबल रहैत छैक जे जीवनकें विशिष्ट बनबैत छैक।

एवम् प्रकारें भूमण्डल, चानक वृक्ष, गगन आदि अनेको प्राकृतिक उपादानसं मानव-जीवनक तुलना कएल गेल अछि।

सांस्कृतिक चेतना -

वस्तुत: प्रत्येक राष्ट्र जखन सुसम्पन्न होयत तखनहि ओकर विकास संभव भ' सकैत अछि एवम् ओहि राष्ट्रमे संस्कृतिक-कलाक विकास संभव अछि, जनता जखन आर्थिक दृष्टिमें समप्न्न रहत, तखनहि ओकर हृदयमे व्यापक बन्धुत्व भावक अंकुरण होयतैक, आ तखनहि देशक अखण्डताक रक्षा संभव भ' सकत।

सांस्कृतिक चेतनाक जड़ि सेहो आर्थिक जलसं प्रबल होइछ एकरा स्वीकारब निश्चय रूपसं जरूरी अछि-

''कोटि-कोटि जन हो अधपेटा
तखन न सम्भव शान्ति
किछुए लोक बंटै' अछि अधिका-
धिक जनमे विश्रान्ति''[1]

छठम् मुद्रामे ई सिद्ध क' देल गेल अछि जे मानवीय शक्तिक समक्ष ईश्वरीय सत्ता सेहो पराभूत भ' जाइछ। इन्द्रक ईर्ष्यालु स्वभाव सर्वविदित अछि। ककरो तपस्या करैत देखला पर इन्द्र अपने अस्तित्व पर आसन्न संकटक अनुमान क' विचलित भ' उठैत छथि आ ओकर तप भंग करबाक कोनो प्रयास छोड़ैत नहि छथि, भले ओहिसं व्यापक अहितेएं किएक ने होइत हो। अगस्त्य बारह वर्षक महायज्ञ ठनने छथि आ पत्नीक सेवाभाव, पुत्रक तत्परता तथा अन्यान्य ऋषिगणक व्यापक सहयोगसं यज्ञकार्य सफलताक सोपानपर बढ़ैत जा रहल छनि, कि कुटिल इन्द्र वर्षे बन्द क' देलनि। सर्वत्र हाहाकार मचि गेल। सामाजिक कल्याण-कामनासं कयल गेल यज्ञमे बाधक तत्त्वकें ऋषि-आचार्य कोना बर्दास्त क' सकैछ? हुनकामे साधना-धन्य आत्मविश्वास जगैत अछि। इन्द्रकें ओ चुनौती दैत हुनका सभ्यता आ शीलक स्मरण करा रहल छथि-

''आध्यात्म-कंठ जं करत उच्चरित भौतिक स्वर

एकाधिकार रहि सकत सुरक्षित तखन ककर?

उपजत नहि यदि गगनक उरमे सभ्यता-

शील

ऊर्ध्वमुख करण पातालक जल हम ठोकि कील।''[2]

ततबे नहि ओ घोषणा करैत छथि जे-

''मानवतासं दुष्टता करत जं देव-तत्त्व

मानव अपनेमे आरोपित करतै' सुरत्व।''[1]

ओहिनो सुर आ असुरमे की भेद होइछ? इएह ने जे सुर-तत्वसं मानवताक कल्याण होइछ, असुर-तत्वसं संहार। किन्तु सुर-तत्वे जं संहार काज शुरू क' देअय तं मानव कि करओ आखिर? ओकरा अपनेमे सुरत्वक प्रतिष्ठापन कर' पड़तैक आ तखन देवताक अस्तित्व एखन जं कतहु अछियो तैयो एतबा तं निश्चय जे मानवक सामर्थ्य ओकरासं कनेको न्यून नहि। खाली मानवकें अपनाके चिन्हबाक टा काज छैक। आ इएह चिन्हायब तं महाकाव्यक प्रयोजन, कविक उद्देश्य।

राष्ट्रीय एकता-

राष्ट्रक प्रत्येक नागरिक कें म'नमे अपन देशक प्रति श्रद्धा एवम् प्रेम, अपन राष्ट्र पर अचानक आयल विपत्तिसं लड़बाक कर्त्तव्यबोध एवम् आत्मशक्ति राष्ट्रीय एकताकें बरकरार रखबाक क्षमता आदि एहि प्रकारक भावक अभिव्यक्ति डॉ. देवकान्त झा निम्न पांतिमे कएने छथि-

"The Poet has skillfully Projected Agastya as a national hero and Lopamudra as the befitting heroine for fulfilling the crying need of the hour. By their selfless sacrifice and unflinching determination to unite India, they have brilliantly bridged the gult between the North and South. Aryan and non-Aryan into a great unity."[2]

अगस्त्यायनीमे राष्ट्रकें आन्तरिक रूपें सुदृढ़, सुविकसित, सुनिश्चित एवम् सुशान्त रखबाक तथा बाह्य संकटसं पूर्णत: सुरक्षित करबाक संदेश व्यक्त करबाक एवं छली दैत्यराज वातापि एवं आतापिक संहारक बाद नायक अगस्त्य बिन्ध्याचलक बाधाकें पार क' दक्षिण भारत जाइत छथि तथा औतुका जन-सामान्यकें शिक्षित एवं सुसंगठित क' अपन नेतृत्वमे राष्ट्रकें पाश्विक चेतनासं मुक्त करैत छथि। ओ राष्ट्रक शत्रु सभहक हेतु समुद्रकें सोंखि लैत छथि आ कहैत छथि जे-

''जे हो, जा धरि नहि

शत्रु-मुक्त अझि भारत

निश्चिन्त भावसं

सूतल रहब न सम्भव

देशक विकास-पथ

हो नहि जं निष्कंटक

व्यक्तिगत साधना-सिद्धि

रहैछ असंभव।''[1]

अगस्त्यकें संदेह होइत छन्हि जे समुद्र पारक भारत विरोधी तत्त्व भारतक विरुद्ध भविष्यमे षडयंत्र रचि सकैछ तथा तस्करी कैं संरक्षण द' देश कें कमजोर बना सकैछ। समुद्र शोधणकबाद जब-सेना हुनकासं लंका दिशि बढ़ि रावणक संहार करबाक आग्रह करैत छन्हि तखन ओ 'आधुनिक कूटनीतिक' संयमक संग कहैत छथिन्ह जे ई काज राम करताह प्रयोजन पड़ने। अगस्त्यक माध्यमसं कवि कहैत छथि जे राष्ट्रक विकास, यात्रा एवं सुरक्षा व्यवस्थामे प्रत्येक नागरिक कें सहभागी बनाओल जयबाक चाही अन्यथा सामर्थ्यक सीमा एवं जीवनक अनिश्चिंतताक कारण केवल नेताक भरोसे रहने कोनो क्षण किंकर्त्तव्यविमूढ़ताक स्थिति उत्पन्न भ' जा सकैछ। अगस्त्यायनीक अगस्त्य कहैत छथि-

''एकटा व्यक्ति

कतबो बलशाली भेने

राष्ट्रक प्रतिनिधि नहि

रहि सकैछ युग-युगधरि

जं वर्तमान जागत

तखने इतिहासो

गर्वक अनुभव क' सकत

प्रकाशित रहि-रहि।''[1]

अगस्त्यायनीमे राष्ट्रीय एकताक स्वर सभसं उच्च अछि एवम् एहि पांतिक द्वारा राष्ट्रीय एकताक भावना स्पष्ट रूपें मुखरित भेल अछि। जकरा डॉ. बासुकीनाथ शिखरिणीमे उद्धृत कएने छथि-

''शिक्षित करब उपेक्षित अछि सम्पूर्ण राष्ट्रकें

एकत्वक अनिवार्य अपेक्षा छैक राष्ट्रकें

आर्यावर्त्त, अखण्ड, अजेय, अकृश, अजरामर

एटि अनुभवक आवश्यकता छैक राष्ट्रकें।''[2]

एवम् प्रकारें उत्तर भारत एवम् दक्षिण भारतकें राष्ट्रीय चेतना द्वारा एकीकृत करबाक सफल प्रयास कयल गेल।

लोक-कल्याणकारी कार्य-

'अगस्त्यायनी'मे अगस्त्य समाजक सुखमे वैयक्तिक सुखकें अन्तर्निहित देखैत छथि जे प्राचीन भारतीय,

''सर्वे भवन्तु सुखिन:'' केर भावनाक अनुकूल अछि, एहि प्रकारक भावक अभिव्यक्ति डॉ. देवकान्त झा निम्न पांतिमे कएने छथि-

"The Title denotes the pioneer work of the Rishi Agastya as a champion of nation-building and social reform."[3]

''लोपे! चिन्ता नहि कर', समाजक सुखमे

व्यक्तिक सुख अन्तर्निहित सदा रहलै' अछि

ई आर्य-भूमि अछि, सिन्धु-समर्पण भावें

गंगा पवित्रताकेर पर्याय बनै अछि।''[4]

आम् मुद्रामे कवि कल्पनाक आश्रय लए अगस्त्य ओ रावणमे संगीत युद्ध करौलनि तथा रावणकें समुद्र पार, पड़यबाक कारकणक उल्लेख कयलनि। तमिल सभ्यतामे असुरक वर्चस्व रहलाक कारणे जनता दुखी छल। अगस्त्य ओतए आबि सुख-शान्तिक साम्राज्य स्थापित कएल। अगस्त्यकें संगीत शास्त्रक शिक्षा लोपा देलनि। रावणकें संगीत विधासं परास्त कए ऋषिवर लंका पठौलनि-

''युद्धक माध्यमसं ऋषि तथापि

लोहा नहि लेब उचित बुझलनि

संगीत-युद्धमे रावणकें-

पटका देबाक तर्क सुझलनि।''[1]

तत्पश्चात् -

''कयलनि प्रारम्भ पुन: ऋषिवर

सटले वीणा पर राग-नृत्य

पघिलल पोदिय, वीणा निकालि

कयलनि इतिहासक पैघ कृत्य
स्वीकार पराजयकें कयलक
रावण अविलम्ब गेल लंका।''[2]

मानवक विकास हेतु राष्ट्रक विकास आवश्यक होइछ–

''देशक विकास पथ
हो नहि जें निष्कंटक
व्यक्तिगत साधना सिद्धि
रहैछ असम्भव''[3]

समस्त मानवक कल्याण कामना अभिव्यक्त करैत कवि कहैत छथि–

''हे इन्द्रध्वज नहि दुखी रहथि हविदाता
बरिसह, धनधान्य पूर्णता धरती पर हो–
मानवबल पूर्ण, जयी दानी बनि पाबय
उत्तम कर्त्तव्य ज्ञान–प्रतिमान प्रखर हो।''[1]

लोपामुद्रा एक भारतीय नारीक रूपमे–

एहि महाकाव्यक नायिका लोपामुद्रा सर्वत्र उदात्त रूपमे चित्रित भेल अछि। राजकीय सौख्यक परित्याग, ऋषि अगस्त्यक क्रिया–कलापमे सक्रिय सहयोग, राष्ट्रक कल्याणक हेतु पुत्र–वियोग–सहन आदि लोपाक उदात्रताक परिचायक थिक। अगस्त्यकें साधन–सम्पन्न बनएबाक हेतु उचित समय पर ध्यानाकर्षण एक भारतीय नारीक रूपमे करैत छथि। संगीत एवं कलाक निपुणता एतेक धरि अछि जे स्वयं अगस्त्य हिनकासं वीणावादन सीखि रावणकें संगीत–युद्धमे परास्त करैत छथि। ओ आदर्श नारीक प्रतीक छथि–

''लोपासं ऋषि वीणा–वादन
सिखलनि; आश्रय ध्वनि–मत भेल
किछुए दिनमे ई वाद्य–यंत्र
स्वर–महिमामे स्वायत्त भेल।''[2]

भारतीय नारीक प्रतीक लोपा –

''लोपामुद्रा छी हुनकर संज्ञा अगस्त्य छनि
विद्या ज्ञान प्रचार प्रसार हुनक लक्ष्य छनि
छी विदर्भराजक कन्या आ ऋषि पत्नी हम
आयल छी प्रियतमक चरण कमलक श्रद्धा बनि।''[3]

ऋषिकसंग ओ दक्षिणक यात्रा करैत छथि। हुनका प्रत्येक प्रयासमे सहयोग दैत छथि, आर्थिक वैषम्यक विनाश करबाक हेतु प्रेरित करैत छथि–

''कवि कुलमे अछि अर्थक अभाव
अछि अकवि शिविर पर धन प्रभाव
हे ऋषि वैषम्य विनाश हेतु
अहं निकलू।''[1]

वास्तवमे लोपामुद्रा ऋषि अगस्त्य जीवन–संघर्षमे केवल सहधर्मिणी नहि, अपितु सहकर्मिणी सेहो बनल रहैत छथि। लोपामुद्रा राजसी भोग–विलासकें त्यागी ऋषि कन्या बनि एक परम कर्त्तव्यनिष्ठ भारतीय नारीक उदाहरण प्रस्तुत कएल।

रचना–शिल्पक दू पक्ष होइत अछि– अंतरंग एवम् बहिरंग।

अंतरंग निर्माण भावात्मकता एवं रसात्मकता द्वारा होइत अछि।

बहिरंगक अन्तर्गत भाषा, शैली, छन्द, कल्पना, वर्णन आदि अबैत अछि।

अगस्त्यायनी महाकाव्यमे दुनू पक्ष प्रबल अछि। अगस्त्यायनी कथानकमे इतिहास पुराण सार्वदेशिक स्तर पर प्रचलित दन्तकथा एवं कविक तर्कपूर्ण कल्पनाशीलताक समन्वय अछि। डॉ. वासुकीनाथ झा एहि प्रसंगमे सत्ये लिखैत छथि जे–

" The plought, this great epic Agastyayani is based on the story of the great vaidic and Pauranic saint Agastya, the Poet has added charm in the story with the help of his bright enaliration."[2]

उपर्युक्त तथ्यक आलोकमे कहल जा सकैत अछि जे एहि महाकाव्यक नवीनते एकर विशेषता थिक।

– कुमारी संध्या (जे.आर.एफ.)
मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय)

साक्षात्कार

मैथिलीक लेल समर्पित व्यक्तित्व



बहुविधाविध रचनाकार युवा पत्रकार श्री गजेन्द्र ठाकुरजी सँ युवा प्रतिनिधि लघुकथाकार एवं समीक्षक मुन्नाजीसँ भेल गप्प सप्प प्रस्तुत अछि :–

मुन्नाजी : गजेन्द्र जी नमस्कार। युवावर्गमे अहाँक कार्य देखि आह्लादित होइत रहलौं अछि, ताहि हेतु अहाँसँ ऐ पर विस्तृत चर्चा करऽ चाहब। गजेन्द्रजी अहाँक बेशी रहनाइ आ शिक्षा मिथिलासँ बाहर भेल। उच्च शिक्षाक माध्यम अंग्रेजी रहल तखन मिथिला/मैथिलीसँ एतेक लगाव कोना?

गजेन्द्र ठाकुर : बच्चामे 1979–80 में चौथा–पँचमा हम अपन प्राइमरी स्कूलसँ केने छी। हमर पिताजी बिहार कार्यपालक अभियन्ता रहथि जखन कार्यकालहिमे हुनकर मृत्यु भऽ गैलन्हि। मुदा ई गप ओहिसँ पुरान अछि, समयमे हमर पिताजी सहायक अभियन्ता रहथि आ पटना–हाजीपुरक गंगापुल बनि रहल रहए। पिताजी इमानदार रहथि से ठिकेदार सभ आ अभियन्ता सभ रोलरसँ पिचबाक धमकी देने रहन्हि, बच्चा सभकेँ मारबाक धमकी देने रहन्हि। अपने तँ ओ पलायन नहि केने रहथि मुदा हमरा सभकेँ गाम पठा देने रहथि। भऽ सकैए यएह डेढ़ सालक गामक निवास मैथिलीसँ हमर लगावक कारण रहल हुअए। फेर बादोमे सालमे दू बेर पिताजीक संग गाम जाइते छलहुँ, एक बेर होलीमे आ दोसर बेर दुर्गापूजामे। पिताजीक मुँहे एक बेर सुनने छलहुँ जे एहि जन्ममे तँ नगरमे रहि रहल छी मुदा अगिला सात जनम गाम नै छोड़ब।

मुन्नाजी : पहिल बेर रचनाक प्रेरणा कोना/कतऽ सँ आ कहिया भेल। पहिला रचना (लिखल) कोन छल आ पहिल प्रकाशित रचना कोन (विधा सहित कही) कतऽ कहिया छपल।

गजेन्द्र ठाकुर : वएह 1979–80 क गप अछि। गामक स्कूलमे एकटा बाल नाटकक भार हमरा कान्हपर वीरभद्रजी नवका मास्टर साहेब आ बड़हराबला मास्टर साहेब देलन्हि। नाटकक पोथी कत्तऽ सँ भेटत? तँ

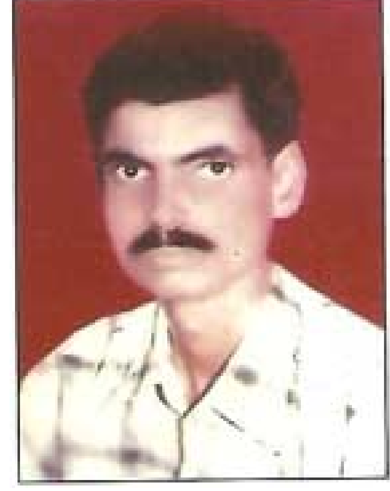
दानवीर दधीची लिखलहुँ। कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनकमे ई ढेर रास सुधारक संग प्रकाशित अछि 2009 ई. मे। 2000 ई. मे जे हम मैथिलीक देवनागरीक साइट याहूसिटीजपर बनेलहुँ ओहिसँ पाण्डुलिपि टाइप अन्तर्जालपर नियमित रूपे आबए लागल, बादमे याहू अपन जियोसिटी बन्न कऽ देलक मुदा 5 जुलाई 2004 के ''भालसरिक गाछ'' नामसँ बनाओल हमर मैथिलीक अन्तर्जाल पहिल मैथिली उपस्थितिक रूपमे एखनो विद्यामान अछि। यएह भालसरिक गाछ 1 जनवरी 2008 सँ विदेह पाक्षिक ई-पत्रिकाक रूपमे नियमित रूपेँ आबि रहल अछि, आब तँ एकर 70 टा विदेह रूप आ 4 टा सदेह रूप आबि गेल छै। प्रिंट पत्रिका/दैनिकक जतऽ धरि गप अछि तँ भारती-मंडन, समय साल, घरबाहर, अंतिकी, आँकुर, पूर्वोत्तर मैथिल, जखन तखन मिथिला डट कम (जनकपुर), परमेश्वर कापड़ि जीक (जनकपुर), मिथिला समाद, मिथिला दर्शन रचना सभ अछि। भारती-मंडन लेल पूर्णियाँसँ हम रचना पठेने छलियनि 2001-02 में केदार कानन/तारानन्द झा ''तरुण''कैँ, जे बादमे छपबो कएल, ओहि कालमे हम सासुरमे रही एकटा दुर्घटनाक बाद, बैशाखीपर डेढ़ बरख धरि रही (2001-02)। भऽ सकैए ओहो कालावधि हमरा देलक आ हमर दिशा निर्धारित कएलक।

मुन्नाजी : एक संग एतेक विधामे रचना असोकर्ज नै होइछ? एक संग बहुविधाक संगोर प्रकाशित की उद्देश्य?

गजेन्द्र ठाकुर : एतेक विधा माने कतेक विधा? विधा तँ दुइये टा छैक गद्य आ पद्य। हमर कथा शब्दशास्त्रम् मे ढेर रास गीत छै। तस्कर कथा पंजीमे वर्णित तस्कर केशवक तहमे गेलाक उपरान्त फुराएल। आब पंजीक मिथिलाक्षरसँ देवनागरीमे लिप्यन्तरण नै करितहुँ तँ लैला-मजनू आ हीर राँझआक कोटिक मैथिली प्रेमकथा मैथिलीमे नै अबिलए। मैथिली अंग्रेजी डिक्शनरी रहै मुदा इंग्लिश-मैथिली डिक्शनरी नै रहै, से ओ बनएबाक क्रममे हम ब्लॉगकैँ जालवृत्त लिखै छी आ इन्टरनेटकैँ अन्तर्जाल, तँ से कोना होइतए, हमर विज्ञान कथा काल-स्थान



गजेन्द्र ठाकुर



मुन्नाजी

विस्थापन, आ अन्तर्जाल आ प्रबन्धपर आलेख, मैथिलीक लेल SWOT अनेलिसिस मैथिलीमे कोना लिखाइत? तँ सिद्ध भेल जे हमर गद्य-पद्य एक दोसराक लेल ऋणी अछि, हमर पाण्डुलिपिक लिप्यन्तरण/अंकण आ शब्दकोषक निर्माण सेहो हमर गद्य-पद्यक विशिष्टतामे योगदान देलक। हमर मैथिली-संस्कृत शिक्षाक कार्य मूल संस्कृत-काव्यक अन्वेषणमे हमर सहायता केलक, आ ताहि कारणसँ ''दानवीर दधीची'' क पौराणिक दन्तकथा जाहिमे दधीची हड्डी दान दै छथि कैँ हम नै मानलहुँ आ वैदिक कथा मानलहुँ जाहिमे आश्वनौ हुनका (दधीचीकैँ) घोड़ाक मुँह लगा दै छथि आ ओहि गरदनिकैँ इन्द्र काटै छथि आ फेर आश्विनौ दधीचीक असल मुँह लगा दै छथि, आ ओहि काटल घोड़ाक मुँहक हड्डीसँ इन्द्रक हथियार होइ छै, दधीचिक हड्डीसँ नै। त्वञाचाहञ्च (मूल संस्कृत महाभारतपर आधारित) आ असञ्जाति मन (संस्कृतमे अश्वघोषक बुद्धचरितपर आधारित) ई दुनू गीत प्रबन्धमे आएल मूल विशिष्टता सेकेन्डरी सोर्सक अध्ययनसँ सम्भव नै छै, आ नहिये दूर्वाक्षत मंत्रक वा आन वैदिक युगक कथ्यक विश्लेषण (ग्रिफिथक अंग्रेजी अनुवादक सेकेन्डरी सोर्सक विपरीत) बिना अर्थ बुझने सम्भव, से मायानन्द मिश्रक प्रथम शैल पुत्री च, मंत्रपुत्र, पुरोहित आ स्त्रीधनक समीक्षामे सेहो काज आएल। तँ हमर संस्कृत-मैथिली शिक्षआ एतए काज आओल। हमर दर्शन शास्त्रक मूल वाचस्पति/कुमारिल/मंडनक ओ भामती आ ब्रह्मसिद्धिक दार्शनिक तत्व शब्दशास्त्रम् मे आओल। तँ हमर अंग्रेजी साहित्यक शिक्षा हमर आलेख मैथिली साहित्यपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभावक आधार बनल। हमर ऋगवैदिक संस्कृत आ अवेस्ता क मूल अध्ययन मैथिलीक गजलशास्त्रक आलेखमे प्रयुक्त भेल तँ हैकू आ हैबून-मूल जापानी काव्याशास्त्रक अनुवादक आधारसँ विशिष्टता प्राप्त कऽ सकल। सहस्रबाढ़निक ब्रेल वर्सन, कैथी, आ मिथिलाक्षर यूनीकोडक निर्माणमे योगदान हमर कम्प्यूटर विशेषज्ञताक बिना सम्भव नै छल तँ हमर लेबर इन डेवेलपमेन्टक कोर्स हमर बाल-श्रमपर आधारित कविता लेल अपरिहार्य छल।

एक संग ई सभटा रचना हार्डबाउन्डमे कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक नामसँ एहि द्वारे प्रथमे-प्रथम छपल कारण हम एकरा परिवारक सभ सदस्य लेल लिखने छी। शिशु/बाल साहित्य सेहो एहिमे अछि कारण छोट बच्चा स्वयं ओ रचना नै पढ़त वरन् अहाँ ओकरा पढ़ि कऽ सुनेबै, कविता यादि करैबै, अंकिता वर्णमाला शिक्षा देखू, नाटक करबबियौ। मूड अछि पढ़ू नै तँ कविति-समीक्षा/नाटक पढ़ू खेलाऊ। महाभारत/बुद्धचरित पढ़बाक पलखति नै अछि तँ त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति

मन पढ़ू। मोन अछि तँ उपन्यास पढ़ू आ नै तँ दीर्घकथा-लघुकथा पढ़ू। बादमे ई सातो खम्ड पेपरबैकमे सेहो सात खण्डमे आएल। हार्डबौन्डक हजार कॉपी गोट-गोट बिका गेलै।

मुन्नाजी : एक संग बहुविधाक रचना प्रकाशनसँ अहाँक अपन अस्तित्वकेँ खतरा नै बुझाइत अछि? एहेन केलासँ भऽ सकैछ जे समीक्षक अहाँक कोनो मूल्यांकन नै कऽ सकैथ?

गजेन्द्र ठाकुर : मुदा से भेलै नै। कारण लीखपर चलैसँ हमरा परहेज नै अछि जे ओ कत्तौ धरि पहुँचाबए, आ नै तँ नव लीख बनेबामें सेहो कोनो असोकर्ज नै। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक हमर 2009 धरिक समस्त कृतिक (पंजी आ डिक्शनरीकेँ छोड़ि जे अलगसँ प्रकाशित भेल) संकलन अछि। ई पाठक लेल लिखल गेल अछि, समीक्षकक लेल, नै मैथिलीक ओहेन समीक्षकक लेल नै जिनका मिथिलाक्षर नै अबैत छन्हि आ कम्प्यूटर इलिटेरेट छथि से पंजी आ कम्प्यूटर/प्रबन्धन विषयक आलेखक समीक्षा नै कऽ सकताह से हम बुझै छी, करबाको नै चाहियन्हि; ऋगवैदिक संस्कृतक ज्ञान नै छन्हि तँ हमर ताहि सम्बन्धी समीक्षापर ओ समीक्षा नै कऽ सकताह से हम बुझै छी, आ से करबाको नै चाहियन्हि। मुदा जाहिपर ओ कऽ सकै छथि ताहिपर करथु, कतेक समीक्षक केबो केलन्हि अछि, जेना प्रेमशंकर सिंह, शिव कुमार झा आ राजदेव मंडल। पक्ष-विपक्षमे सएसँ बेशी चिट्ठी सेहो आएल अछि। मुदा जे पाठक छथि हुनकर प्रतिक्रिया आह्लादकारी अछि, प्रिंटक अतिरिक्त हजारसँ बेशी डाउनलोड विश्वभरिमे पसरल मैथिलीभाषी द्वारा हमर सभ पोथीक भेल अछि। बिना कोनो सरकारी साहित्यिक संस्थाक सहयोगसँ हमर उपन्यास सहस्त्रबाढ़निक अनुवाद अंग्रेजी, संस्कृत, तुलु, कन्नड़, मराठी आ कोंकणी मे कएल गेल। एहि उपन्यासकेँ ब्रेलमे लोक पढ़ि रहल छथि।

खिरदमंदों से क्या पुछूँ कि मेरी इब्तिदा क्या है

कि मैं इस फिक्र मे रहता हूँ मेरी इन्तिहा क्या है,

विदेह मैथिलीक एकमात्र अन्तर्राष्ट्रीय शोध जर्नल अछि जकरा पेरिस स्थित अन्तर्राष्ट्रीय संस्था मान्यता देने छै। विदेह अही सभ उद्देश्यसँ शुरू भेल आ अपन सभटा उद्देश्य प्राप्त कएलक। मुदा एतेक भेलाक पश्चातो हम कहब जे ई तँ एखन मात्र प्रारम्भ अछि।

(इकबाल)

(बुधियारसँ हम की पुछू जे हमर आरम्भ की अछि, हम तँ एहि चिन्तामे छी जे हमर ओरछोर की अछि।- इकबाल)

खुदी को कर बुलन्द इतना, के हर तकदीर से पेहले

खुदा बन्दे से खुद पूछे, बता तेरी रजा क्या है?

(इकबाल)

(अपन नि:स्वार्थताकेँ एहि स्तर धरि लऽ जाऊ जे ककरो भाग्य बनेबाक पहिने भगवानकेँ ओकरासँ ई पूछएं पड़न्हि जे बता केहन भाग्य चाही तोरा।

(इकबाल)

मुन्नाजी : अहाँ निश्शन रचनाकार आ समीक्षकक अतिरिक्त मैथिली पत्रिकाक एकटा आधार स्तम्भ भऽ देखार भेलौं अछि। ''विदेह ई पाक्षिक'' प्रारम्भ करबाक विचार कोना भेल? आइ एकरा आ एकरा माध्यमेँ अपनाकेँ कतऽ पबै छी?

गजेन्द्र ठाकुर : मैथिली पत्रिका सभकेँ रचना पठाएब तँ दू बरख उपरान्त नम्बर आएत, नहियो आएत। अतिथि सम्पादक रचना मंगबा कऽ गीड़ि गेलाह, सेहो उदाहरण अछि। नव रचनाकार हतोत्साहित रहथि। से विदेह प्रकाशनक नियमितता लऽ कऽ आएल, वितरणक समस्या एखरा नै रहै, कारण ई अन्तर्जालपर छल। भारत आ नेपालक मैथिली भाषीक बीचक जे बोर्डर छलै, देशक बोर्डर, से विदेह लेल नै छलै। भारतक नै वरन विश्व बीच पसरल मैथिली भाषी मध्य विदेह लोकप्रिय भेल। मैथिलीमे पाठक नै छै, नीक लेखक नै छै, युवा लेखक नै छै, गएर मैथिल ब्राह्मण-कर्ण कायस्थ-गएर सवर्ण लेखक नै छै, ई समस्त धआरणा विदेह तोड़ि देलक। आइ धरि विदेह ई पत्रिकाकेँ 107 देशक 1,571 ठामसँ 51,077 गोटे द्वारा विभिन्न आइ.एस.पी. सँ 2,72,082 बेर देखल गेल अछि (गूगल एनेलेटिक्स डेटा)। विदेह: सदेह: 1 मे 118 टा लेखक (18 बर्खसँ 88 बर्ख धरि) छलाह। विदेह मैथिलीक एकमात्र अन्तर्राष्ट्रीय शोध जर्नल अछि जकरा पेरिस स्थित अन्तर्राष्ट्रीय संस्था मान्यता देने छै। विदेह अही सभ उद्देश्यसँ शुरू भेल आ अपन सभटा उद्देश्य प्राप्त कएलक। मुदा एतेक भेलाक पश्चातो हम कहब जे ई तँ एखन मात्र प्रारम्भ अछि।

विदेहक कारणसँ बहुत गोटे नीक-अधलाह लोक भेटलाह, बेशी नीके। विदेहक कारणसँ हमरा पाठक भेटल, स्नेह भेटल। विदेहक कारणसँ एकटा दवाब रहैत अछि, करबाक दवाब आ रचनाकारकेँ जोड़बाक दवाब।

मुन्नाजी : ब्राह्मण वर्ग अपन हितपूर्ति लेल मैथिलीक दुरुपयोग केलनि वा मैथिलीकेँ गरोसि गेला। गएर ब्राह्मण वर्ग निङ्केस जकाँ टारि पलथी मारने रहला, एकर की कारण, ऐ सँ मैथिलीकेँ कतऽधरि लाभ वा हानि भेलै?

गजेन्द्र ठाकुर : मैथिलीक दुरूपयोग वा कोनो भाषाक दुरुपयोग कोना सम्भव अछि? ई तखने सम्भव अछि जखन लोकक आर्थिक दशा तेहन होत जे ओ भोजन लेल झखैत हुअए वा सरकार ओकर शिक्षा-व्यावस्थामे दोसर भाषा घोसिया दै, भारतमे हिन्दी आ नेपालमे नेपाली घोसियाओल गेल। ब्राह्मण वा कायस्थ-वर्ग शिक्षामे आगाँ छलाह (देशक दोसर भागक ब्राह्मण वा कायस्थसँ हम तुलना नै कऽ रहल छी- हुनका सभसँ तँ ई लोकनि बड्ड पछुआएल छथि।), माने

मिथिलाक दोसर जातिसँ। से साहित्यमे सेहो यएह सभ अएलाह। ने मिथिलामे राममोहन राय भेलाह जे विधवा लेल लड़ितथि, गेब्रियल गार्सिया मार्क्विस भेलथि जे 'ए हन्ड्रेड ईयर्स ऑफ सोलिट्यूड' लिखबा लेल कार बेचि देलथिन जे ओहि पाइसँ परिवारक साल भरिक खर्चा चलतन्हि आ ओहि अवधिमे ओ ई उपन्यास लिखताह! मुदा ई दुनू गप पूर्णतः सत्य नै अछि, बहुत गोटे अपन सर्वस्व मैथिली लेल झोकलन्हि, मुदा गुटबन्दीक कारण हुनकर चर्चा नै भेल। कतेक गोटे विवादमे घसीटल गेलाह तँ ओ तथाकथित पतनुकान लऽ लेलन्हि। पंजीमे कमसँ कम तीनटा सर्वस्वदाताक विवरण अछि जाहिमे एक गोटे अपन जीवनमे तीन बेर स्र्वस्व दान केलन्हि। पंजीमे अन्तर्जातीय विवाहक विवरण अछि आ से ब्राह्मण आ दलितक बीच। तस्कर केशव राजाक निहुछल लड़कीसँ विवाह केलन्हि, लक्ष्मीश्वर सिंह किछु नै कऽ सकलाह। मुदा ई सभ दू साल पहिने धरि अभिलेखित नै भेल। 1942 ई.क आन्दोलनमे पंचानन झा आ पुरन मंडल झंझारपुरमे संगहि बलिदान देलन्हि मुदा अभिलेखित नै भेल, आब 2009 ई. मे जगदीश प्रसाद मंडल ओहि घटनाकेँ अपन पछताबा कथाक आधार बनेलन्हि। गएर ब्राह्मण वर्गक जगदीश प्रसाद मंडल/ राजदेव मंडल/बेचन ठाकुर/महेन्द्र नारायण राममेघन प्रसाद/ बिलट पासवान 'विहंगम', हिनका सभक अतिरिक्त जे साहित्यकार छथि ओहिमेसँ बेसी वएह आगाँ बढ़ि सकलाह जे टोना-टापर जैनै छथि आ ब्राह्मण-कायस्थ मध्य सेहो बेशीकाल टोना-टापर जानैबला आगाँ बढ़लाह, से ककरा दोष देबै। ने पाठक रहै, जे जेबीसँ खर्चा केलन्हि से विवादित कएल गेलाह, जे प्रतिभावान रहथि से हतोत्साहित कएल गेलाह आ जे टोना-टापर जानैबला रहथि से आगाँ बढ़लाह। कारण सेहो स्पष्ट अछि जे मैथिलीमे पाठक नै छल तँ ई भेल आ ईहो सत्य जे एहि सभ कारणसँ पाठक नै बढ़ल, चिकन एन्ड एग प्रोब्लम। गएर ब्राह्मण वर्गक राजनीतिज्ञ बेसी छथि, ओ वोट माँगैले आबै छथि मुदा जितलाक बाद मैथिली नै बजताह जे हम अहाँक भाषा नै बाजै छी, से हमरासँ दूर रहू। विदेहक आगमन एही सभ पक्षकेँ सोझाँमे राइख कऽ भेल, मैथिलीकेँ देल स्लो-प्वाइजनिंगक प्रभाव दूर भेल अछि।

मुन्नाजी : मैथिली विशेष कऽ गएर ब्राह्मणेक मूल छल। ब्राह्मणक मूल भाषा तँ संस्कृत रहल, बोली चालीमे सभक भाषा मैथिलीये रहल। मुदा ब्राह्मण लोकनि हुनका सभकेँ पूर्णतः दूर रखलनि। अहाँ हुनका सभकेँ जोड़ि लेलौं? कोना?

गजेन्द्र ठाकुर : मानुषीमिह संस्कृताम् ई उक्ति हनुमान जीक छन्हि जे सीतामैयाक नैहरक भाषा मानुषीमे हुनकासँ अशोक वाटिकामे गप केलन्हि (वाल्मिकि रामायण-सुन्दरकाण्ड)। मैथिलीमे बहुत रास शब्द अछि जे वैदिक संस्कृतमे अछि मुदा लौकिक संस्कृतमे नै, से मैथिल खास कऽ गएर ब्राह्मण वर्ग वैदिक संस्कृतक बेशी लग छथि तँ पढ़ल लिखल मैथिल (ब्राह्मण आ कायस्थ) लौकिक संस्कृतक। मुदा लोक कंठमे बसल साहित्य गएर ब्राह्मण वर्गमे अछि, उमेश मंडल 12-14 जातिक एहेन साहित्यक संकलन केने छथि तँ महेन्द्र नारायण राम/विश्वेश्वर मिश्र/ मणिपद्मक पोथी सेहो छपल छन्हि। ई अवश्य जे विदेहक अएबासँ पूर्व एकभाग स्थिति छल नब्बै प्रतिशत ब्राह्मण आ 10 प्रतिशत कायस्थ साहित्यकार छलाह। अन्य नगण्ये छलाह, सभक मध्य भरोस उत्पन्न कऽ सकल ताहिमे ओ सभ गोटे शामिल छथि जे विभिन्न कालावधिमे विदेहसँ जुड़ैत गेलाह आ एकरा शक्ति प्रदान कएलन्हि। पहिने ज्योतिजी, विद्यानन्द झा, नागेन्दर कुमार झा, रश्मि रेखा सिन्हा, उमेश मंडल, शिव कुमार झा आ मनोज कुमार कर्ण, जया वर्मा आ राजीव कुमार वर्मा विदेहसँ जुड़लाह। हमरा आ सम्पादककेँ मानसिक रूपेँ प्रतारित करबाक घृणित सेहो किछु टोना-टापर साहित्यकारक इशारापर कएल गेल, मुदा एहिसँ हमरा सभकेँ झमेलासँ बाहर अएबाक कला सिखबाक अवसर भेटल। मुदा उत्साहवर्धन करएबलाक तुलनामे ई सभ बड्ड कम मात्रामे रहथि, राखू पाँच प्रतिशत। हम सभ लोककेँ जोड़लहुँ आ ओ सभ जुड़लाह, दुनू सत्य अछि। हमर ई प्रयास एहि अभाव-भाषाणकेँ खतम कऽ देलक- यौ बड्ड प्रयास केने छिऐ, नै सम्भव छै यौ... आदि...आदि; आ एहि अभाव भाषणमे ब्राह्मण-कायस्थ तँ शामिल रहथि, गएर ब्राह्मण-कायस्थ साहित्यकार आ राजनीतिज्ञ सेहो शामिल रहथि, आ ओ सभ बेशी दोषी छथि। दोसर आबि जएताह तँ हमर चलती कम भऽ जाएत, माने प्रतियोगितासँ दूर भागब, ई जेना ब्राह्मण-कायस्थ साहित्यकार-दुनुक मनोभावना बनि गेल छल; ओना एहिमे अपवादो सभ छथि।

मुन्नाजी : अहाँ ब्राह्मण वर्गसँ रहि पुरना बभनौटी (ब्राह्मणवाद) सँ अलग बाभनवादर्स दुखी वा कतिआएल रचनाकार, सभ जाति-धर्मक नव-पुरान रचनाकारकेँ एक मंचपर एक संग जगजियार कऽ रहलौंहँ, एकरा पाछाँ की मानसिकता वा रहस्य अछि?

गजेन्द्र ठाकुर : मैट्रिकक सिलेबसमे पढ़ै छलहुँ जे सभ जातिक मैथिलीभाषी मैथिल छथि, मुदा वास्तविक धरातलपर, विद्यापति पर्व आदिमे ई मैथिल विशेषण मुख्यतया दू जातिक भऽ जाइत छल। माने कथनी आ करणीक अन्तर। हमर पालन-पोषण आ शिक्षा-दीक्षामे कथनी आ करणीक अन्तर नै रहल, प्रायः सएह होएत। दोसर बढ़त तँ अहींक साहित्य ने मजगूत होएत, बेशी लोक आएत तखन ने नीक लोक बेशी आएत। जातिक नामपर वा सर-सम्बन्धीक नामपर हमर सहयोग क्यों मँगबाक हिम्मत नै केने छथि, कमसँ कम ओ लोकनि जे हमर पिता आ हमरा चिन्हैत छथि। ने कोनो चोरकेँ हम जातिक नामपर बकसैबला छियन्हि। आ जे ओहि प्रवृत्तिक छथि से सभ जाति-धर्मक लोक एकट्ठा भऽ जाथु जाहिसँ पीठमे छूरा भोंकेबासँ तँ हमरा सभ बचि जाएब। आ हमर मानसिकताक लोक जे एक मंचपर एक संग जगजियार भऽ रहल छथि तँ हम कहब जे हमर काज हुनका सभमे प्रति विश्वास देने छन्हि से हुनका सभकेँ धन्यवाद।

मुन्नाजी : कोनो एहेन विशेष क्रियाकलाप वा घटना जे अहाँकेँ बाभनक वा बभनौटीक प्रति आक्रोश आ गएर बाभनक प्रति लगाव

हमर ई प्रयास एहि अभाव-भाषणकेँ खतम कऽ देलकन्यौ बड्ड प्रयास केने छिऐ, नै सम्भव छै यौ... आदि...आदि; आ एहि अभाव भाषणमे ब्राह्मण-कायस्थ तँ शामिल रहथि, गएर ब्राह्मण-कायस्थ साहित्यकार आ राजनीतिज्ञ सेहो शामिल रहथि, आ ओ सभ बेशी दोषी छथि। दोसर आबि जाएताह तँ हमर चलती कम भऽ जाएत, माने प्रतियोगितासँ दूर भागब, ई जेना ब्राह्मण-कायस्थ साहित्यकार-दुनुक मनोभावना बनि गेल छल; ओना एहिमे अपवादो सभ छथि।

बढ़ेलक।

गजेन्द्र ठाकुर : कोनो एक घटनाक आवश्यकता कत्तऽ छै। दरभंगाक दोकानमे मैट्रिकक सिलेबसक गाइडक अतिरिक्त कोनो मैथिली पोथी नै भेटै छलै, कोनो एक साहित्यकारक मुँहसँ दोसराकप्रति आदर वचन नै निकलै छलै, कियो अतिथि सम्पादक बनि अहाँक रचनाक चोरि केलक तँ ओकरा अहाँ पकड़ी तँ ताहिपर एकमत नै होइ जाइ छलाह उन्टे दोषीकेँ पीठ ठोकै जाइत छलाह, शब्दाश: चोरि केनिहारक पीठ ठोकब। विदेहक आगमनक बाद एहि सभमे परिवर्तन आएल, एकरा के नकारि सकत।

सत्यक प्रति लगाव रहल आ अन्यायक प्रति विरोध तँ सभ किछु अनायासे आबि जाएत, कोनो विशेष क्रियाकलाप वा घटनाक आवश्यकता नै पड़त, कोनो घटनासँ उठेबाक आवश्यकता नै पड़त।

मुन्नाजी : अहाँक मैथिली पत्रकारिताकेँ दूरि हेबासँ बचेबाक वा सत्यक खोजक कारणेँ गारि-गंजनक पछातियो एक स्टंपपर अड़ल रहबाक दृढ़ संकल्प कतेक दिन धरि निमहता होएत?

गजेन्द्र ठाकुर : कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक समर्पणमे हम लिखने रही-

पिताक सत्यकेँ लिबैत देखेन रही स्थितप्रज्ञतामे

तहिये बुझये बुझने रही जे

त्याग नहि कएल होएत

रस्ता ई अछि जे जिदियाहवला।

आ ई पढ़ि गामिक बहुत गोटे कानए लागल छलाह, हुनका सभकेँ बुझल, मुदा अहाँकेँ हम यएह कहि सकै छी जे एकर निर्धारण भविष्य करत, अपन विषयमे बढ़ा-चढ़ा कऽ की कहू।

मुन्नाजी : किछु सम्पादक- ''अहाँ हमर छापू वा हमरापर लिखू आ हम अहाँक छापब'' बला नियतिपर छथि। ओ किछु चुनल-बीछल लोककेँ छपै छथि वा परिवारवादमे लेपटाए रहै छथि। मुदा अहाँ ऐ सँ इतर स्थान दै छियैक-ई की सोच जाहिर करैए?

गजेन्द्र ठाकुर : मैथिलीमे समस्या रहे जे पाठक नै रहै, तँ ओना होइ छलै। हम सभा सभकेँ स्थान दैत छिऐ तँ एहिसँ पाठक बढ़ल, मैथिली मृत होएबासँ बचि गेल। आ आब दोसरो पत्रिका सभ सभकेँ स्थान देनाइ शुरू कऽ देने छथि- कारण अभाव-भाषण जेना लेखके नै छै, दोसर जाति लिखिते नै छै, नव लोक मैथिलीमे आबिये नै रहल छै, ई सभ मिथ विदेह द्वारा ध्वस्त कऽ देल गेल छै।

मुन्नाजी : मैथिलक अतिक्रमणसँ अहूँ अपन विचार बदलि ओहिना रहरहाम तँ नै भऽ जाएब, जेना मैथिली पत्रकारितामे आइ धरि चलि आबि रहलैए?

गजेन्द्र ठाकुर : मैथिलक मानसिक अतिक्रमण हमरापर होएत कोना? प्रतियोगितासँ, मेहनतिसँ हम दूर नै भागै छी। मैथिली किएक, सभ भाषाक पत्रकारितामे/ विश्वविद्यालय शिक्षणमे भाषा विषयमे कम मार्क्समे नामांकन होइ छै, तँ एहन अतिक्रमण बेशी होइ छै। मुदा विदेहक आगमनक बाद दोसर विषयक जेना इतिहास, भूगोल, कम्प्यूटर साइन्स, चार्टर्ड एकाउन्टेसी, डॉक्टर आदिक संख्या मैथिली साहित्यमे बढ़ल अछि; साहित्य विषयमे सेहो प्रतिभावान लोक सभ छथि, सेहो सोझाँ आएल छथि। हमर मृत्युक बादो ई रक्तबीज सभ हमर उद्देश्यकेँ आगाँ बढ़बैत रहताह।

मुन्नाजी : ठाम-ठीम ई चर्च उठैत अछि जे अहाँ आ श्रुति प्रकाशन, व्यक्ति विशेषकेँ छपबामे अपन आर्थिक-मानसिक ऊर्जाक बेशी अंश लगा रहल छी, ताहि हेतु अहाँ की कहब?

गजेन्द्र ठाकुर : विदेहमे आइ धरि ई नै भेल अछि। हमर ''प्रोविडेन्ट फन्ड आ एरियरक पाइ'' आ माँक पेंशनक सीमित संसाधनक बावजूद जे मानसिक संसाधन अछि, जेना बुक जिडाइन, साइट-डिजाइन, टाइपिंग ई सभ विदेहक सम्पादक मंडल द्वारा मुफ्त उपलब्ध कराओल जाइत अछि। कोनो मैथिलीक पत्रिका वा संस्था वेबसाइट निर्माण, पत्रिकाक रजिस्ट्रेशन आदि लेल विदेहसँ सम्पर्क केने होथि आ से हुनका नै भेल अछि। श्रुति प्रकाशनक मैथिली पोथीक लेल सेहो हम कैमरा-रेडी-कॉपी धरि तकनीकी सहायता दैत छियन्हि। हमर देल सलाहपर श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जीक आठ टा किताब आ स्व. राधाकृष्ण चौधरी जीक इतिहास छापल जा रहल अछि/छापल गेल अछि, ई सभटा पोथी विदेह आर्काइवपर https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/ मुफ्त डाउनलोड लेल उपलब्ध छै, एकरा सभकेँ अहाँ पढू आ स्वयं निर्णय करू जे गुणवत्ताक आधारपर ई सभ छपबा योग्य अछि वा एकर छपबाक निर्णय व्यक्ति विशेषक आधार पर कएल गेल छै। बहुत रास हमर सलाह प्रकाशक द्वारा नहियो मानल गेल, सभ संस्थाक आर्थिक संसाधनक सीमा छै। श्री

जगदीश प्रसाद मण्डल आ स्व. राधाकृष्ण चौधरी जीक पाण्डुलिपि कतेको सरकारी मैथिली संस्थासण जुड़ल पुरोधा लग गेलन्हि मुदा ओ लोकनि अपन पोथी छपेबाक जोगारमे छलथि, छपबेबो केलन्हि, भने ओकर कोनो ग्राहक/पाठक नै होइ।

मुदा एते धरि होएबाक चाही जे गुणवत्ता आधारित पोथी सभक हजारक डाउनलोडक संग प्रिंट वर्सनक पाइ दऽ कऽ किननिहार संख्या देखि ई मैथिली सरकारी-गएर सरकारी संस्था सभ आब अपन विचार बदलथि। कारण आब हम मात्र विदेहपर केन्द्रित भऽ काज कऽ रहल छी आ प्रकाशक सेहो सीमित मात्रामे पोथी प्रकाशित करबामे समर्थ छथि तें ई लोकनि आगाँ आबथि तँ विदेह आर्काइवमें अमूल्य आ ढेर रास अद्भुत रचना/रचनाकार उपलब्ध अछि/छथि। कैमरा रेडी कॉपी धरि बनेबाक काज हम मुफ्तमे कऽ देबन्हि।

मुन्नाजी : अहाँसँ एकटा व्यक्तिगत जीवनक पहलूसँ जुड़ल प्रश्न पूछब जे अहाँ नोकरीक संग सभसँ नियमित सम्पर्क, नियमित रचनारत रहि नियमित पत्रिकाक संचालनक अतिरिक्त पारिवारिक समन्वयन कोना कऽ पबैत छी ?

गजेन्द्र ठाकुर : पत्नी प्रीति ठाकुरक सहयोग छन्हि, ओहो मैथिली चित्रकथाक चित्रकारीमे लागल रहै छथि, बच्चो सभ, ओम आ आस्था, शान्त प्रकृतिक छथि, से अतिरिक्त सुविधा प्राप्त अछि। विदेहक दूर-दूर प्रान्त देशमे बसल सम्पादक मंडलक सहयोग छन्हि, जे कतेक मेहनति करै छथि आ हुनका सभसँ कम मेहनति जे हम करी तँ हम कथीक सम्पादक। कोनो बौस्तु लेल हृदयमे अग्नि रहत तँ सभटा समन्वय भऽ जाएत।

मुन्नाजी : एतेक काज केलाक पछातियो एखन धरि अहाँक कोनो मूल्यांकन (व्यक्तित्व आ कृतित्व दुनूक) नै भऽ सकल। अइ सँ अपनाकेँ प्रभावित तँ नै पबै छी ?

गजेन्द्र ठाकुर : नै, एहिसँ हम सहमत नै छी। हमरा प्राप्त ई-पत्र आ चिट्ठी सभ, पाठकक प्रशंसापत्र, पाण्डुलिपि सभक परिक्षणक हमर योजनाक सफलता आ भाषा-विज्ञानक हमर शोध ई सभ हमरा संतुष्टि देने अछि। खराब लोक सेहो अहाँकेँ नीक कहत से कोना सम्भव ? से हमरा चाहबो नै करी। व्यक्तित्व आ कृतित्व दुनूक मूल्यांकन मैथिली की आनो भाषामे मृत्युक बादे होइ छै।

मन ऐसो निर्मल भयो जैसे गंगा नीर।
पीछे पीछे हरि फिरें कहत कबीर कबीर॥
(कबीर)

(मोन एहन निर्मल भऽ गेल जेना ई गंगाक जल अछि। पाछाँ-पाछाँ भगवान कबीर-कबीर कहैत पछोर धेने। कबीर)

मुन्नाजी : मैथिलीमे समीक्षाक स्तर की अछि, समीक्षाक वास्तविक प्रतिरूप की अछि, आ ओ मैथिलीमे कत्तऽ अछि ?

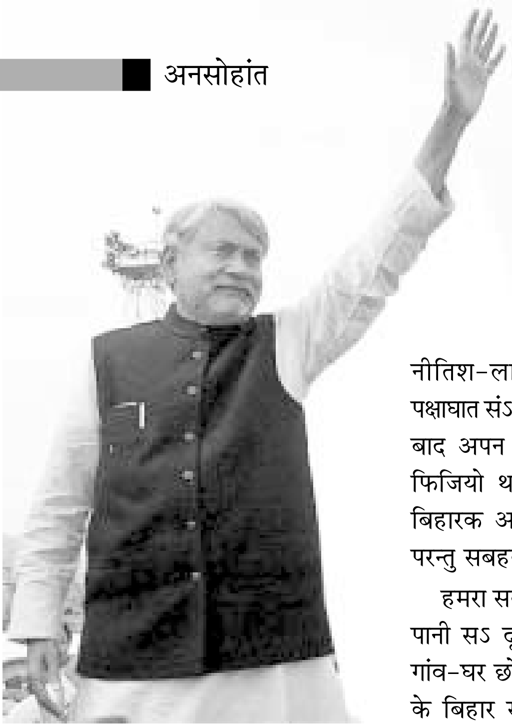
गजेन्द्र ठाकुर : मैथिली समीक्षाक समक्ष वास्तविक समस्या रहै। पहिल रहै पाठकक संख्या शून्य रहब आ दोसर रहै लेखक आ समीक्षकक एक दोसराक सर-सम्बन्धी/दोस-महीम होएब। जे पुरनका समीक्षक लोकनिकेँ अपन अस्तित्व बचेबाक छन्हि आ दुर्गानन्द मंडल, शिव कुमार झा, राजदेव मंडल, धीरेन्द्र कुमार आ मारते रास राक्षसी प्रतिभा सम्पन्न समीक्षकसँ टक्कर लेबाक छन्हि तँ बिना पढ़ने समीक्षा लिखबाक आह-बाह आकि छी-छी बला ध्रुवक समीक्षा छोड़ए पड़तन्हि।

मुन्नाजी : अन्तमे अहाँ अपन रचनाकर्मीकेँ कतऽ ठाढ़ देखै छी, हुनक दशा-विशाक मार्दे की कहब ?

गजेन्द्र ठाकुर : आश्चर्य लगैत अछि जे कत्तऽ ई लोकनि नुकाएल छलाह, सभ अपन सामाजिक-पारिवारिक जिम्मेदारी निमाहैत मैथिलीक लेल जतेक कऽ रहल छथि से आन भाषामे सम्भव नै छै, किछु अपवादो छथि आ से तँ रहबे करताह।

मुन्नाजी : अपनेक स्वतंत्र विचार आ एतेक समय देबा लेल बहुत-बहुत धन्यावाद।

❋ ❋ ❋



बिहारक चुनावी दंगल मे विकासक जीत

प्रेमकान्त चौधरी

बिहारक चुनावी परिणाम हमरा बुझने अप्रत्याशित नहिं भेल। लोक बढ़ि-चढ़ि कऽ वोट देल आ परिणाम आयल। एहन परिणाम जकर उम्मीद नीतिश से हो नहिं केने छलाह आ भाजपा से हो। बिना विपक्षक सरकार।

जखन - लालू -राबड़ीक सरकार छल तऽ एकटा बात पर लोक चुटकी लैथ छल कि - एक बेर जापानक प्रधानमंत्री बिहार ऐलाह आ लालू सऽ कहलैक कि ''हमरा आहाँ पाँच वर्षक लेल बिहार दऽ दिय हम बिहार कैं जापान बना देव'' ताहि पर लालू कहने छलाह हमरा आहाँ जापान दियेअ हम ओकरा बिहार बना दैबैक।''

जे लोकनि प्रकाश झा क' सिनेमा देखने होयब तऽ ई बात अवश्य बुझना गेल होयत की 'राजनीति' कि थिकै? ओनाहूँ 'राजनीति' शब्द तऽ बड़ सुन्दर स्वस्थ वा आकर्षक अछि मुदा अहि के भीतर मे छुपल अछि संसार। ओहन संसार जाहि मे क्रिकेट खेल जकाँ अनिश्चितता बनल रहैत अछि। श्रेष्ठ खिलाड़ी सेहो जीरो पर आऊट? कैच आऊट? तऽ कखनो रन आऊट? यदि अम्पायर के नहिं सोहेलै तऽ 'पगबाधा' आऊट? जेना देशक प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह आ कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के उदाहरण स्वरूप लेल जा सकैत अछि। 'बिहारक चुनावी दंगल मे नीतिश-लालू रामविलास के संग-संग पक्षाघात संऽ छत-विछत कांग्रेस बहुत बरखक बाद अपन दवा-दारू करवा रहल अछि। फिजियो थरापी करवा रहल अछि ताकि बिहारक आबोहवा मे शरीर स्वास्थ होय। परन्तु सबहक हवा निकली गेल।

हमरा सब जहाँ जे लोकनि अप्पन माँटी-पानी सऽ दूर रहैत छी। रोजी-रोटीक लेल गांव-घर छोड़ि परदेशी भेलौह ओहन लोक के बिहार सरकार सऽ की चाही? आ जे लोकनि एखनोधरि गाँव मे रहि रहल छथि तिनका की चाही? मूलभूत बात की छैक। पहिने लोकतंत्र मे सरकार समाजोपयोगी कामे बेसी करैत छल जेनाकि - शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, बिजुली-पाईन वाऽ जनकल्याणक योजना। आई-काल्हि ई प्राथमिकता समय के संगे सग बदलि रहल छैक। मुदा कतबों निजीकरण हेतैक तैयो बिहारक सनक प्रदेश मे सरकारी योजनाक आवश्यकता रहतैक, कारण एखनो शिक्षा, सड़क बिजुली-पाइन वगैरह बिना सरकारक केने नहि होयत। ताहि कारणे सरकारक योजना आ कार्यान्वयन आवश्यक अछि?

लालू-राबड़ी के 15 वर्षक बाद पछिला 5 वर्ष मे जे काज नीतिश सरकार केलक से जनताक समक्ष अछि लोक बुझैत छैक 'सुशासन' क गुण-दोष? यदि हमरा लोकनि कनि जाति-पाति सऽ उपर उठि तऽ निश्चित रूपे नीतिश सरकार के बिहार मे ऐबाक छल आ आविगेल।

बिहार मे विकास भेलैक अछि अहि बात के नकारल नहि जा सकैत अछि आ बिहार सऽ बाहर रहैवाला लोकनिक प्रतिष्ठा से हो बढ़ल अछि। कियाकि लालू राबड़ीक बिहार मे जें अपगुण छलैक आ हम परदेशी, एकर भुक्तभोगी रहल छी? परदेश मे बिहारी शब्द 'गारिक' द्योतक छल। देशक कोनो परदेश मे बिहारी के स्थानीय लोक कूकूर बुझैत छलैक। सबाल रोजी-रोटीक छल। ताहि कारणे लोक अपशब्द सुनियो कऽ ओहि परदेश मे डटल रहल। ककरो गारि देबाक अछि वा हीन भावना सऽ देखबाक अछि तऽ ओकरा कहल जाईत छल - 'यै बिहारी' अलग-अलग परदेश मे अलग-अलग शब्दक प्रयोग होइत रहल अछि।

लेकिन पछिला पाँच वर्ष मे दोसर परदेश मे रहैवाला लोकनिक मान-प्रतिष्ठा बढ़ल अछि। हमरा सनक लोक एकरा विकासक दर्जा देतैक। हमर गांव-बिनौली दड़िभंगा जिला अन्तर्गत अछि। गांव जेवाक लेल पटना सऽ अप्पन गाड़ी सऽ पहिने आठ (राजद कालमे) घंटा लगैत छल आब पाँच घंटा लगैत अछि हमरा लेखें ई विकास भेल हम अप्पन गांव मे तीन-आ तीन छह घंटा बेसी बिता सकैत छी। ई हमरा सनक लोकक लेल निश्चित विकास भेल। हमरा बुझने बिहारक आधा जनसंख्या बिहार सऽ बाहर रहैत अछि। बाहर रहै वाला बिहारी के की चाहि वा मिथिलावासी के की चाही? वैह चाही जे हम अप्पनेक समक्ष रखने अछि। मुदा बिहार मे रहै वाला आधा जनसंख्या केऽ सब किछुचाही - शिक्षा, सड़क, बिजुली पाइन स्वास्थ्य, रोजगार नीक जीवन स्तर मान-मर्यादा।

राजनीतिज्ञ अप्पन गिरगिटी चालि छोड़ि कऽ यदि बिहारक विकास मे योगदान करैथ तऽ प्रदेशक भलाई भऽ सकैत अछि। जनताक कल्याण भऽ सकैत अछि गौरवमय बिहारक एकबेर उत्थान भऽ सकैत अछि! परन्तु एकरा लेल समस्त नेताक अप्पन गिरेवान मे झाँकी कऽ देखाबाक आवश्यकता अछि।

बिहार विधानसभा के चुनावी सभामें जतेक शब्दक प्रयोग-लालू राबड़ी, रामविलास पासवान, राहुल गांधी केने छलाह हुनका लोकनि के अप्पन अप्पन जवाब भेट गेलेन्ह। संगहि जनताक उम्मीद पर नव-सरकार काज करैथ से अपेक्षा अछि।



मिशेल ओबामा मिथिलाक 'कोहबर' मे

अमरीकाक' प्रथम महिला मिशेल ओबामा भारत दौरा पर आयल अपन पति बराक ओबामा सँ किछु कालक लेल कन्नी काटिक मिथिलाक कोहबर पहुंचली।राजधानी दिल्ली स्थित राष्ट्रीय हस्तशिल्प आ संग्रहालय में मिथिलाक कोहबर आ ओकर चित्रकारी सँ अभिभूत मिशेल ओबामा किछु पल कोहबर में बितौली। कोहबर यानी ब्रायडल चैम्बर मिशेल के लेल अद्‌भुत छल। मिथिला पेंटिंग के मशहूर कलाकार गंगा देवी सँ मधुबनी पेंटिंग आ ओकर दर्शन जानैक लेल मिशेल काफी जिज्ञासा देखो उलीह। मधुबनी पेंटिंग के एक दर्जन सँ ज्यादा कलाकृति खरीद्लीह आ अहि कलाकृति के अमूल्य धरोहर बतोलैन्ह। ग्रामीण हस्तशिल्प आ भारतीय कलाकार शानदार प्रदर्शनी के मिशेल ओबामा भारतक प्राचीन संस्कृति क' अद्‌भुत झांकी बतौलैन्ह।

मिशेल ओबामाक मिथिला पेंटिंग के लेल जिज्ञासा आ उद्‌गार अहि प्राचीन पारंपरिक लोककलाकार सम्मान छी, लेकिन सवाल ई अछि जे ई उद्‌गार आ सम्मान मैथिल समुदाय में अपन धरोहर आ कला के लेल मौजूद अछि ? राष्ट्रीय पुरष्कार सँ सम्मानित शशिकला देवी कहैत छैथ जे मिथिला सँ भेल पलायन अहि कला क आभा के धूमिल केलक अछि। नवतुरिया में अहि कलाकार लेल नहि त कोनो सम्मान अछि आ नहि कोनो जिज्ञासा। मधुबनी पेंटिंग अपन ख्याति भले ही मिथिला सँ बाहर समस्त देश में,जर्मनी आ जापान में आ यूरोपीय देश में हाशिल केलक अछि, लेकिन आई अहि कला सँ मिथिलानी में साफ वितृष्णा देखल जा सकैत अछि। शशिकला जी कहैत छैथ जे मिथिलाक ई अद्वितीय कला एक पीढ़ी सँ दोसर पीढ़ी में निरंतर प्रवाहमान रहल अछि एकरा लेल कहियो ट्रेनिंग के जरूरत नहि पड़ल, लेकिन आई एकर प्रवाह रुकि गेल अछि।

मिथिलाक सम्मानीय कलाकारक सूचि में जगदम्बा देवी,सीता देवी,गंगा देवी,गोदावरी देवी,शशिकला देवी,हीरा मिश्राक नाम अबैत अबैत ई सूचि एक-दू और नाम पर खतम भ' जायत अछि या फेर हमरा सनक कम पढ़ल लिखल लोकक जानकारी में नहि अछि। लेकिन सवाल ई दुरुस्त अछि जे अहि पुरान पीढ़ी क' बाद नव पीढ़ी क लोकक नाम अहि सूचि में किएक नहि दर्ज होयत अछि ? जेना लोक कहैत छैथ जे मधुबनी पेंटिंग के आई विस्तृत बाजार अछि तखन अहि कला सँ लोकक जुड़ाव किएक कम अछि ? की कलाकर के उचित पारिश्रमिक नहि भेटैत अछि ? मिथिला पेंटिंग के खरीद बिक्री में अनेको संस्था लागल छैथ, लेकिन सुदूर ग्रामीण इलाका में अहि कलाकार लेल कोनो समर्पित केंद्रक नाम सुनबा में कम अबैत अछि।

खनन अभियंता रामकुमार दास सेवा सँ निवृत्त भेलाक बाद क्योटी में मिथिला पेंटिंग एक भव्य केंद्र स्थापित केलैंह अछि। मिथिला में महिला सशक्तिकरण के दिशा में खास पहल अछि, मिथिला में मिथिलानी के बीच रोजगार के अवसर बढाक सम्पूर्ण समाज के गरीबी के दलदल सँ बाहर निकालल जा सकैत अछि, लेकिन अहि के लेल गैर सरकारी संगठन के सहयोग सँ बेहतर अछि सम्पूर्ण मिथिला समाज के अहि पहल में जोड़ल जाय।

स्मृति शेष

मैथिलीक सपूत चुनचुन मिश्र

एकटा आधा बाहि वाला कुर्ता, दू टा गन्जी, एकटा गमछा आ एकटा धोती बस सबटा एकटा थैला मे। कोनो लाम काफ नहि। कोनो रिजर्वेशन के चिन्ता नहि। ककरो डर नहि। कानपुर, बम्बई, दिल्ली, हैदराबाद आ कतय नहि, चुनचुन बाबू सबठाम।

1942 के क्रान्तिगर्भसँ जनमल चुनचुन बाबू आजीवन संघर्ष करैत रहलाह। डा. जयकांत मिश्र जी जेका चुनचुन बाबू सेहो 16-11-2010 के मिथिला राज्यक सपना लेने स्वर्गीय भयगेलाह।

चुनचुन बाबू स हमर पहिल भेंट 2005 के जयपुर सम्मेलन में भेल छल। तहिया सँ ओ हमरा लेल ओ आदरणीय आ अनुकरणीय मैथिली सेवी रहलाह। ओ किछु दिन सँ अस्वस्थ रहैत छलाह। 16-10-2010 क बेनीपट्टी क्षेत्र जयबा काल हुनकर अन्तिम दर्शण भेल आ तखनहु ओ स्वस्थ नहि छलाह मुदा कहलनि जे 2012 मे मिथिला राज्यक लेल पूरा दरभंगा मधुबनी जाम कय देबैक। ओ कहलनि जे दिसम्बर मे जन्तर मन्तर पर धरना पर बैसवाक लेल आबि रहल छी। पुन: भेंट होयत।

आन्दोलन मैथिली के अष्ट्म सुचीक लेल हो, मिथिला राज्य के लेल हो, या सौराठ सभाक उत्थान के लेल चुनचुन बाबू के अगुआ बिना कोना एखन धरि सम्भव नहि भेल छल। दिल्ली मे हुनका देखितहि आई बी ओ दिल्ली पुलीस सब कहनि, आ गये मिथिला राज्य वाले। 22-12-2010 क जन्तर मन्तर पर एकटा पुलिस कहलकनि बाबा आप चौराहे से पीछे जा कर धरना पर बैठिये, यहाँ जाम लग जयेगा। चुनचुन बाबू कहल्थिन कोनो हम पहुनाई करय आयल छियैक, हम त धर्ना पर अयल छियौक, बैसबौ त एहिठाम, हिम्मत छौ त पकड़ी क हमरा जहल में दय दे। ओहि समय मात्र 15-20 आदमी जमा भेल छलाह।

हमरा नहि बूझल छल जे चुनचुन बाबू सँ पुन: भेंट नहि होयत। परन्तु एहि मैथिलीक सपूत के हम आजन्म नमन करैत रहब आ हुनकर मिथिला राज्यक सपना पुरा करब। माँ मैथिली अहाँके शान्ति दैथि चुनचुन बाबू।

– **कृपा नन्द झा** , *अंतर्राष्ट्रीय मैथिली परिषद*

प्रायश्चितक क्षण

1952 सँ एखन धरि मिथिलाक कोनो समस्या,कोनो आकांक्षा प्रखर रूपें चुनावी मुद्दा बनि नहि उभरि सकल अछि। अशिक्षा, निजी स्वार्थ, जातिगत द्वेष आदि एकर प्रमुख कारण मानल जा सकैछ। एखन धरि मुख्यत: दलगत पूर्वाग्रह, जाति-पाति, व्यक्तिगत सम्बन्ध आ लाभ, दबंगइक दबाव, स्त्री उम्मीदवार केर देहक आकर्षण आदिक प्रभाव वा विकल्पक अभाव मे मतदान कयल जाइत रहल छैक। विकासक मामला मे अहि क्षेत्रक उपेक्षाक लेल अहि तरहक प्रवृत्ति सबसँ बेसी जिम्मेदार अछि । अहू से बेसी दुर्भाग्यपूर्ण थिक अहि क्षेत्र मे, विकासक काज आ आकांक्षा पूर करबाक प्रयास करय वाला व्यक्ति आ दल केर घनघोर उपेक्षा। चिर-प्रतीक्षाक उपरांत मैथिलीक अष्टम अनुसूची मे प्रवेश आ कोसीक पूब आ पच्छिम मे बंटल मिथिला के जोड़बाक महत्वाकांक्षी योजना- कोसी रेल सेतुक निर्माण लेल स्वीकृति देबय वाला गठबंधन सरकारक अहिठामक चुनाव मे चित बज खसब, एकर उदाहरण थिक। अहि तरहक अनुभव सँ नेता सबहक अकर्मण्य चरित्र बहुत बेसी प्रोत्साहित होइत छैक। कोनो क्षेत्रक प्रति ई धारणा जे अहिठाम काज करब नहि करब कोनो मुद्दा नहि थिक ओहि क्षेत्र लेल कतेक घातक भ सकैछ, सहजे अनुमान लगायल जा सकैत अछि। यैह कारण थिक जे मैथिल जनमानसक एकटा मान्य नेता बिहारक मुख्यमंत्री बनलाक बाद उचित अधिकारिणी मैथिली के कात क, उर्दू के द्वितीय राज भाषा घोषित करबाक अक्षम्य कृत्य क पबैत छैथि। समाजवादी आंदोलनक पृष्ठभूमि मे उपजल जातिगत राजनीतिक धुरंधर एकटा गप्पी नेता मैथिली के बी.पी.एस.सी. सँ बाहर करबाक दुस्साहस करैत छैथि। वैह नेता क्षेत्रक एकटा जाति विशेष के मोन भरि गरियाबैत छैथि आ निर्लज्जताक हद देखू जे बदलैत राजनीतिक परिदृश्य मे ओहि जाति के समाजक सबसँ सज्जन जाति कहि आशीर्वाद मांगैत छैथि आ गप्पक राजनीति कतेक प्रभावी भ सकैत से देखा दैत छैथि ।

- कुमार सौरभ

(मैथिल आर मिथिला सँ साभार)



अमेरिका मे धरहराक' जयघोष

मिथिला लोक मे धरहरा गामक चर्चा एक महिना पहिले भेल छल, लेकिन अहि बीच ई गाम फेर चर्चा मे आयल अछि। कन्या भ्रूण हत्या क 'मामला मे देश क'अमूमन हर पैघ आ शहर कलंकित अछि,पंजाब, हरियाणा, दिल्ली सनक विकसित राज्य बेटी के नाम पर अपन क्रूरतम रूप लयक सामने अछि। ओही ठाम बिहार बेटी के सम्मान देयके मामला मे सबसँ आगा अछि..मादा भ्रूण हत्या पर रोक लगेबाक रिकार्ड के लयक बिहार के तारीफ करैत अमरीका के एक पैघ संस्था धरहरा गाम के तारीफ केलैन्ह अछि।

भागलपुर क ' धरहरा नवगछिया गाम ! चारो तरफ हरियाली, रंग विरंगक फूल आ फल स लदल गाछ -वृक्ष, कोयल क मस्त आवाज अहि ठाम ग्लोबल वार्मिंग के चिंता सं आतुर इकोलोजिस्ट के बुद्ध ज्ञान प्रदान कय सकैत अछि। अहि ठामक परंपरा अछि बेटी के जनम पर वृक्ष लगेनाय आवश्यक। ई परंपरा वर्षो सँ चलि रहल अछि। आई गामक हरियाली एकर पहचान अछि। कहिया अहि गाम में कोनो बड़का सरकारी अधिकरी अयलाह से लोक के याद नहीं छैन्ह। लेकिन पिछला दिन मुख्यमंत्री नितीश कुमारक काफिला अहि गाम पहुंचल त छोटका बड़का तमाम अधिकारी के भीड़ अहि ठाम जुटी गेल। गाम क हरियाली देखि सब कियो दंग। स्वयं मुख्यमंत्री अहि चमत्कार सँ हैरान। पुछला पर जवाब भेटल ई हरियाली बेटी क नाम समर्पित अछि। नितीश के बुझल छैन्ह जे हुनकर वन विभाग एतेक कारगर त अछि नहीं जे ग्रामीण के अहि लेल कोनो मदद के आग्रह केने हेतेंह। एक अधिकारी बजलाह 'रीअली धरहरा इज प्रौड आफ मिथिलांचल' धरहरा गाम के एक बच्ची के जनम दिन के उपलक्ष में स्वयं मुख्यमंत्री वृक्ष लागोलेंह। आ बेटी क नाम समर्पित हरियाली सँ भरल अहि गाम के लेल किछु करवाक अस्वासन अहि ठामक लोक के देलखिन्ह। कन्या क लेल धरहरा गाम के लोकक ई भावना देश के अन्य प्रान्त के लेल सेहो आदर्श भ' सकैत अछि। *(साभार -याहू -जागरण)*

समाज क' उपेक्षा सँ मरणासन्न सौराठ सभा



मिथिलाक ई सौराठ सभा कहिओ दुनिया मे विख्यात छल, कारण सामाजिक परंपरा मे दूल्हा यानी वर चुनवाक लेल मेला, लोक के अचंभित करैत छल ..नान्य देव आ तकर बाद राजा हरि सिंह देव ई मे मिथिला मे पंजी प्रथाक शुरुआत केलैन्ह। ई पंजी लिपिबद्ध भेल आ मिथिलाक पंजीक ओही प्रथा के एखन तक सहेजैत रहलाह अछि। आ सभा गाछी अहि परम्परा के मूर्त रूप दैत छल।

पंजी प्रथा के अनुसार माता कूल के कम सँ कम पांच पीढ़ी आ पिता कूल के सात पीढ़ी के रक्त सम्बन्ध होयबाक कारणे ओही सम्बन्धी के बीच विवाह वर्जित अछि। सम गोत्री मे विवाह अदों सँ वर्जित अछि। आधुनिक मेडिकल साइंस अनुवाशिक रोग सँ बचबाक लेल अहि प्रथा के दुरुस्त मानैत अछि। लेकिन हमर ऋषि परंपरा नियम बनौलैंह त' कन्यादान निमित सभा लोगौलेंह। मिथिला मे लगन के समय मे स्थान पर सभा लगाओल जाइत छल। जाहिमे झंझपुर के परतापुर सभा,मधेपुर के समुआर सभा,सहरसा के बनगांव सभा,पुर्णिया के सुखसैना सभा,अररिया के खामग सभा,सीतामढ़ी के ससौला सभा आदि महत्वपूर्ण छल। बाद मे सिर्फ सौराठ सभा क' अस्तित्व बचल रही गेल। सौराठ ग्राम स्थित अहि सभा के दरभंगा महराजक पूर्ण संरक्षण भेटल। खास बात ई छल जे गाम गाम,जिला जिला सँ लोक अहि सभा गाछी मे आबी पंजीक सँ कन्यादान के संबंध मे आज्ञा प्राप्त करैत छलाह।

संवादक अभाव में मैथिल समाज सभा गाछी के वर्षों तक एकटा विकल्प के रूप में स्थापित कैलैन। जाहिमे गाम गामक लोक ओही मेला में जुइट एक दोसरक परिवार क विस्तृत जानकारी लेत छलाह। कन्यादान क उपक्रम में लागल पिता सभा गाछी में बर के खोजवाक उपक्रम में लागल रहैथ त जिनका साल दू साल कन्यादान में विलम्ब रहिन वो ठेकियाबे में लागल रहथि। सिंगल विंडो सिस्टम के आधार पर चट मंगनी पट बियाह यानी पंजीक स लक बाती के सामान सेहे उपलब्ध भै जैत छलैन्ह। आई वो प्रसिद्ध सभा गाछी अपन अस्तित्व के लेल मिथिला वासी के तरफ निही रहल अछि। पंजीक विश्व मोहन चन्द्र मिश्र मानैत छैथ जे अहि दशा के लेल मैथिल समाज जिम्मेदार छथि। अपन शानदार परंपरा क' प्रति हीन भावना मैथिल समाज के अहि सभा गाछी सँ फराक कयलक। लोकक शिकायत छैन्ह जे पढ़ल लिखल लोक आब अहि सभा गाछी के उपेक्षित नजरि सँ देखैत छैथ। सभा गाछी एबाक अर्थ आब अहि सँ लगाओल जाइत छैक जे ओही वर के विवाह कतो नहि भ' रहल छैन्ह। लेकिन हम बिसरी रहल छी जे कन्यादान आई पहिले सँ बेसी जटिल भ' रहल अछि संवाद हीनता के स्थिति आई पहिले सँ बेसी बिकट अछि। रोजी-रोटी आ प्रतिभा पलायन क' बढ़ल तीव्रता में सबस ज्यादा प्रभावित मिथिला अछि। देश कि विदेश में मैथिल समाज अपन विस्तार केलैथ। मैथिल समाज अपन संघर्ष और प्रतिभा स अपना के दुबारा स्थापित केलैथ। लेकिन परिचय आ संवाद के रूप में जहिना स्थिति पांच सौ साल पहिले छल ओहने स्थिति अइयो अछि। हमरा एक दूसरा स परिचय नहीं अछि,एक दोसरा क पारिवारिक जानकारी नहीं अछि। आई गाँव में एकटा साधारण सरकारी नौकरी करे वाला लड़का के पिता दहेज में स लाख रुपया मांग करैत छाथिन त इ बात कहल जा सकैत छैक जे मैथिल समाज में कन्यादान के मामला में विकल्प सिमित छैक,नीक सँ नीक बर के मामला में लोक के जानकारी के अभाव छैक । दहेज सँ अभिशप्त मिथिला में परिचय फैलेवाक एकटा पहल होइवाक चाही। भाषण स दहेज प्रथा खतम नहीं कैल जा सकैत अछि, विकल्प बढ़ा क दहेज प्रथा के हतोत्साहित जरूर कैल जा सकैत अछि। लेकिन मिथिलाक ई प्रसिद्ध सभा गाछी के हाल देखि क' ई बात कहल जा सकैत अछि हमर परंपरा मरणासन्न अछि एकर इलाज के सख्त जरूरत अछि।

सौराठ सभाकेँ बचब परम आवश्यक। प्रश्न अछि जे कोना ? हँ, ई विचारणीय विषय अवश्य अछि।

हमरा अनुसारेँ एहि हेतु अभियानकेर आवश्यकता छैक। परन्तु पुनः एतए प्रश्न उपस्थित होइछ जे अभियान के चलौताह ? हमरा अनुसारेँ एहि हेतु अभियान चलएबाक उत्तरदायित्व जाइत छनि ओहि जनजागरणक कार्यकर्ताकेँ, जेँ मिथिला राज्य हेतु जी-जान अरपने छथि। मिथिला बचत तखनि नेँ मिथिला राज्य। सौराठ सभा मिथिलाक धरोहर छी, जकर जीवन-मरण पर निर्भर करैत छैक मिथिलाक जीवन-मरण। सोचू जेँ सभा बचत तँ टाकाक खेल मरत, एहिसँ समाजकेर कतैक उपक होएतैक ?

तेँ हे मिथिलाक कार्यकर्त्तालोकनि, सौराठकेँ बचएबाक हेतु अग्रसर होउ, एहिमे समाजकेर हितकेर संग-संग सभ मिथिलावासीक हित निहित अछि।

– ***अजीत***



विद्यापतिक पाँचटा गीत

(1)

कुंज भवन सएँ निकसलि रे रोकल गिरिधारी।
एकहि नगर बसु माधव हे जनि करु बटमारी॥
छोड़ कान्हैया मोर आंचर रे फाटत नव सारी।
अपजस होएत जगत भरि हे जानि करिअ उधारी॥
संगक सखि अगुआइलि रे हम एकसरि नारी।
दामिनि आय तुलायति रे एक राति अन्हारी॥
भनहि विद्यापति गाओल रे सुनु गुनमति नारी।
हरिजीक संग कछु डर नहि रे तोंहे परम गमारी॥

(2)

आहे सखि आहे सखि लय जनि जाह।
हम अति बालिक आकुल नाह॥
गोट-गोट सखि सब गेलि बहराय।
बज्र केबाड पहु देलन्हि लगाय॥
ताहि अवसर कर धयलनि कंत।
चीर सम्हइत जिब भेल अंत॥
नहि नहि करिअ नयन ढर नीर।
कांच कमल भमरा झिकझोर॥
जइसे डगमग नलिनिक नीर।
तइसे डगमग धनिक सरीर॥
भन विद्यापति सुनु कविराज।
आगि जारि पुनि आगिक काज॥



(3)

सामरि हे झामरि तोर देह।
कह कह कासँए लायलि नेह॥
निन्दे भरल अछि लोचन तोर।
कोमल बदन कमल रुचि तोर॥
निरस धुसर करु अधर पान।
कोन कुबुधि लुतु मदन-भंडार॥
कोन कुमति कुच नख-खतदेल।
हा-हा सम्भु भागन भेय गेल॥
दमन-लता सम तनु कुसुम।
फूटल बलय टुटल गुमह॥
केस कुसुम तोर सिरक सिन्दूर।
अलक तिलक हे सेहो गेल दूर॥
भनइ विद्यापति रति अवसान।
राजा सिंवसिंह ई रस जान॥

(4)

कि कहब हे सखि रातुक बात।
मानक परल कुबानिक हाथ॥
काच कंचन नहि जानय मूल।
गुंजा रतन करय समतूल॥
जे किछु कभु नहि कला रस जान।



नीर खीर दुहु करय समान॥
तन्हि सएँ कइसन पिरिति रसाल।
बानर-कंठ कि मोतिक माल॥
भनइ विद्यापति एह रस जान।
बानर-मुह कि सोभय पान॥

(5)

आजु दोखिअ सखि बड़ अनमन सन, बदन मलिन भेल तो।
मन्द वचन तोहि कओन कहल अछि, से न कहिअ किअ मो।
आजुक रयनि सखि कठि बितल अछि, कान्ह रभस कर मंदा।
गुण अवगुण पहु एकओ न बुझलनि, राहु गरासल चंदा॥
अधर सुखायल केस अझरायल, घामे तिलक बहि गेला।
बारि विलासिनि केलि न जानथि, भाल अकण उड़ि गेला॥
भनइ विद्यापति सुनु बर यौवति, ताहि कहब किअ बाधे।
जे किछु पहुँ देल आंचर बान्हि लेल, सखि सभ कर उपहासे॥



‘हमही’ टा बुधियार

- पंकज झा

हमरे टा रससिद्ध, शेष रचना असिद्ध छै।
खाँटी हमारे टा कथा, शेष में फेंट-फाँट छै।
हमरे टा सुस्वादु, शेष अकटे-मिसिआ छै।
हमरे मे नवताक घोष, शेष चर्वित - चर्वण छै।
हमरे टा शतरुपा, शेष सब एकरुप छै।
नागर हमरे टा, शेष में ग्राम्य - दोष छै।
मूल्य बोध हमरेटा, शेष सब बालबोध छै।
राजहंस हमहींटा, शेष सब बकोयथा छै।
हमहींटा गुणग्राहक, शेष गोबर गणेश छै।
कोकिल-कण्ठ हमहिंटा, शेष सब काक - कण्ठ छै।
सम्मान्नय हमहिंटा, शेष सब नवसिखुआ छै।
हमरे ई मलिकाना, शेष रैयत-परजा छै।
हम रहिटा ‘सच्चाहीरा’, शेष कोरे-कोरा छै।
हमहिंटा ‘बुधियार’ शेष सब ‘लोढ़ानाथ’ छै।
चौपाड़ि चलए हमरेटा, शेष सब बन्द पडल छै।
चलती तें सर्वाधिक हमरे, शेष भठ्ठा बैसल छै।

ग्यारह गोट कविता

– सत्येन्द्र कुमार झा

(1)
जुनि कहियौ अपना लेल के जीबै छै
अपने लेल सब जीबै छै
अपने लेल जीबैत रहतै,
घूमैत रहतै कालचक्र
हंसैत रहतै काल।
(2)
एकटा घैल भरि गेलै
दोसर घैल भरि गेलै
तेसर,चारिम....
घरक सब पिआस मेटा गेलै
जल तैयो शेष छै
मुदा सुखा गेलै चापाकाल
नुका लेलकै सभ बांचल जल।
(3)
यदि सत्य छै भूखेटा
त' चुप्पे रहू
जुनि बहाउ नोर द्रोपदीक लेल
होमय दिऔ झंझटि
चल' दिऔ गोली
खस' दिऔ लहास
खाइत रहू मलपुआ
विदेशी दारूक संग।
(4)
एकटा हाथ बढ़लै
शंकित भेल ओ
काटि देलकै आंगुर
संगमे राखल चक्कूसं,
आब बढ़ैत प्रत्येक हाथके
ओ चक्कूसं काटैत रहै छै
काटि देलकै ओहो हाथके
जे आशीर्वाद दै लेल बढ़ल छलै ओकरा दिस
ओहि दिन।
(5)
गाम पर एकसर
ओछावन धयने मायक चित्कार
नहि मोन होमय सुनबाक त'
धनतेरसमे कीनल नबका टीवीक
'वॉल्यूम' बढ़ा दिऔ।
(6)
नहि मोन लगैत अछि एत'
सभ किछु उबाऊ
भीड़, ऊंच स्वर-नीच जीवन
कांपैत धरती, भखरल सूर्यक तेज
ओझरायल शीतलता
मोन होइऐ एक बेर
फेर कनिकाल गाम-गाम खेला ली।
(7)
जहिया माय नहि रहै गाममे
गाम शहर जेना लागल छलै
माय घूरि अयलै, गाम घूरि अयलै
मायक संग छाया बनि
चलि रहल छै गाम।
(8)
पेट काटिक क' रिक्शावला
कीनै छै अखबार
विज्ञापनक ऑक्सीजन पर जीवैत अखबारमे
खबरि आ फाटो मे
रिक्शावला अपनाके कतौ नैं पबैत अछि,
फेक दै छै अखबार
अईंठ चुनैत एकटा छौड़ा अखबार उठा लैत छै
आ फेकल बासि रोटी के बान्हि लै छै ओहिमे
रिक्शावलाके अखबार कीनब
सार्थक बुझना जाइ छै।
(9)
बूढ़ ओ नेनाके
नहि करिऔ शामिल युद्ध मे
ओ शक्तिहीन होइ छथि,
मासे-मास मारैत रहू छागरके
सुआदि-सुआदि खाइत रहू मासु
ओकरा मारैमे कम शक्ति लगै छै
बाघक अपेक्षा।
(10)
कारखाना बनतै, महल बनतै
भेटतै रोजगार हजारोके
आमदनीक मोटगर पधार लगतै
बिलड़ा बांटत हिस्सा
तैयो सबहक जेबी मे किछु ने किछु अऔतै
सभगोटै जेता बजार
बजार में सभकिछु भेटतै
नहि भेटतै त' मात्र अन्न।
(11)
बहैत धारमे
कतौ जमकल खर-पात मे ओझरा
ठमकि गेल छै परम्परा,
जेकरा अतीत सं जोड़ि
आत्ममुग्ध भ' रहल छैं पीढ़ी
पीढ़ी, जे वर्त्तमान छै, भविष्य छै
आ छलै भूतोकालमे विद्यमान
मुदा परम्परा कते दिन ठमकतै?
धारमे नित्य उझिलल जा रहल छै
ट्रकक ट्रक अवशेष
अवशेष प्रदूषित छै
ठेलवे करतै खर-पात कें
प्रवाह हेतै, परम्परा आगू बढ़तै
बढ़ैत जेतै प्रदूषण युक्त परम्परा।

सम्पर्क : आकाशवाणी
दरभंगा
मो. – 09835684865



नबकनियां

– किशन कारीग़र

मोन रखियौ कनेक हमरो पिया
सोलहो सिंगार कए बैसल छी हम एसगर
भेंट होएब कहिया अहाॅ मोन मे आस लगेने
अहाॅक बाट तकैत छी हम एसगर।
कौआ कूचरल भोरे-भोरे
चुपेचाप हमरा केलक सोर
कहलक जल्दीए औतहुन तोहर ओझा
लिपिस्टीक लगा हम रंगलहुॅं अपन ठोर।
परदेश जाइत-मातर यौ पिया
किएक बिसैर जाइत छी नबकनियां के
नहि बिसरब कहियो परदेश मे हमरा
सपत खाउ हमरा पैरक पैजनीयां के।

जूनि रूसू अहाॅ सजनी नहि घबराउ यै
मोन पड़ैत छी अहाॅ तऽ लगैत अछि बुकोर यै
मुदा कि करू नहि भेटल तनखा समय पर
नहि किनलहुं अहांक लेल लहंगा पटोर यै।

साड़ि पहिर हम गुजर कए लेब
नहि चाहि हमरा राजा लहंगा पटोर यौ
अहाॅक सुख-दुख मे रहब सहभागी
देखितहुँ अहाॅ सॅ झहरैत अछि नोर यौ।

अहिंक बियोग मे दिन राति जरैत छी
इजोरिया मे टुकूर-टुकूर अहिं के देखैत छी
अहिंक संग एहि बेर घूमब चैतीक मेला
मोने मोन हम एतबाक नियार करैत छी।
बड्ड केलहुँ नियार अहाॅ आबि कऽ देखू
मुस्की माइर रहल छी हम चौअनियाँ
जल्दी चलि आउ गाम यौ पिया
चिट्ठी लिख रहल अछि एकटा नबकनियां।

– ग्राम : मंगरौना, भाया : अंधराहाटी,
जिला : मधुबनी, मिथिला

दूटा कविता–

– उमेश मंडल

बाधा

विदा भेल मंगला पूभर
कान्हमे टँगने अछि साइकिल बाउलपर
कहुना कऽ लगिचेलक
लटपटाइत पहुँचल
धारक कछेरमे

बिनु पानिक अछि धार
चक-चक करैत अछि बाउल चारूकात
नाउ नहि बाउल देखि भेलै
मंगलाकें थोड़े होश एलै
अपन छूछ जेबीपर भरोस भेलै
आब टपैमे कोनो नइ हएत बाधा
पहुँचबे करब सरायगढ़क ओइपार
मुदा,
मंगला लटकि गेल घाटपर
नजरि दौड़ौलक अपन कोनो लाटपर
अपन जेबीमे देने हाथ
तकैए चारू कात
आब की करबै हौ बाप
ई तँ लेबे करतै घाटी
जेना लगैए एकरा उठल छै आँति
सुखलौ घाटक लेतै खेबाइ
नै देबै तँ देत ई रबारि
सएह भेल मंगला घुरि गेल
पछिमे मुड़ि गेल।

भोगी

नाँच करए बानर
चाउर खाए बबाजी
बीचमे तँ अछि सरोकारी
विकास नाओपर भऽ रहल अछि नाँच
मानसिकता, मानसिकता, मानसिकता
पसरल अछि चारूकात
नीक बात
किएक नै हुअए विकास



बिक रहल अछि चारूकात
ब्लड प्रेशर आ डायबिटीजक गोली
संगे-संग
तैयो बबे छथि तियागी
भरि जीवन भोजन केलनि बैसारी
ऊपरसँ दवाइयोकेँ बढ़ौलनि बेपारी
भोग करैत-करैत भेल छथि उघोर
तइपरसँ रटना छथि ताबड़तोर
स्वर्ग जाए चाहैत छथि सोरफोर
हमरा बीचमे हुअए कोनो नै बाधा
हम सबदिन रहलाँ मधुशाला
बनलै तँ अछि विचारशाला
जइमे लटकल अछि बड़का ताला।

रूसल धीया

- राजदेव मंडलक

कथीले एलौं सासुरसँ रूसि
भऽ गेलौं हल्लुक, गप्प छलै फूसि
सासुर बास जीनगीक बास
नैहरक बास चासे मास
असगरे एलौं आब की रहल बाँकी
आँखि उनटबैत बजली लालकाकी-
नहि बाजू ढाकीक ढाकी
नहि सोहाइत अछि चुप रहू काकी
फाटि गेल आब हिया
कनैत बजली धीया
टूटलाहा घर आ तोतराहा बर
थप्पर चलबैमे सभ तुर चरफर
सासु चलाबै ठुनका पति भॉजैत अछि डॉग
केकरा कहबै मोनक बात ससुर पीबैत अछि भांग
पहिने बचत जान
तबने राखब कुलक मान
कतबो नीकसँ करैत छी काज
तइयो वएह उलहन-उपराग
ई नहि छी हमरा भागक खेल
जानि बुझि पठेलहुँ ओहि जेल
राखि लेलहुँ छातीपर पथ्थल
नहि रखने छी डर
चाहे किछो बितइ
आब नहि जाएब ओहि घर।
बसातक धुजिनी
सदैव ई मकड़ा सभ
बढ़बैते रहैत अछि जालकेँ
आ फँसबैते रहैत अछि



कीड़ा-फतिंगाकेँ
तैयो, भिन-भिनाइते रहैत अछि
निडर भऽ कऽ दू-चारि गोट
आ तेँ फँसैते रहैत अछि
छद्म-चालिमे
ओना ई आवृत रहैत अछि निर्बल
किन्तु, नहि कएलक कहियो
तोड़बाक प्रयास ओ डेरबुक सभ
परन्तु आइ उठल अछि
पुरबा बसात
आ जोरगर मेघो अछि ओहि कात
आबि रहल गड़-गड़ाइथ तोड़ैत ताल
टूटी जाएत अब ई प्रपंची जाल।

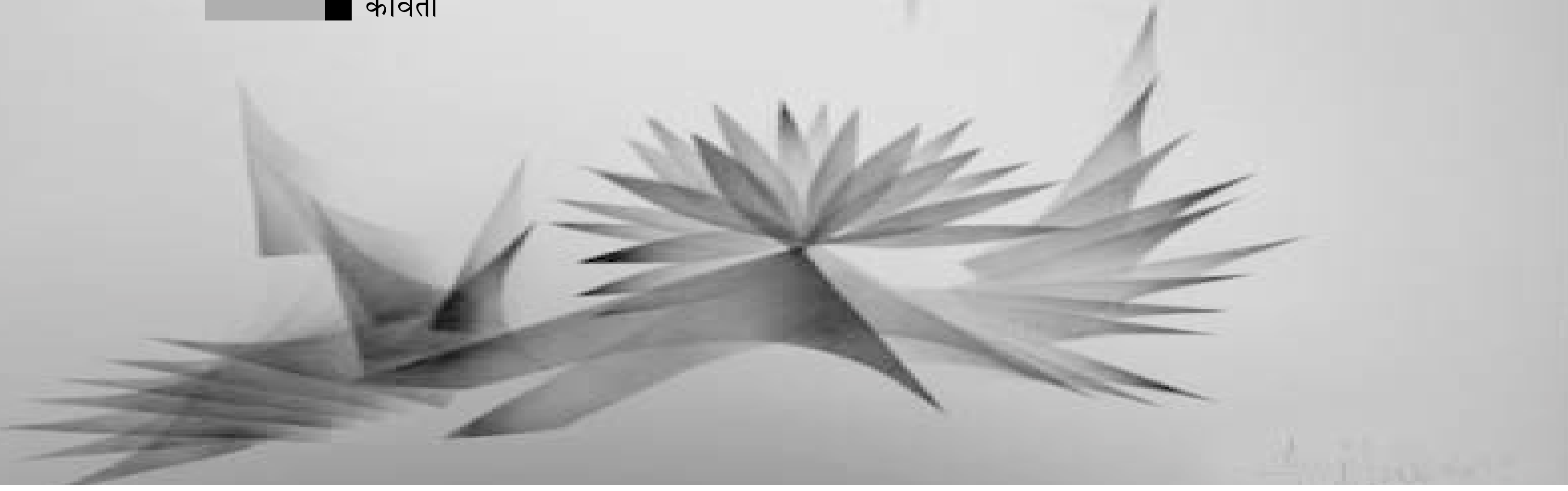
अदृश्य आगि-

एहि भीतरिया धधरामे
जरि रहल अछि
हमर ओ आकांक्षाक गाछ
कतेक पैघ भऽ गेल छल
एकर डारि-पात
कतेक झमटगर आ विस्तृत
बुझि पड़ैत छल एकर शीर्ष
भऽ गेल हो गगनचुम्बी
असंख्य लोग बिश्राम पौने हेता
एकरा छाँहमे
किन्तु ई अदृश्य आगिक धधरा
केहेन निर्मम अछि
जे भष्म कएने जा रहल अछि
सौंसे गाछकेँ
नहि अछि अग्निशमक यंत्र
हमरा लगमे
आ जँ रहबो करैत
तैओ नहि मिझा सकितहुँ
जँ मिझायो जाएत
तँ कि भेटैत छाउरक अतिरिक्त।

गीत

-चन्द्रशेखर कामति

टिकली करय चमचम मुँह छै महिसक चाम सन
देखि कऽ पड़ेलौं कनियाँ लागय कारी झाम सन
कारी-कारी मुँह
बड़-बड़ आँखि टुकुर-टुकुर
अन्हरियाक कीड़ी जकाँ
बड़य भुकुर-भुकुर



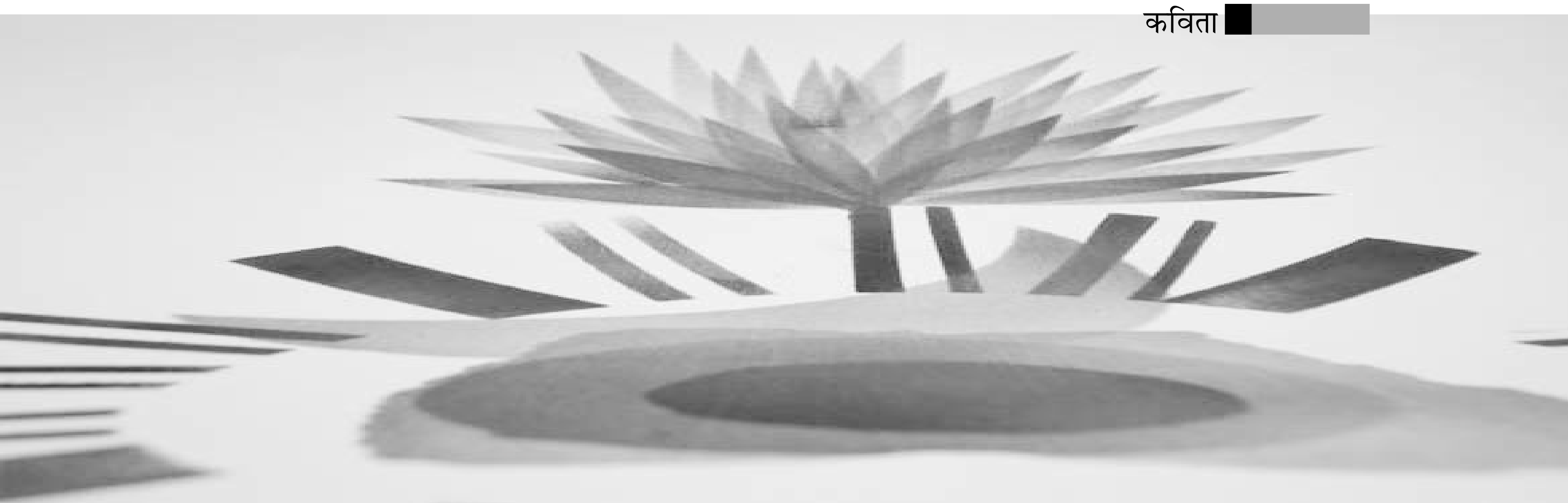
ठोरो लागय जरल-जरल
चिनिया बदाम सन... ॥
नीपल-पोतल नाक
तैपर खुट्टा सन-सन बुट्टा
हब्बर-हब्बर बाजब
मुँहमे पानक गुलुट्टा
पटोक कटनि लागय
टिनही डराम सन... ॥
मधमोंगर सन देह लगैए
डम्फा सन-सन चाँर
नाकोसँ चुबैत जेना
पसबय केओ माँड़
हाथों पएर लगै छनि जेना
टिटहीक टांग सन... ॥

कोना क' अंतिम नमन करब

- शिवकुमार झा

(कन्या भ्रूण हत्या पर एक छोट रचना)
कोना क' अंतिम नमन करब,
आँचर कैं अहाँ कलंकित कएलहुँ
पुत्र जन्म सेहंतित सपना मे
करुणाधारिणी निर्दयी भेलहुँ ॥
नहि देखलहुँ आदित्य नहि शशिक शिखा,
नहि नभ देखलहुँ नहि देखलहुँ वसुधा
नहि भेटल छोह नहि मृदुल क्षेम,
नहि मोती माणिक्य रजत हेम,
पाँच मास अहँक गर्भ में रहलहुँ
जनपरिजनक तिरस्कार सहलहुँ
अपैत बूझि कएलहुँ अहाँ गर्भपात
भेल अपूर्ण नेना पर वज्रपात
अछि कोन ओ शक्ति मनुसुत मे
जे बेटी मे नहि दर्शित भेल
मणिकर्णिका क शंखनाद सुनिते
वृद्ध कुंवरक यौवन झट धुरि गेल
दुःख एक्के वातक तातप्रिया
सृष्टि देलनि संतति कें गरल पिया
पावन आर्यभूमिक सुनयना
वैदेही कैं देलीह माटि मिला
भववंधनक ई केहेन दर्शन
नीर क्षीर विनु बीतल जीवन
तजि गेल प्राण त' अनल अर्पण
अमिय मधु सँ पुत्र कएलनि तर्पण
एक बेरि हमरो जौ कहितहुँ अहाँ
जीवन मे सुधा बोरि देलहुँ माँ
देतहुँ सतरंगी परिधान
पुत्र सं बढ़ि क' करितहुँ सम्मान
दिअ आशीष हमर जननी
फेरि बेटी वनि नहि आबी अवनी
नहि सूखय पुनि नव किसलय दल
नहि जल सँ पहिने भेटय अनल

- प्रबंधक, संग्रह
जेएमए स्टोर्स लि., मेन रोड
बिस्टुपुर, जमशेदपुर



हम की करू ?

– इन्द्र भूषण

जँ गाबी सभ कहैए
कनै किएक छिऐ ?
जँ कानी सभ कहैए
ई की गबै छिऐ ?
जँ चुप रहू सभ कहैए
बाजै किएक नहि छिऐ ?
जँ बाजी सभ कहैए
हल्ला किएक करै छिऐ ?
आखिर बाजू वा चुप रहू ?
हम की करू ?
केओ कहैत अछि
अहाँ ई किएक नहि करै छिऐ
केओ कहैत अछि
अहाँ ओ किएक नहि करै छिऐ
ई करू तँ
ओ प्रसन्न होइत अछि
ओ करू तँ
ई रूसि जाइत अछि
सबकैँ मनाऊ कोना
हम की करू ?
बिना पुछने करू तं कहैए
पुछलां किएक नहि
जँ पुछिऐ तंऽ कहैए
अपने किएक नहि सोचै छिऐ
अपना समझसं करू तं कहैए
सदिखन एना मनमरजी किएक करै छिऐ
अपन पक्ष सभकें बुझाऊ कोना
हम की करू ?

रोबोटिक कामपुष्प

– प्रवीण काश्यप

एक गवाक्षहीन पाथर सँ हमहूँ प्रेम कयलहुँ
एक डिल्डोक संग हम कतेक बेर कामदग्ध भेल छी !
हम एक पुरूषार्थी पशु,
हम शावसम रसहीन विवर मे
अपन तनाव कैँ गला कऽ जीने छी !
हम विरक्त संवेदन शिखरक
भुकल ध्वज कैँ जीवंत करवाक
चेष्टा मात्र कऽ सकैत छी
मुदा कुहल घाटीक मलबा मे
हम कियेक अपन यौवन नष्ट करू ?
आब ह्दय मे नहि मौन बैसल छथि
कोनो वैष्णो देवी !
नहि जमैत अछि कोनो ठाढ़ हिमलिंग !
मात्र बँचल अछि किछु लारगंथ्रि
आ ओहि मे सँ बहैत रेबिजक विष !
करेजाक स्वाद चिखबा लेल व्यग्र
अपन मूल सँ दूगूना भेल
दू जोड़ी केनाइन श्वानदंत
आ संभोग करबा लेल,
संधि कैँ विवश, हमर मन
एक निष्पृह रोबोटिक कामपुष्प मे।



स्वतः प्रमाणम् परतः प्रमाणम्

अरुणाभ सौरभ

ई वस्तुतः एकटा कथा छी की नहि से हमरा नै बुझल अछि। जौं एकरा कथा मानी तै अहू मे जिनगी के वस्तु सत्य आ यथातथ्य भेटत की नहि सेहो हम नै जानैत छी। मुदा ई कथा मे एकटा गाम छैक आ गाम मे स्त्री। ई ओ गाम छियैक जै मे हम बच्चा मे खेलैत-धुपैत, लड़ैत-झगड़ैत भागित रहलहुं। मुदा बेर-बेर ओ गाम हमरा पाछां पड़ैत रहल आ कहियो हमरा गाम हमरा सं बिलग नहि भेल आने ओ गामक स्त्री सेहो। हम कथाक बहाना मारि फुसि-सत्त केर मिलैत-जुलैत भभारा फेकि रहल छी - जौं कोनो व्यक्ति कें अही मे सत्त गप्प कनियो टा लागय तं तैयो बुझू जे हम अहांकैं बुटिया कैं ठकि लेलहुं।

जतय गुदरी पहीर सिया अंगना निपय
चलू प्रीतम ओतय.... (नवल जी)

तं चलू हे मैथिलीक पाठकगण अपना सभ कोनो विधिये रेल यात्रा शुरू करी। पटना सं भोरे-भोरे दानापुर सहरसा इंटरसिटी एक्सप्रेस मे बैसी। बरौनी क बाद ओ गाड़ीक आधा भाग दरभंगा जायत छैक आ आधा सहरसा। बरौनीक बाद तें ओ ट्रेन टटका पाल खायल महीस जकां हुकुर-हुकुर करैत चलत। बरौनी-बेगूसराय- खगड़िया-मानसी तक तं कुनू बात नै। ओकर बाद देखियौ तं बुझाएत जे बदला धमारा इएह दुनिया मे अछि सभटा



बुनियादी सुविधा सं वंचित जन ट्रेन मे दूध टांगत साइकिल टांगत आ घासक बोझ सेहो लाधैत भेटि जाएत सभ-बोगी मे। तं चलू आब अहां कौहुना सहरसा पहुंचि गेल छी स्टेशन सं बाहर निकलि दहिन मुड़ि जाउ आ तखन चांदनी चौक आएत आ तकरा सं भीड़ भाड़ गाड़ी छकड़ाक पार करैत महावीर चौक दिस आएब आ कने दूर आगू बढला पर ठमकि जाएब ओटो वला सभक स्वर सुनि - बनगाम, महिसी, वनगांव, बनगांव... चैनपुर... चैनपुर ... पड़री..... चैनपुर... महिसी .... महिसी... आ आउ महिसी वला टेम्पू पर बसि जाय तखन ओ टेम्पू अहांकेँ बनगांव होति महिसी पहुंचा देताह।

आब हम मानि कें चली जे अपना सभ अखन महिसी मे छी। गोरहो धारक चारू कात पसरल अथाह हरिहर धरती गाछ विरिछ जकर कतहु ओर-छोर नहि भेटलत। पानिभरनीक कोकिलकंठी तान सं अहां जं मंत्रमुग्ध नहि होयब तं कथाकार कें पकड़ि कें दस जूता देव।

महिसी ओ गाम छियैक जतए खिस्सा-पिहानी मधुछत्ता मे लटकल मधुमाखी जकां अछि। ककरो चिढ़ानै होमय तं बस एक बेर कहि दियउ-भूजा-भुज्जा... बस ओ लोक अहांकें मारै ल' छुटताह। एतए भगवती उग्रताराक प्राचीनतम मंदिर अछि। तं सबसं पहिने जूत्ता खोलि भगवती उग्रताराक दर्शन क' लिय। भोरका सूर्य महिसी मे उग्रतारास्थापक मंदिर घंटा ध्वनि कें नमस्कार करैत अछि। प्रति पुष्प ओतय सिद्धु कुञ्जिका स्त्रोत केर उच्चारण करैत भेंट त।

ओहि ठामक पोखरि सं माछ उछलि-उछलि कँ कील-कवच-अर्गला पढ़ैत भेटत। आउ सिंहद्वार सं भगवतीक दर्शन करबाक हेतु प्रवेश करी। जौं अहां वज्र नास्तिक छी तं ओ मेढ़िर केर गर्भगुहा मे पसरल अंधकार अहांक कान मे मैथिल तनयाक संगीत साधग्ना गूंजि उठत, की अहां कान मुनबै। आब उग्रताराक प्राचीनतम वास्तुशास्त्र केर नमूना रूपें ही सही मूर्ति देखयौ। बहुत नहि सूझत। लाल-चुन्नी मे लपटल कारी स्याह स्वरूप छनि ओ मुरुतक - आछी भगवतीक। मंदिर सँ दर्शन क'क आपिस आउ सम्हरिक। बाहर मे अनेको छोट-मोट बड्ड पुरान ऐतिहासिक मूर्ति सभ सेहो भेटत तकरो देखने जाउ आ है सम्हरि कँ सिंहद्वार सं बाहर निकलू आ कुनू मिठाय दोकान मे बैसि कें पेड़ा कीनब आ चूड़ा दही-चीनी खाय लेव। सौंझका पहर छी पानक दोकान पर आबि अठन्नी गोली भांगक मारि दिउ एकर कनीकालक बाद तारंगित भ' जायव। आ चलू एक दू घंटा घुमू हमरा संग भरि गाम आ कोशी बान्ह...।

डेगे-डेगे मचान भेटत जाहि पर ताश खेलैत गामक मोनसा सभ मचान खचाखच भरल भेटत। आ ओ बाँशक मचान पर ताशे टा नहि भरि गामक राजनीतिक डीलिंग सेहो भेटत आ छौड़ी-मौगीक गप्प सेहो करत की बुढ़बा की छौंड़ा सभ - एतबे नहि आरती-मंडन सभ कंठ मे घुललो भेटत। शंकराचार्यो आ वशिष्ठ मुनि सेहो ओतय भेटत। अही सभक बीच एक बेर एकटा बहु सक्खर कवि कथाकार जनमल मुदा रहल बहुत कम। ओ कविक चेतना संग महिसिये सं रंगल रहल। नै चिनहलियै - फूल बाबू अपने फूल भोय ... महिसीक लोकक लेल अखनो फूले बाबू...

राजकमल चौधरी तं बहुत कम्मे लोक जनैत छैक। मुदा ओ राजकमल चौधरी महिसीक वास्ते कहियो पुरान नए भ' सकैये। आ आरो अनेको खिस्साक जन्मस्थली छी महिसी। से ई विशाल बाभनक गाम मे सभ चीज पसरल छैक आने गाम जकां-कतेको अनियाय, शोषण, उत्पीड़न केर महाआख्यान सेहो। तैयो ई कथा मचान पर पसरल गप्प-गप्प केर संगहि देखल भोगल जीयल गेलसाँचक प्रारूप छी।

तें कहै छी एकटा छौड़ा रहए। आने छौड़ा जकां ओहो एकटा छौड़ा रहए। बड्ड गरीब छौड़ा आ रमसाला लग घर रहै। ओ छौड़ा एकटा बपुतगर घर मे एकटा दोसर छौड़ाक संगी भ' गेल। ओ दूनू बड्ड बौआबे। एही तरहें गरीबहा छौड़ाक नाम रहए-माधो ठाकुर। माधो छपफीटा देहक दोहरा बान्ह-छान्ह वला पिरश्याम छौड़ा आ बपुतगर घरक छौड़ाक नाम सुजीत चौधरी 5 फीट दस इंच 55 सीना आ छत्तीस डांड़। दूनू गोटेक भजारी चकाचक इजोरिया मे कोसी बांधक बोल्डर जकां चमकर। अही बीच मे एकता नीक घटना घटलै, कहू जे कथा मे ट्विस्ट आएल। परसौनी गाम (मधुबनी जिला) - एकटा चिर उद्धत्त यौवना-श्वेत वर्णा मुक्त कुंतला नायिका केर ब्रिफकेस उठाकए महिसी मे आगमन भेल। सुनील बाबूक पिसियौत बहीन रहथीन। नामो तेहने विलक्षण जे एक्के बेर मे अप्पन नामे से मोन मोहि लेबाक सामर्थ्य राखए वाली! प्रतीक्षा नाम रहैन आ धवल व्यक्तित्वक स्वामिनी रहथिन।

माधो जखन पहिल बेर प्रतीक्षा कें देखलथिन्ह तँ बुझेलैन जीवनक चिर संचित प्रतीक्षाक बनहन फुजि गेल हो। कोनो उमड़ैत समुद्रक वेगक क्षणिक विश्रांति। माधोक नजरि मे महिसी अपन वर्तमान सं निछोह दरबर दए कए पड़ाए गेल अतीत। जाहि मे पनभरनी इनापर संस्कृत बाँचए लागल रहुनका लागल जे शंकराचार्य शास्त्रार्थ करबा लेल जाय रहल छथि आ भारती मंडन केर धाम पुछि रहल छथि। आ पनभरनीक मुंह सं संस्कृतक बखार मे जेंकल अनाज भड़भड़ाय कए बहरा गेल होय। - ''स्वत: प्रमाणम् परत: प्रमाणाम्।'' मंडन मिश्रक सुग्गा गीताक श्लोक बांचि रहल हो-

''किरीटीनमे गदिनम् चक्रिणम् य तेजोराशिम् सर्वतोदीप्तिन्तम्

नान्तम् न मध्यम न पुनस्तगदिम् हे विश्वेश्वर विश्वरूप।''

विदुषी भारती भुरुकवा सं पहिनहि ब्रह्म मुहुर्त मे उठली आ स्नानादि करबाक निमित्ते कोशी नदीक छल-छल करैत वेग मे पहुंचली। तखन पांच बजे प्रतीक्षा हाथ मे बारहैन ल'क' भरि अंगना बहारैत रहथिन कि माधो क नजरि पड़लनि। माधोकें लागले जे दुपहरिया सूर्य पर नजरि पड़ल हो। आंखि चोन्हरऐ गेलै। माधो सरपट भागल आ रमशाला पहुंचि गेल। बेर-बेर प्रतीक्षाक मुंहक इजोत भुक्क सं बरि जायत रहैक। ई इजोत एहिना बरैत रहतियैक से कोना हएत। सूरुजो कैं ग्रहण लागै छै कि नए!! गाम मे, सौंसे गाम मे ई खबरि आगि जकां पसरि गेलैक जे मधवा भोरका सुरुज सं पहिने प्रतीक्षाक मुंहक इजोत दैखैत छैक। कि बस! जय तारा माय!! गाम मे लैनबाजी! घोर अनर्थ! प्रचंड अपराध! क्षमा करबा पाप हएत।

पंचक निर्णयानुसार ई फैसला भेलए जे गाम मे लैनबाजी दण्डनीय अपराध छी तें माधोकैं माथ मुड़ि, कारीख चून लगाए गधा पर बैसा कय भरि गाम घुमायल जाय! सौंसे गामक लोक देखतै, से भेवे केलैक। आब बेचारा माधो की करतिऐक ऐ गामक पंच सं के तर्क-वितर्क करत है बाप! एखन मंडनो मिश्र हारि जेतयथिन! तें कहलौं जे माधो देखलकै जे प्रतीक्षाक विवाह करा' देल गेलैक समस्तीपुर जिला। माधोक जीवनक सै प्रतीक्षा प्रतीक्षे जकां रहल! अनंत! आ भोकारि पाड़ि कें कानलाक बावजूदो कियो ई मानै लए तैयार नए छै माधोक गप्प जे राति राजकमल चौधरी रमशाला पर गरदैन पड़का अंगोछा सै देह झारैत रहथिन। माधो कहलथिन जे सौरभ भाय आय भोर मे विदुषी भारती कोसी-स्नाननक लेल जे गेलखिन्ह से नहि घुड़लखिन, भरिसक भासि गेलखिन! आ हमरो जखन अपन समर्थन मे नहि देखलथिन्ह तें एतबा टा कहलथिन जे तू अनगांवा भए कए अल्हुआ बुझवीही महसीक बात! ठौहरी सैए महिसी पर लिखै सं पहिले महिसियो मे जनमए पड़तै... देखही हेबए पनभरनी कहै छैकि नए-स्वत: प्रमाणम! परत: प्रमाणम! ईह मुंह घुमाबै छथि- अनगौंवा, अनहो ... लिया

- हिन्दी विभाग, केन्द्रीय विद्यालय ए.एफ.सी.
बोरझार, माउन्टेन शैडो, अजारा
गुवाहाटी असम-781017, मो.
09957833171



भैयाक सासुर मे

आलोक रंजन

अघन दिस' का सड़क त' बूझले अछि ताहि पर थ्रीह्वीलरक पाछू वाला सीट पर बेसि क' दस-पन्द्रह कीलोमीटरक यात्रा करबाक जे यंत्रणा होइत छैक से हमरहुं संगे भ' रहल अछि। सड़कक रोड़ी आ गड्ढा गाड़ीक पहिया के नींचा आबि क' डांड़ि मे दरद उखाड़ि देने अछि। अहां कहब हम बाहर रहैत अछि त' सुकुमार भ' गेलो मुदा हम कहब जे ई असगरे हमर हाल नैहि अछि।

गाड़ी मे बैसल सब यात्री सं पूछि लियौ सबहक जवाब एके रंग मिलत।लिय अपन कष्ट बतेबाक चक्कर मे ई त' छूटिये गेल जे हम कत' जा रहल अछी आ किएक जा रहल अछी? हियो, ई जाड़ाक मौसम थीक, आ ऐना कहू त' जाड़ा बीति रहल अय...। बितलका साल हमर चचेरा भैयाक बियाह भेल छल। हुनकरे सासुर हम जड़ौरक लाई-मूढ़ि, कपड़ाआ चादर स्वेटर ल'क जा रहल छी। कहबाक अर्थ ई जे हम अपन भायक सासुर जा रहल अछि। सासुर त सासुर होइत अछि अप्पन रहे आ पैघ भाय के...। हम बियाह मे नहि गेल रहि ताहि सं हमरा भेज देल गेल अय। चलू देखिए सासुर केहेन होईत अछि। किछु हमरा उमेर के लड़की ओत' मिलैत अय कि नय। सासुर मे सारि नहि रहे त' कोनो मजा नय अब्बैत छै - ई बात हमरा सुनबाक मे आएल अछि।

ओहि गाम पहुंच क' थ्रीह्वीलर रुकि गेल। सड़कक धूरा केस-मुंह पर पड़ि के हमर

आकृति भुतहा बना देनक अछि। भाइक सासुर मे एहन एन्ट्री कियो नहिं चाहैत अछि। जल्दी सं सब समान रिक्शा पर द क हम हाथ-मुंह धोबाक जगह ताकए लगलहुं। हमर दुर्भाग्य जे ओहि चौक पर एहेक कोनो जगहि नहि छल आ ओ रिक्शावाला सेहो व्यग्र भ रहल छल। हम हाथ-मुंह धोबाक विचार त्यागि देलहुं...।

''अहां के थिकहुं ?'' हम भायक सासुरक दरवाजा पर ठाढ़ छलहुं आ संभवत: हुनकर पत्नी हमरा ई प्रश्न पूछि रहल छलीह जिनकर फोटो हम एलबम मे देखने छलहुँ....। मुदा ई प्रश्न पैघ-पैघ लोकक कानफिडेन्स हिलेबाक लेक पर्याप्त अछि।

''हम सहरसा सं एलहुं अय .... अहांक दियर थिकहुं।'' हमर भावज एतेक सुनतहिं ओना शरमाक भीतर भागलनि जेहिना छोट नेना सब अपन मायक आंचरि मे बिहंसैत नुका जाइछ। हुनक ओ रूप देखक मन जुड़ा गेल...। रिक्शा सं सामान सब उतारि के जा धरि हम भीतर गेलहुं ता घरि भैयाक सार सेहो आबि गेल...।

हमरा स्नान करबाक जरूरत महसूस भ रहल अय। नै जाड़ा बीत रहल अछि तैयो स्नान करबा मे डर भ रहल अछि। लेकिन ओ रसता भरिक धूरा मांटि सं छुटकारा जरूरी अछि। एहि क्षण हम नहा क' रौद मे ठाड़ि छलहुं...। गेंदा फूलक गाछ सब धीरे-धीरे सुखा रहल अछि....। सुखाइत गाछ सभक बीच मे एकाध गोट फूल चमकि रहल अछि। ओ चमक अजीब अछि सूखल फूल सभक मे एकदमे चमचम चमकि रहल अछि। मुदा फूलक छोटाई सं ई बुझा रहल अछि जे गाछ सब अपनहिं फूल के खाए लागलाह। नहिं त गाछक जिम्मा फूल बनेबाक लेल बहुत कम सामान बचि गेल अछि जाहि सं ओ जहिना -तहिना एक गोट टेढ़ -मेढ़ फूल बनल अछि। हमरा मां याद आबि गेल जे रोटी बनेबाक बाद एगो छोट सन टिकिया बनाबैत छलीह। आंगन धूप मे बिछावन फैलल, अछि एहि पर कनेक देर पहिले केओ आराम जरूरे करैत छल। हम एहि समय मे एत' आबिक परिवारक लोक सबहक परेशानी बढ़ा देने छलहुं। देखियो सब कोनाक आवभगत मे लागल अछि। 'धड़फड़ी देखक मन मे अपराधबोध भए रहल अय....।

जा धरि हम खाना खाक' आराम करबाक लेल बिछावन पकर लहुं ताधरि हम्मर आनल एक-एक सामान खोलि देल गेल। अड़ोस-पड़ोस के टोटल स्त्रीगण एत' उपस्थित भ' गेली आ एक-एक सामान क' बारीकी सं परीक्षण कर' लगली।

''ऐह, ई पुरनका ईस्टाइलक स्वेटर आब के पहिरै छै जे तोहर सासुर सं पठा देलकौ....।'' ई बात तं भौजी सं कहल गेल छल मुदा हम खूब बुझै छलहुं जे हमरे लक्ष्य क'क कहल जा रहल अय। हम ओहिना आरामक मुद्रा मे पड़ल रहलौ...।

''अहां किएक पड़ल छलहुं ? कतेक मासक पेट अय ? हमरो गाम मे नर्स बसै छथि... अहां कही तं बजा दी ?'' हमरा उम्मीद नहि छल जे एहि गामक लड़की एतेक मुंहफट होयत। एक मोन भेल जे उठि जाए मुदा आब उठि के बैसबा मे अप्पन हार देखार देब लागल... हम नहि उठलहुं....।

''देखि गे एहेन ओल सन बोल कहलिए तैयो ई मोटका खाल पर कोनो टा असर नहि पड़लै आब कि भरि देह कबछुआ लगा देबे ?'' ''सुनु..सुनु... कबछुआ लगेबाक कोनो आवश्यकता नहिं अछि अहां एत' अबि क' प्रेम सं हाथ पकड़ि लेब एतबे मे हम उठि जाएब।''

''चल मुंहझौंसा परेम सं एकरे हाथ पकड़ब....। एतबा सुनबाक रहै कि सब छौरी आ स्त्रीगण एके संगे खिखिया पड़ली। हम असगरे छलहुं ओहि बिछावन पर ओहिना पड़ल... आब तक मे हमर आनल एक-एक सामान पर छिया-छिया कहल जा चुकल रहे से स्त्रीगण सभक' कार्य तं पूर्ण भ: गेल। ओ सब धीरे-धीरे क'क' अप्पन-अपन ठाम चल गेली। घर मे रहि गेली भौजी अपना मां संगे हुनकर भैया कोनो काम सं बाहर गेल छल...। एखन तक भौजी सं हमर पूर्ण परिचय नहि भेल अछि। जखन सं हम एलहुं ओ छिटकले रहलनि। हमर इच्छा रहे जे हुनका सं हम बात करि...। कनेक हंसी-मजाक सेहो हुए जे दियर-भौजक सोहाग भाग अछि मुदा ओ तं दूर-दूरे फिर रहल छली...।

''भौजी हमरा बड़ा जोरक पियास लागि गेल अय....।'' हुनका अपना लग बजेबाक लेल एहि सं कारगर हथियार हमरा जिम्मा नहिं छल। ओ लोटा-गिलास ल' क' दौड़ली....। आधा गिलास पानी पी क' हम रुकि गेलौं।

''अहां एना दूर-दूर किएक अछी.... हम अहांक दियर थिकहुं... अहां क' खा नहिं जाएब.. एक मिनट हमरा लग बइसू दूटा बात करु।''

नहि, जल्दी पानी पीबि लिअ.. हमरा बहुते काज छल...।''

''सब काज क' झोंकू चूल्हा मे...। कहैते-कहैत हम हुनका बिछावन पर बिठा लेलहुं।

''हम एत' नै बइसब मां देखै छथिन...।''

''जा इहों बांकिए छल ? अहां दू मिनट रुकि क' हमर एकटा किस्सा सूनि लिअ'। फेर अहांक जेइबाक' होयत तं जाइब...।''

ओ रुकि गेलखिन...। हम किस्सा सुनाब लगलहुं-

''एक गोट लड़की छल जिनकर हाले में बियाह भेल छल...। अहिं सन लाज सं भरल। ओ अपन दादी के बहुत करीब छलनि। ओ दादी के बहुत सेवा करैत रहथिन। एक बेर हुनकर पति आयल छल ताहि सं बेचारी क' अपन दादी के सेवा करबाक मौक एको सकेंड के लेल नहि भेटि सकल...। दूल्हा के जाइते ओ अपन दादी के बिछावन दिस दौड़ली... आ दादी क' जाते लगली। जातते - जांतते ओ पूछि देलनि 'दादी हम जे तीन-चारि दिन अपना बर संगे रहलिए तोरा लग नहि एलिओ तोरा खराबो लागलौ ?' दादी की कहलखिन बुझबै ? ओ कहलखिन नञ जे बेटी हमरा एको रत्ती खराब नहि लागलो। हमरा सभक' टैम मे एक-एक पुरुष चारि-चारि, पांच-पांच बियाह करैत छल। सब स्त्री लड़ैत-मरैत एके संगे रहैत छल..। लेकिन कोनो निपुत्री पुरुष से एको घड़ी बात नै क सकै

छल। पुरुख राति के अन्हार मे आवैत छल आ अन्हारे बाहर चल जाईत छल। एहन मे गे बेटी दू गोट बोल तं मिलबे न करे रहै। आ आजुक दिन मे जं तोरा सबहक प्रेम देखे छलहुं तं आंखि जुड़ा जाईत अछि। मन होइथ हमहुं जवान भ' जइतौं आ ओहिना अपना पुरुष संगे हंसि-बोल क रहतौ जहिना तू सब रहै छलै...। कखनहुं कखनहुं तं मन जरि उठैये जे हम आजुक दुनिया मे कियेक नञ जन्म लेलहुं। जानलिए भौजी एतका सुनबाक रहै पोती अपना दादी क' जोर सं गला लगा लेलखिन....।

भौजी जाहि तसल्ली सं हमर किस्सा सुनैत छलीह हम बूझि गेलहुं जे किस्सा मर्म तक पहुंचि गेल।

''अहां बात बड्ड बढ़ियां करैत छी...।ई बात करबाक तरीका कत' सं सिखलहुं ?... अहां करैत की छलहुं ?''

एतेक प्रश्न एक संगे सूनि क' हमरा मजा आबि गेल। हम एक-एक प्रश्नक उत्तर तसल्ली सं देब लगलहुं। धीरे-धीरे ओ हमरा सं खूलि गेलखिन...।अब हमरा लाग'लागल जे हम एहन दोस्त सं एतेक रास दिन किएक वंचित रहलहुं।

''अहां अपन बियाह कहिया करब ? कोनो लड़की नजर मे अछि की ?''

''हम अप्पन बियाह के संबंध मे एखन किछु खास नहि सोचलहुं अय .. आ एखन धरि कोनो लड़कियो नही पसिन्न आएल अछि जे किछो विचार कएल जा सके...। मुदा एक बात तय अछि जे हमर कनियां क' नीक मन-विचार के होम' पड़तै किएक ओ खाली हमर कनिएँ नहि हेतैक ओ ककरो पुतहू, ककरो भौजी, आ ककरो चाची-मामी सेहो हेतै। एहन अवस्था मे तन सं नञ मन सं सुंदर हेबाक आवश्यकता अछि...।''

''कनियांक संबंध मे अहांक विचार बड़ क्लियर छल। महरा विश्वास अछि अहां के नीक कनियां भेटत होयत...।''

''ई तं अहां सभक आशीर्वाद पर डिपेन्ड करैत अछि।''

हमरा भौजी सं एतेक लंबा संभाषणक उम्मीद नहीं छल। मुदा ओत' हमरा सं बात क' क' कमाल क' देलखिन। आब हुनका खाना बनेबाक अछि। हम की करु किछु नञ फुरा रहल अय। कतेक सांझुक अन्हार मे ई गांव धूरि क आबि जाए फेर मौका लागत की नहि के कहलक अय। अपना गाम घरसें।

अपना दिस कूनू इलाका मे चलि जाऊ किछु खास अंतर नञ बुझायत। एके रंग गाम ओहि मे एके रंग डिजायनक खपड़ाक घर, दस-बारह खपड़ाक घरक बीच मे दू-एक गोट पक्का मकान। हमर भैयाक सासुरो मे ई सब ओहिना छल। सीधा रस्ता पर चलैत चलैत हम एकटा गली मे उतरि गेलो। जखन अपन दिसका कोनो गामक गलि मे अहां उतरब तखनहिं गामक सही तस्वीर नजर आयत। पातर सन ओहि गली मे दूनू दिस फूईसक बत्तीक टाट आ ओहि पर खढ़-पतारक छत हियो एकरा कोना क' घर कहल जा सकैये ? ओहि मे तं कोनो कोठरियो नञ बांटल रहे छल माय-बाप आ बाल बुतरु सब एकै संगे ओहि मे राति बितबैत छल। दिन भरि थाकलाक बाद के धियान दै छैक जे कत' की भ' रहल अय। जाड़ा बीति रहल अय, तैयो सांझुकई पहर मे हवा मे कनेक तुर्शी बढ़ि गेल छल हम मोटका टी-शर्टक ऊपर मे जाकिट आ गला मे मफलर सेहो लटकौने छलहुं। कने एहि गली मे देखियो छोट-छोट नेना भुटका फटल-पुरान मे एम्हर से उम्हर फिरि रहल छलाह, ओहि फाटल सन कपड़ा मे ओ बच्चा सभ कतबा सुरक्षित छल ई अहाँ बेहतर जनैत छलहुं मुदा की करबै ! स्थिति सँ समझौता त करै पड़ै छैक। इ हम की अनुभव क रहल अछी एखन ज हम ई गली मे भीतर तक धंसि चुकलहुं तथा एको गोट हमरा उमेर बा हमरा सं पइघ मरद-पुरुख नजर नहिं आयल। कत गेले सभ ? तुरंत मन सं जवाब आयल जे सब कत जेते दिल्ली-पंजाबक अलावा कोनो आब जगह कहां छल जे एतेक मात्रामे जमा भेल अकुशल श्रमिक क' खपा लेल। लोक बीबी बच्चा सँ दूर भ' क' नोट कमेबाक लेल कत-कत' नञ बनक पात तोड़ि रहन हेता। आ अहि ठाम कनिया-पुतरा ओ नमरी पचसटकहीक आस मे अपन देह-मन सबक मारि क चातक जकां टकटकी लगेन छल। देशक सरकार ढ़िढ़ोरा पीटि रहल छल जे हम विकास केलहुं, वैज्ञानिक सभ मस्त छथिन जे चन्द्रमा पर चंद्रयान छोड़ि देलियै मुदा एतेक गोट स्त्रीक भावना, आ बच्चा स बचपना कोन यंत्र बनाक लौटा लेबे हमरा। ई पुछबाक अछि। विकास करबाक अय तं नीक सं करियो लोकक घरक आसपास रोजगार दियौ जे आदमी मशीन हेबा सं बचि जाय। सब घरक आगू मे घूरि मे आग पड़ि गेल। सब घूर सं धुआं निकलि क' आकाश मे मिल रहल छल। ओहि सं पहिले दीप ल'क तुलसी चौरा दिस 'सांझ बीतल जैइये गबैत स्त्रीक' छाति म ओ धुआं परदेश बसै बाला पतिक स्मृति बनी क भरि गेल अछि...। ई नया गाम मे आर आगू बढ़बाक मतलब छल जे रस्ता पूछि क' घर आब' पड़त, से बेहतर ई जे एत सं वापस भ' जाए..।

''कुर्सी ल' क' एतहि आबि जाउ...।'' आटाक गुल्ली क' हाथ में दबाइत भौजी बजली आ हम दु प्लास्टिकक कुर्सी ल' क' ओतहि चल गेलहुं।

''की देखलियै हमरा गाम मे ?''

''किछु नया नहि, वैह सब जे एकटा गाम मे होइत छैक।''

''हां त' गाम त गामे सन हेरौ की ओहि मे सींग नांगड़ि थोड़े लागि जेते... ?'' हुनकर सींग-नांगड़ि' बला बात आ ओ बाजबाक अंदाज के हमर हंसी छूटि गेल मुदा ओ गंभीरे बनल रहली। हमरा बुझा गेल जे हिनकर मन मे किछु चलि रहल अछि। हम चुप भ गेलहुं।

''अहांक परिवार मे कनियां गे कनियां कहिक संबोधित कएल जइए ?'' भौजीक इ सवाल हमरा बुझबा मे नहि आयल...।

''की मतलब - हम नहि बुझलहुं ?''

''अहांक भैया हमरा गे सुमनियां' कहिक संबोधित करैत छलाह, मुदा बंद घर मे ओ हमरा किछु कहता हमरा खराब नहि लागत मुदा हमरा मां, भैया सखी-सहेली आ समूचा गामक सोझां मे सेहो ओ ओहिना बजैत

छलाह....।' ई सूनिक हम भीतर से हिल गेलहुं भौजीक पिनी पर नोर झलफलावत देखिक हम सम्हरि गेलौं।

''अरे, ओ अहाँ सं बहुत प्रेम करैत छलाह ताहि सं ओ अहां सं ओहि शैली मे बजैत छलाह...।''

''छोड़.... हियो कुकुरो बिलाइ बोलि के ऊंच-नीचे बुझि जाइत अछि हम तऽ मनुख थिकहुं...। ओ हमरा सँ एको रती प्रेम नै करैत छथि। असल मे हम हुनकर कल्पना सुंदर नहि रहि जाइत छलौंह आ जखन बिछौन पर बस दू-गोट देह रहि जाइत छल तखनि कनेक देर लेल हमरा प्रेमक पता चलैत छल....।''

भौजीक आवाज हुनकरे नोर सं भीजल जा रहल छल। चामक गोराय एते महत्वपूर्ण भ' जाइछै जे पत्नीक आत्मसम्मान आ भावनाक केर कोनो अर्थ नञि रहि जाइत अछि। आ पत्नियों मनुखे थीक जानवर नञि, ई भैया क कोना समझाउ।'' भौजीक बनायल फूलल फूलल पूड़ी सब पाथर बुझा गेल...।

''भौजी अहां क कहियो भैया के रे अमितबा' कहबाक मन नहि भेल?''

ओ किछु सोच लगली....।

''मन तं बहुत करैत छल मुदा एहि समाज मे स्त्रीयेक लेल सब लोक-लाज आ मान-मर्यादा बना देल गेल छल।'' अहां एखन हुनका रे कहबै.... भ सकैयै ओ बिगड़ि जेता मुदा लोहा क लोह काटि सकैत अछि...।''

''एखन.... हुनका हम रे कोना कहबै....?'' भौजी घबरा गेलीह किछु चुल्हाक गर्मी आ किछु घबराहटक मारल हुनकर पसीनाक बूंद चमकि उठल। हम अपन मोबाइल फोन निकाली क' भैयाक नंबर लगा देलहुं आ फोनक स्पीकर ऑन क देलहुं।

''हैलो भैया हम अहांक सासुर आयल छलहुं..।''

''हां बौआ... कहु की हाल?''

''सब ठीक छल... लिऊ भौजी सं बात करू...।''

हाँ, गे सुमनियां जल्दी बाज हमरा टैम नञि अय....।''हमहुं अपना कान सं सुनि लेलहुं... भौजीक आंखि मे नोर चमकि गेल।

''की भेली... जल्दी बाज ने...।'' हमर नजर भौजी पर टिक' गेल...। हुनकर चेहरा गंभीर गेल छल।

'' हां रे अमितबा... कोन छौरी के टैम देने छलही जे एतेक जल्दी छौ। आब बाज ने चुप किएक भ' गेले...?'' आब हम भौजीक हाथ सं फोन ल लेल्हुं।

''भैया अपना कनियांक अहां सम्मान नञि करबै तऽ आन लोक केना करतै? हम गाम जा क' सब के' कहि देब जे अप्पन परिवारक प्रतिष्ठा अहां आन गाम मे कतेक ऊंच क' देने छलहुं।''

''बौआ... हमरा सं बड़ के पैघ गलती भ' गेल। आइ से हम अहांक भौजीक उचित सम्मान देब... लेकिन अहां गाम टा मे किछु नहि कहबै... कनेक भौजीक फोन दिऔ...।'' एहि बेरि भौजी झपटि क फोन छीन लेलनि..।

''हेलो... सुमन, आय हम बहुत शर्मिंदा छी अहां हमर आँखि खोलि देलहुं आ आब एक गोट उपकार आओर क' दिअ... हमरा माफ क' दिअ... देखियो हम कान पकड़ै छी....।''

आब अहां चुप रहू....।

ई भोरक समय थीक...। हमरा वापस अपन गाम जेबाक अय...। भौजीक' हमरा आबै देबाक मन नै भ' रहल छलै..। हमर बैग छिनैत हुनकर चेहरा नया मटकूड़ि मे राखल ताजा दही सन पवित्र नजर आबि रहल छल...। मन जुड़ा गेल।



घोड़ी पर चढ़ि लेब हम डिग्री

विनीत उत्पल

जे कथाकार नहि हुअए ओ कोन आ केहन कथा लिखत, एकर ठेकान तँ कियो नहि कऽ सकैत अछि। मुदा युवा पीढ़ीकेँ देखि कऽ कोनो कथा लिखब संभव नहि अछि आजुक कालमे। तकर बादो कियो हुनका लऽ कऽ लिखैत अछि तँ कहि सकैत छी जे ओ सभटा लिखि रहल अछि। एकरा मादे हमर ई तर्क अछि, जे युवा अछि ओ केना बुझता जे ओ सतमे युवा छथि या नहि जखन एहि भारत मे 80 बरखक बुढ़ जे.पी. युवाक नेतृत्व कऽ सकैत अछि, जीवनक आखिर कालमे देशमे संपूर्ण बिगूलि फूकि सकैत अछि, तखन युवाक उम्रक की सीमा मानैत अछि कियो।

नेनामे जखन स्कूल जाइत अछि तखन सभ सोचैत अछि जे कॉलेजमे खूब उछल-धक्का करब। कॉलेजमे गेलापर लागैत अछि जे करियर बना लेब तकर बाद तँ अपन जिनगी अछि आओर जखन करियर बनि गेल, ब्याह भऽ गेल तकरा बाद दुनिया सूझै लागैत अछि। जखन जिनगीक ई परिभाषा अछि तखन युवाक कोन कथा लोक सभकेँ सुनाओल जाइत अछि। मां-बापक सपना, भाइ-बहिनक इच्छाक आगू सपना तँ अधूरे रहि जाइत अछि। यएह हाल तँ आलोकक छल। हुनकर नजरिसँ देखियौ तँ ओ कहियो युवा भेल या नहि स्वयं नहि जानैत अछि।

एकटा आओर गप, एहि कथाक शीर्षक पर एखन नहि जाऊ। अहाँ तँ जानतै छी जे ब्याह करहि लेल लड़का घोड़ीपर बैसि कऽ बाराती जाइत अछि। मुदा आब हमरा ई नहि कहबै, 'आंय हो, हमरामें तँ लड़का घोड़ीपर बैसि कऽ बराती नहि जाइत अछि। ई कोन गप अहाँ कऽ रहल छी। एहि गपमे हम एतेबे

कहब जे अहाँक बिरादरीमे ई विधि नहि होइत अछि, एकरामे हम कत्तौसँ दोषी नहि छी। किएक तँ जिनकर जाति, वंशमे जे भेल आयल अछि, ओहि विधिकेँ हटायब 21म शताब्दीमे बड़ कठिन गप अछि। फेर ईहो गप अहाँ हमरा नहि सकैत छी जे कत्तौ घोड़ी पर चढ़ि कऽ डिग्री लेल जाइत अछि। तं सुनू ई चे गप छैक घोड़ी पर चढ़ि लेब हम डिग्री ई हमर नहि अछि। ई गप आलोक बाबू हमेशा कहैत छला।

आलोककेँ अहों तँ जानैत छी। ओ, ओ आलोक नहि अछि जकर अर्थ रोशनी होइत अछि। ओ, ओ आलोक अछि जे मां, पिता, बहिनक कारण अप्पन सपनाकेँ घूरिमे जरा कऽ आस्ट्रेलियाक ब्रिसबनमे रहैत अछि। पिछला तीन बरखसँ ओ अप्पन देश नहि आयल अछि। ओतय तीन शिफ्टमे काज करैत अछि। हुनका नीन नहि होइत अछि। लागैत अछि जे हुनका नहि सुतबाक बीमारी भऽ गेल छनि। मुदा आलोक बाबू एकटा जिंदा मशीन अछि जे अप्पन सपनाकेँ मारि कऽ लोकक सपनाकेँ यथार्थमे बदलहि लेल काज करि रहल अछि। हुनकर जिनगीक कथा मझधारक एहन नावक कथा अछि जकरा कोनो दिशा नहि देल जाइत अछि। मां-पिता हुनकर जिनगीक खेवनिहार अछि, जेना ओ चाहता, ओहिना हुनकर दिशा भऽ जाएत।

छत्तीसगढ़ राजधानी अछि रायपुर। ओहि शहरमे एकटा मोहल्ला अछि शंकरनगर। एतय पिता बड़ मनोयोगसँ एक-एक पाइ जोड़ि कऽ घर बनौने रहथिन। आलोकक पैतृक घर तँ भिंड-मुरैना लग रहनि। जतौका जंगलमे कहियो डकैतक राज चलैत रहै। पिता, के.जी.कुशवाह, फूड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया मे काज करैत रहथि। हुनकर ब्याह भोपाल भेल छल। टूटा बच्चा छल। पहिलुक आलोक आ दोसर बेटी किनू। दुनू पढ़ैमे खूब तेज। मुदा रायपुरमे रहैक कारण हिन्दी माध्यममे पढ़ाइ भेल छलनि। तहिसँ हुनकर अंग्रेजी कमजोर छल।

मां-पिताक सपना छल जे हुनकर बेटा खूब पढ़ि-लिखि कऽ बड़का आदमी बनि जाए। इंटर केनहि कालमे माँ सोचथिन जे हमर बेटा सी.ए. बनि कऽ नाम कमाबै। ताहिसँ हुनकर एडमिशन बी.कॉममे करबा लेल जिद पकड़ि लेलखिन। एकटा बेटा ओहिनो माँकेँ बेसी दुलारु होइत अछि। आखिकार माँक जिद मानल गेल आओर बी.कॉम मे एडमिशन लऽ लेलक। बी.कॉम मे नीक मार्क्स अएलै आओर सी.ए. क तैयारी लेल आलोक दिल्ली आबि गेलाह।

दिल्लीक पूर्वी इलाका लक्ष्मीनगर सी.ए. क गढ़ मानल जाइत अछि। एतय कतेक सी.ए. केँ तैयारी करबैक लेल कोचिंग संस्थान अछि, अंगुरीपर गिनलो नहि जा सकैत अछि। आलोक एकटा नीक कोचिंग संस्थानमे एडमिशन लेलक। कामर्स तँ नीक लागैत छल हुनका मुदा सी.ए. बनैक कोनो चार्म नहि छल। कोचिंग करैत, एक-दू बेर परीक्षा देलक मुदा ढ़ाकक तीन पात रहल। ओहिनो हर बरख पाँच पसेंट तँ सी.ए.क रिजल्ट होइत अछि। करीब तीन साल तक दिल्लीमे रहलाक बाद रायपुर घुरि आयल। मायक सपना अपूर्ण रहि गेलनि। सी.ए. बनैक कोशिश रंग नहि आयल। एकटा आलोक छल जे कखनो मां-पिताक आगू अप्पन सपनाक गप नहि बतैलखिन। जहिना जे गप दुनू प्राणि कहैत छल, तहिना मानैत छल। किछु दिन डिप्रेशनमे रहलाह आलोक। मुदा माय तँ माइये होइत अछि। नया सपना देखैमे कोनो दोषो नहि अछि।

किछु दिन बीतल तँ घरमे कलह हुअए लागल जे आलोक आबि कऽ की करताह? घरमे अनुशासन एतेक कड़ा जेकर गप कहलो नहि जाय। दुनू भाइ-बहिनकेँ माँ-पिता जे कहतियै, से ओ सभ करै। अहिमे एक दिन मांक मनमे आयल जे बेटा सी.ए. नहि बनल तँ की भेल, ओ वकील बनताह। हुनका कियो सुझाव देलनि जे वकील तँ गाँधीजी सेहो छल, जवाहरलाला नेहरु से हो, जखन ओ प्रधानमंत्री बनि सकैत अछि तखन अहाँक बेटा तँ ओकरोसँ तेज अछि। आलोककेँ कहियौ जे ओ एल.एल.बी. मे एडमिशन करा लेताह आओर शहरमे कॉलेज अछि। खूब मन लगाकऽ पढ़ताह आ रायपुर राजधानी भऽ गेल अछि, खूब केस-मुकदमा हेबे करत, ताहिसँ हुनकर वकालतक धंधा खूब चलत। आखिरकार जहिना माँ क मन बदलल आलोकक करियरक राह सेहो बदलि गेल। आब ओ बैरिस्टरीक पढ़ाई लेल एडमिशनमे जुटि गेल। हुनकर मेहनत आओर आशीर्वाद रंग आनलक।



पारस

दुर्गानन्द मंडल

''शान्ति यै शान्ति कतए नुकाएल छी यै फूलकुम्मरि ?''
शान्ति- ''एलौं याए एलौं।'' आंगनसँ शान्ति हाक दैत लग सोझामे ठाढ़ि होइत पुनः बाजि उठैत छथि- ''कथीले एतै जोर-जोरसँ हाक दैत छलौं ? कोनो खास बात छै की ?''हम- ''ऐह, अहाँकेँ तँ सदिखन मजाके सुझाइत अछि। खास बात की रहत, अहाँ छी तँ सब खासे बात बूझु। ओना आइ विद्यालयक छुट्टी समाप्त भऽ गेल तँ झट दऽ खाइले किछु बनाउ। जे हम समएसँ विद्यालय चल जाएव।''

शान्ति बजलीह- ''ओ..., आब ने बुझलहुँ। अहाँ तँ सब दिन गोलहे गीतकेँ गबै छी। ओना हे, आइ बड्ड सखसँ अपनहि बाड़ीसँ सुआ आ लौफक साग काटि अनलहुँहें। तँ आइ साग-भात आ आल्लुक सानाक संग भाटा-अदौरीक तीमन बनवितहुँ से निआरने रही। मुदा ताहिमे तँ देरी होइत। तावत अहाँ स्नान-पूजा करू आ हम जलखैक ओरिओन कऽ दैत छी।''

''बेस, बड्ड बढ़ियाँ। कने अंग-पोछा आ धोती-कुरता बहार कऽ दिअ।'' हम धोलूकेँ हाक दैत छी- ''धोलू हौ धोलू। कतऽ छह हौ ?''

''ऐलौं, याए ऐलौं बाबू जी, कने नदी फीरि रहल छी।''

''वेस, बड्ड बढ़ियाँ। आ वौआ, है सुनै ? आइ हमरा विद्यालय जेवाक अछि। से जात हम स्नान करै छी। तात् तौं साइकिलकेँ बढ़ियाँ जेकाँ झारि-पोछि दाए।'' ई कहैत हम स्नान करबाक लेल डोल-लोटा लऽ कलपर चलि जाइत छी। स्नानोपरान्त पूजा-पाठ कऽ धोती पहीरि तैयार होइते छी तात् शान्तिक आग्रह- ''सुनै छी, अहाँले जलखै निकालि देने छी, कऽ लिअ।'' ई कहैत

आगॉमे सिकीक चंगेरी, जे रंग-विरंगक रंगसँ रगसँ मुजसँ बनौल गेल रहए, ताहिमे मुरही-चूड़ा, टूटा चूड़लाइ आ गोट पाँचेक तीलक लाइ संगमे कॉच मेरचाइ आ नोन परसल छल, आगॉ बढ़ौलनि। एक क्षणक लेल हम मिथिला, मैथिल, मैथिलक संस्कार आ सयतासँ बहुत बेसी आनन्दित भेलहुँ। मन गद्-गद् भऽ गेल। तात् शान्तिक मधुर आवाज- ''कतए हेरा गेलहुँ? एखन यएह खा, विद्यालयसँ भऽ आउ, जखन आएव तँ गरमे-गरम साग, भात, अल्लुक साना आ भाँटा-अदौरीक तीमन भरि मन खाएव। ओना जाड़ मास छै यदि किछु आरो मनमे हुअए तँ कोनो हर्ज नहि।'' कहैत, हँसैत सोझासँ अढ़ भऽ गेलीह। आ हम जलखै करैत एहि मादक अदाक मादे सोचए लगलहुँ। हमरो मनमे गुदगुदी लागए लागल। जलखै करैत एक बेरि पुनः कहलिएन्ह ''शान्ति, यै शान्ति...।'' नहि जानि जे हुनको मनमे कोनो बात उमरि रहल छलन्हि। ओ गुनगुनाइत ई गीत- ''एगो चुम्मा दे दऽ राजा जी, बन जाइ जतरा...।'' चुम्मा

आदि वाणभटक नायिका जेकाँ लगमे सटि कऽ ठाढ़ि होइत एकटा चुम्मा लऽ छथि आ मुस्की दैत घरसँ बहार भऽ जाइत छथि। हम लजा जाइत छी।

करीब चालीस मिनटक उपरान्त विद्यालय पहुँचैत छी। हाथ-पएर धोलाक वाद हाजी बनवैत छी। प्रार्थनाक घंटी बजैत अछि आ धिया-पूताक संग हमहुँ एक पाँतिमे ठाढ़ भए जाइत छी। उपरान्त ऐकर नवम्-बी मे हमर वर्ग रहैत अछि। हाजरी बही लऽ वर्गमे प्रवेश करैत छी। वर्ग नवम बी जे एकछाहा लड़कीएक वर्ग रहैत अछि, स्वागतार्थ सभ बच्चिया उठि कऽ ठाढ़ि भऽ जाइत अछि। वैसबाक आदेश पावि यथास्थान सभ बैसि जाइत अछि। सबहक हाजरी लेब सम्पन्न होइत अछि। तखन किछु बच्चिया सभ बाजि उठैत अछि- ''मा-साएब, आइ ललका पाग पढ़बियो, क्यो कहति अछि जी नइ सर आइ ग्रेजुएत पुतोहू पढ़बियौ। मुदा किछु खास बच्चिया यथा- राखी, गीतांजली, खुसबू, बबिता, रिंकी आ पिंकी कहि उठैत अछि, - ''जी ने सर आइ अहॉ अपने लिखल कोना कथा कहियौ। आ हम ओहि आग्रहकैँ नहि टारि पबैत छी। शुरु कऽ दैत छी अपन लिखल ई कथा- ... पारस।''

माँ मिथिलाक गोद आ कमला महरानीक कछरिमे बसल एकटा गाम दीप-गोधनपुर। जाहिमे छल एकटा चाहबला ओकर नाम छल पारस पिता श्री नारायण जी। नामक अनुरूप दुनू बापूत विपरीत छल। पिता श्री सत्य नारायण जरूर मुदा, सब चीजले खगले रहैत छलाह। एकटा प्राइवेट स्कूलमे अध्यापण कार्य करथि आ कोनो तरहेँ बाल-बच्चाकैँ पोसाथि-पालथि। हुनकेर बालकक नाम पारस। नामक अनुरूप एकदम विपरीत, मझौले कदक जवान देहो-हाथ सुखले-टटाएल कारी-झामर हाथ-पाएर एकदम सुखल-साखल मुदा, पेट जरूर कदीमा सन अलगल। देहो-वगेह ओहने, सदिखन जेना मुँहसँ लेर चुविते छलै। फाटले-चिटले कोनो जूता-चप्पल पहिर ओही प्राइवेट स्कूलमे पढ़ैत छल। मुदा अकिलगल कम नहि।

सत्य नारायणजीक घर जरूर बान्हें कातक सौ फिट्टा अर्थात् सरकारी जमीनमे छल, मुदा संस्कार कोन सुसभ्य समाजक प्रतिक छल। सत्य नारायण बावूकैँ हरलैन्हि ने फुरलैन्हि खोलवा देलखिन पारसकैँ एकटा एकचारी देल चाहक दोकान। अर्थाभाव कारणे पारस उधार-पैंच लऽ कीनि अनलक चाहक दोकानक लेल बरतन-वासन यथा केटली, ससपेन, चाहछन्नी, स्टोव, दूध राखक लेल दूटा टोकना आ दूटा माटिक मटकुरी छाल्ही राखक लेल। चाहक दोकान जे नित्य समएसँ खुलैत आ बन्द होइत छल। क्रमशः महिसिक अगब दूधक चाह, एक्को ठोप पानिक छुति नहि, बरतन-वासन खुब पवित्र आ संस्कारी होएवाक कारणे ग्राहककैँ सेहो उचित सम्मान भेटनि। चाहक दोकान खुब चलनि। क्रमशः पाँच सेर दूधक बदला आध-आध मन दूध खपत होमए लागल। आमदनी नीक होमए लगलैक।

किछु पुंजी जमा केलाक बाद ओ एकचारी छोड़ि लऽ लेलक पक्काबला एकटा घर दोकान खोलए लेल। बना लेलक एकटा काउन्टर आ बढ़ा लेलक दोकानक मेल। साँझु पहरकैँ बनाबए लागल सिंहहारा आ गरमा-गरम जिलेबी बात एककानसँ दूकान होइत गेलै एकर दोकानक नाम भऽ गेलै दोकान खूब चलए लागल।

समए पाबि 26 जनवरी आ 15 अगस्तमे प्रसादक लेल विशेष आदर पावि बनाबए लागल मनक मन बुनियाँ आ भुजिया। अगल-बगलमे प्राइवेट कोचिंग चलौनिहार संचालक आ निदेशक महोदयक योगदान एहि दोकनकैँ चलाबएमे अहम भूमिका रखलक। दिन दुना आ राति चौगुना उन्नति होमए लगलैक। मनक-मन दूध खपत होएवाक कारणे घी सेहो बनवाए आ नीक दाममे बेचाए। देखैत-देखैत चाहक दोकानक आमदनीसँ कीनि लेलक ओ तीन बीघा जमीन। मुदा एकर उपरान्तो ओ चाहो बेचाए। आ पढ़बो करए। समए पाबि प्राइवेट स्कूलसँ सातमा पास कऽ ओ एकटा संस्कृत विद्यालयमे नाओ लिखा लेलक आ मध्यमाक फारम भरि फस्ट डिविजनसँ पास केलक। आव तँ ओ किछु बेसिए खुश रहैत छल। मध्यमा पास केलाक बाद ओ अपन नाओ जनता काओलेजमे झंझारपुरमे लिखा लेलक। तखनो ओ वेचारा चाहो बेचए आ पढ़बो करए। आइ.ए. पास केलाक बादो कोनो परिवर्तन नहि। काओलेजसँ ऐलाक बाद चाहक दोकानपर ओ जमि जाए। यद्यपि चाह बेचब एकटा केहन काज मानल जएतैक ई विवादक विषए अछि। ओकरा एक्को पाइ लाज -संकोच नहि। किएक तँ कर्म कोनो खराप नहि होइत छैक। कमा कऽ खाइ एहिमे कोन लाज कोनो कि ककरोसँ भिख मंगबै जे लाज होएत। तँ चाह बेचब अधलाह काज नहि से मनि ओ खुब जतनसँ अपन कतर्व्यक निर्वहन करए।

बुझिनिहार मैथिलमे एकर चर्च होमए लागल, जे देखू पारस चाहो बेचैए आ पढ़बो करैए। देखिते-देखति ओ मैथिली औनर्ससँ बी.ए. पास केलक। परोपट्टामे नाम भऽ गेलैक जे एकटा चाहबला चाह बेचैत बी.ए. पास केलकहेँ। तखनो ओ चाह बेचब नहि छोड़लक। बात पसरैत गेल।

सत्य नारायणजीक घर जरूर बान्हें कातक सौ फिट्टा अर्थात् सरकारी जमीनमे छल, मुदा संस्कार कोन सुसभ्य समाजक प्रतिक छल। सत्य नारायण बावूकेँ हरलैन्हि ने फुरलैन्हि खोलवा देलखिन पारसकेँ एकटा एकचारी देल चाहक दोकान। अर्थाभाव कारणे पारस उधार-पैंच लऽ कीनि अनलक चाहक दोकानक लेल बरतन-बासन यथा केटली, ससपेन, चाहछन्नी, स्टोव, दूध राखक लेल दूटा टोकना आ दूटा माटिक मटकुरी छाल्ही राखक लेल।

एकबेरि एकटा कथा गोष्ठीक मादे सुपौल जेबाक छल। चारि गोट मात्र विदा भेलथिन दिन अछैते मुदा, कोशी महरानीक अभिशापे नावसँ यात्रा करए पड़ल आ घंटा भरिक बाद मात्र चारि घंटामे तय भेल सुपौलसँ पहिनहि झल अन्हार भऽ जरा सेहो गेल रही। तँ चारू कथाकार चाह पिबाक लाथे बैसलों एकटा चाहक दोकानपर। दोकानदारसँ- ''हौ, चारि कप चाह दिहह।''

ओ बाजल- ''जी, श्रीमान दै छी।'' कहैत ओ चाहक जोगार लगबए लगल।

तात् ओतए गप्प तेसरे आदमी चलौलन्हि। जे गोधनपुर गाममे एकटा चाहबला अछि पारस बी.ए. पास। बी.ए. पास केलाक बादो ओ चाह बेचब अधला नहि बुझैत अछि। चाहो ततवेक सुन्दर आ व्यवहारो ओकर ततवेक सुन्दर छै।

वाह। हर्ष भेल जे समाजकेँ एहि वातक नजरि जरूर छैन्हिह जे एकटा पढ़ल-लिखल लोक चाह बेचैत अछि। ओकर नजरिमे कोनो काज करबामे हर्ज नहि।

एम्हर देखु जे वर्तमान सरकारमे नगर-पंचायत, जिला परिषद, टेन पलस दू विद्यालयमे नियोजनक भेकेन्सी भेल। तात पारस मैथिलीसँ एम.ए. सेहो कऽ लेलक।

भैकेन्सीक अनुसार विभिन्न जिलामे आवेदन केलक। समए तँ जरूर लागल। मधुबनी जिलाक मेधा सुचीक प्रकाशित भेल उपरहिमे ओकर नाम छलै। नियोजनक निमित्त सभ आवश्यक कागजात, मूल प्रमाण पत्र एवं पथ पत्र देलाक वाद ओकर चयन इच्छानुकूल परियोजना विद्यालय मनसापुरमे मैथिलीक लेल भेल।

समाजक सभ वर्गकेँ एहि बातसँ हर्ष भेल जे सत्यानारायण जीक बालक पारस आइ टेन पलस दू विद्यालयमे मैथिली पदपर नियोजित भेलाह। साझखन सभ ओही चाहक दोकान पर आवि कहलक ''सत्य नारायण आव ओना काज नहि चलत, आव भोज-भातक आयोजन कएल जाउ। भोज लागत।''

सत्य नारायण आरो अह्लादित होइत बजलाह- ''सभ एहि समाजक आशीर्वाद थिक। अहीं सबहक अशीर्वाद थिक जे आइ पारस चाह बेचैत-बेचैत टेन पसल दू विद्यालयक शिक्षक भेल। हम एहि समाजक ऋणी थिकहूँ। आइ जे समाज नहि तँ हमर कोनो अस्तित्व नहि। आइ हमहूँ गोरवान्वित भऽ रहल छी जे हमर बेटा हमरे बेटा नहि एहि समाजोक बेटा। जे एहि समाजमे सिर उठा कऽ छि, एकटा अलग स्वाभिमान देलक। एकटा आदर्श देलक। तँ हम भोज देवेटा करब। भोज जरूर करब।''

समए सुअवसर पावि बावू केलनि बड़का भोजक आयोजन। लगुआ-भगुआ हित अपेक्षित मित्र-बन्धु आदि एहि भोजमे नहि छुटथि आ हुनकर उचित सम्मान हुएए एहि बातक सदिखन खियाल रखलनि।

दुनू तरहक आयोजन छल, शाकाहारी आ मांसाहारी। निमंत्रित व्यक्ति सभ समएसँ उपस्थित भऽ आ स्वरूचि भोजन केलनि। शाकाहारीक लेल आयोजन छल। पुरान तीन-सलिया बासमती चाउरक भात, राहरीक दालि आमिल देल, पालक पूड़ी, पालक पनीर, आमक चटनी, सलाद, तरल मिरचाइ, मटर-आलू-परोर देल डलना, बड़ी अदौड़ी, सकरौड़ी ताहिपर डब्बूक डब्बूक घी। महीसीक अगव दूधक तौलाक-तौला दही, तरहतथी सन मोट छाल्ही बुझु तँ खेनिहार तर आ भोजेतक व्यवस्था उपर। दहीक तँ कथा खेनिहार कम आ तौले बेशी। सभ क्यो गद-गद भऽ गेलाह।

एम्हर मांसाहारी लोकनिकेँ लेल अरवा चाउरक भात आ आध-आध मनक जुआएल खस्सीक लद-वद करैत मांस। किसमि-किसिमक देल गम-गम करैत एखहक टा पीस बुझू जे सए-डेढ़ सए ग्रामक। ऐह अजोध खस्सी, माउस। बनलौ ततवेक सनगर। सभ भरि मन खएलाह। आ उपरसँ सेरक सेर दही आदमीपर। तर-बत्तर छलाह, भोज तँ जस-जस भऽ भेल।

सभ कियो भोजनो करथि आ पारसक चर्चो करथि। जे पारस तँ पारसे अछि। वस्तुत: पारस आब ओ पारस नहि रहल जे चाह मात्र बेचै छल। चाहे बेचेत ओ पारस तँ आव समाजक लेल ओ पारस भऽ गेल। जेकर गुणसँ कतेको नेना-भूटका आव चाहेटा नहि बेच समाजक बीच शिक्षाक ज्योति जलाओता। जाहिसँ अपना समाजमे पारस, पारस मणि गुणसँ प्रभावित होएत आ पारसक गुणसँ अपना समाजक कतेको बच्चा पारस बनताह।

अन्तत: बाउ लोकनि अहीं सभ कहू जे अहाँ सभ घर आंगनाक काज करैत पढ़ि लिखि की बनए चाहैत छी ?''

एक स्वरमे उत्तर भेटैत अछि मास्सैव हमहूँ पारस बनवै पारस। कहैत सभ बच्चियाक संग राखी, गीतांजली, खुशवू, बवीता, रिंकू, पिकूक नोरसँ भरल ऑखिमे एकटा विशेष आत्म विश्वास हमरा बुझना जाइथ अछि। जेना ओ प्रखर ज्योति बहराएल हुए अनमोल मोती परस।



हमर समाज

विरेन्द्र कुमार यादव

बिन्नू आ बीरू बालसंगी छलाह। दुनू गोटे कोशीक कछेर नाम घोघड़रियामे मरूआक रोटी आ पोठी माछक चटनी जलखै खाइत छल। रेडियो बाजि रहल छल जे ''लिंक रोड निरमलीमे विष्णु महायज्ञ शुरू, अछि, जहिमे गणेशजी महाराज लोक सभकेँ लड्डू दैत छथिन्ह।'' ई सुनितहि बिन्नू अपन भजार बीरूकेँ कहलखिन– ''यार, घोर कलियुमे गणेशजी लड्डू बटैत छथि। एक दिन आ अपनो सभ प्रसाद लए आबि।''

दुनू भजार आश्चर्य करितहुँ यज्ञ मेला देखवाक निश्चए कएलक। ओहि बीच गामक ठकनी काकी मुँहमे पान गलठैत हाथमे बजैत रेडियो नेने लगमे आबि बजलीह– ''यौ बिन्नू बौआ, एहि कहलक जे लिंक रोड ईटहरीमे गणेश भगवान लड्डू बँटैत छथिन्ह, अपनो सभ चलेचलु गणेशक लड़ू लए आबि।''

बीरू बजलाह– ''रौ बकलेलहा, एहि गामे बस, मोटर चलबाक तँ रस्ते नहि अछि, तोँ रेल मंगबैत छँ।''

बीरू हँसैत बजलाह– ''गै काकी जहन माटिक गणेशजी लड्डू बाँटि सकैत छथि। तखन बिनु पटरीक रेल किएक नहि आओत?''

बीरूक बात सुनि बिचहिमे बिन्नू कहलखिन– ''अहाँ सभ बकझक जुनि करू, धर्मक काज देखबा, सुनवा आ कएलासँ स्वर्ग होइछ। हम सभ मिलि देवी पूजा पाठ आ दर्शन करए एक दिन अवश्य जाएव।''

गामक पैघ आ देहोदशासँ भरिगर पंडित कमलशेखर बाबूसँ भेटि कए दुनू शुभ दिन तकौलक आ भाड़ाक बदलामे तेलपर परमाबावूक ट्रेक्टर भाँज कएलक।

जेठ मासक रोदमे ठकनी काकी, बीन्नू, बिरू आ गामक लोक सभ ट्रेक्टरसँ यज्ञमेला देखबाक लेल प्रस्थान कएलाक। उबड़-खाबड़मे ट्रेक्टरक झोलामे झुलैत, रंग-विरंगक गप्प-सप्प करैत यज्ञ स्थल माने मेला पहुँच

गेल।

यज्ञ स्थलपर अनगिनित लाउस्पीकरक आवाजसँ भारी शोर-शराबा छल। एहि बीच साइकिल स्टेंडसँ एगो चीकन युवती समतोला रंगक समीज सलवार पहिरने, आँखिपर रंगीन गोगुल्स धरौने, हाथक मोबाइलसँ फोटोग्राफी करैत ठकनी काकीपर नजरि पड़ितहि बजलीह- ''मौसी अहाँ आबि गेलहुँ, बढ़ियाँ भेल, भेंट-मुलाकात भऽ गेल। हम तँ प्रचारे सुनि अएलहुँ। एतेक लोकक भीड़ तँ एहिठाम कॉलेज परिसरमे देशक प्रधानमंत्री बाजपेयीजी आएल छलाह ओहूमे नहि भेल छल।'' ई सोलह बरिसरक बाला प्रेमलता जे हालहिमे पत्रकारितासँ जुड़लीहेँ सएह छथि।

एहि यज्ञ मेलामे अनेको लोक-लुभावन कार्यक्रममे भोरूकवा रेडियो स्टेशन एफ.एम 12.8, राजविराज (नेपाल) सँ आएल मैथिली भाषी कलाकार सभ मैथिली भाषाक विकासक लेल आ समाजकेँ प्रगतिमूलक शिक्षा हेतु बढ़िया कार्यक्रम देखौलक।

ठकनी काकीक संगे प्रेमलता आ गामक लोक कार्यक्रम आनंद लैत मुरूतक दर्शन करए आगू बाढ़लाह। सभसँ पहिने घोर कलियुगमे सतयुगक कामधेनू गाए देखितहि प्रेमलता बजलीह- ''मौसी, कामधेनूक थनसँ चुबैत दूधक पान करू आ जिबतहि स्वर्गक बदलामे माक्ष प्राप्त करू।''

प्रेमलताक एतेक सुनि बीरू बाजि उठल- ''काकी कामधेनूक चारू दिस आँखि खोलि कऽ ताकू। ई बुद्धिक कमाल आ व्यवसायक धार्मिक तरीका छी। जाहिपर कोनो ऑगुर नहि उठए आ शांतिसँ पाइक संचय हुए। ई सभटा पाइ हिन्दु धर्मक ठीकेदार बाबा आ पंडितजीकेँ पाकिटमे जाएत, जाहिसँ बाबा आ पंडितक जिनगी शान-शौकत आ भोगविलासमे बीतत।''

ठकनी काकी लोकक एतेक भीड़ रहितहुँ ठेलि-ठालि कऽ अमृत पान कएलक आ लोको सभकें करौलक। बीनू कहलखिन- ''ओहिठाम लोकक बड्ड भीड़ छैक ओतए चलि देखू कोन देवता की बाँटैत छथिन्ह। सभ गोटे ओहि भीड़क लग गेल। श्रद्धालू भक्तगण गणेश भगवानसँ टाका दए प्रसाद माने लड्डू लेबाक मुड़ कटबैत छल।''

प्रेमलता मुरूतक सजाओल दृश्यक फोटो खींचैत यज्ञशालाक बगलमे ठाढ़ दलीह आ

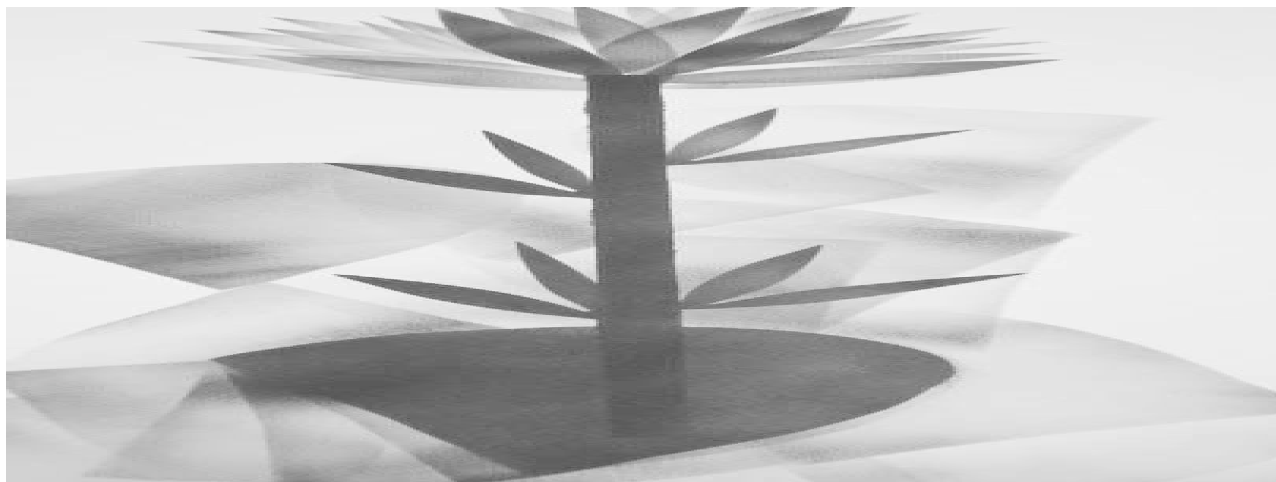


मोनमे रहनि जे किछु श्रद्धालूजनसँ साक्षात्कार करी आ संवाद प्रेषित करी। तावत काल माथपर भोगारसँ उजरका आ सिनुरिया चानन घसल गेहुमा रंगक मोटगर लोक उजरका धोती पहिरने प्रेमलताक सोझा आएल। प्रेमलता पूछि देलखिन- ''पंडितजी ई की भए रहल अछि।''

जोरसँ ठहाका दैत पंडित जी बजलाह- ''ई धोर कलियुग बीत रहल अछि। मनुक्खक गप्प छोड़ू आब तँ देवता लोकनि सेहो पाइक लेल दोकान खओलि देलक। हिन्दु धर्मक चादरि ओढ़ि अधार्मिक, अनैतिक काज करबा लेल हमरा समाजक प्रतिष्ठित व्यक्ति सभ कतेक तत्पर अछि से सभ आँखि खोलि देखबाक लेल आएल छी। दुनियाँक लोक सभ चाँदपर लेल प्रयासरत अछि, आ हमरा समाजक लोकसभ साहुकार गणेशक लड्डू पाइ दए कऽ पबैत अछि।''

ठकनी काकी प्रेमलताक लग आबि बजलीह- ''गै छौड़ी, केकरासँ गप्प करै छेँ चल एहिठामसँ आब गामो जाएव।''

मौसीकेँ विदा होइसँ पहिनहि प्रेमलता बीरू दिस मुस्की दैत बजलीह- ''अपने किछु कहब ?'' वीरू झटसँ कहलखिन- ''किएक नहि ? सभ लोककेँ धार्मिक होएवाक चाही, मुदा एहिठाम जतेक आडम्बर कएल गेल अछि से उचित नहि। आजुक वैज्ञानिक युगमे ढ़ाइ-तीन लाख रूपैया खर्च कए तमाशासँ वातावरणक शुद्धि, भक्तिमय माहौल आओर गामक नाम उँच केलक एकर अलावा की प्राप्त होएत ? समाजक एतेक रास रकमक खर्च आधुनिक सोचसँ गरीबक बच्चाकेँ पढ़वा-लिखबामे, बिमारीसँ पिड़ित लोकक इलाज करएवामे, गामक विकासमे होएवाक चाही। जाहिसँ हमरो समाजक धीया-पुताकेँ नोबेल पुरस्कार प्राप्त करबाक अवसर भेटय। धार्मिक कार्यक्रम उद्देश्य बदलि गेल अछि। सभटा खेला पाइ हँसोथबाक लेल भऽ रहल अछि। एना कएलासँ हमर समाज आगू नहि बढ़ि पएत। अपितु पाछुए रहत। हमरा सभक लेल हास्यास्पद बात छी।''प्रेमलता मुस्कुराइत हाथ आगू बढ़बैत बीरूसँ हाथ मिलाए मौसीसँ विदा लेलनि। वीरू प्रेमलता दिस आ प्रेमलता वीरू दिस धुरि-धुरि तकैत चलि गेल। विन्नु भाय, अपन भजार वीरूक मुस्कुराइत चेहरा टुकुर-टुकुर तकिते रहि गेल। तत्पश्चात् ठकनी काकी विन्नू आ गामक लोक सभ ट्रक्टरपर चढ़ि गाम दिस विदा भेल।



गल्प

चन्दा पराभव

लम्बोदर झा

चन्दा स्वेच्छा थिकैक। एहि में जोर जबरस्ती नहि होएबाक चाही, दस गोटेक हुजुम बनाए लोक कें डरा कें दवाव दऽ कें चन्दा असूली करबा कानूनन अपराध थीक, दस टका कमाई छी- अपना लेल- वाल बच्चा लेल- धन सम्पति पुरखा अरजि गेलाह हम बचा कें रखने छी धनिक छी- मालिक छी- प्रतिष्ठित छी- अपना भाग करम सॅ- कोनो अहां सब नहि उठा कें दऽ देलहुॅ अछि, हमरा तंग नहि करू जे देलहु से राखु- अनका सॅ सहयोग लिऽ।

हम ने ओहि मंचक अध्यक्षता करब आ नहि कोनों विचार देव अहां सब स्वयं ठनलहुॅ अपन पूरा करै-जाई जाउ- एहि कार्यक्रम निमित्त फेर हमरा कष्ट नहि दी से कहि दइत छी अन्यथा ....। ई चन्दा चुटकी केर झमेला भरि साल तंग करैत अछि, बड़का मुंह लऽ हमरा लग पहुॅचताह- जिल्द मे पहिनाहि सॅ राशि भरल रहैत छैन्ह, अहां अभिभावक छी- अहीं सबहक बल पर ई कार्यक्रम हेतैक- सहयोग नहिं करवैक तऽ सब प्रोग्राम चौपट भऽ जाएत, निट्ठुला लोक सब जिनका कोनों पारिवारिक, दबाब नहि छैन्ह निरर्थक परेशान कऽकें राखि दइत अछि। जखन तखन चन्दा दियऽ। आई सरस्वती पूजा थीक तऽ भरि शहर मे चौक चौरहा बजार जेम्हरे जाऊ चंदा। फगुआ आएल अनेरो दस पार्टी जोगीरा वला अलग-अलग हुजुम बनौने पीने बुत्त केवार- गेट पीटय लागत। फल्लां बाबू फललां बाबू पक्के का मकान- सौ रूपया दे दो फल्लां बाबू के नाम- जोगीरा सरऽ सरऽ रऽ रऽ.........। जे जीवए से खेले फागु। सदा आनन्द रहे एहि द्वारे मोहन खेले होली हो- लियऽ आब सबकें पाई दईत रहु- ओ सब किछु सुनत नहिं अपने धुन मे मस्त- पाई दियौक वा जोगीरा मे गारि सुनु- अकच्छ भऽ किछु नहिं किछु देवहि पड़त। होली बीतल- आब चैती दुर्गापूजा सवार-नौटंकी पार्टी आबि रहल छैक-मुजफ्फरपुर सॅ बाइजी औतेक। शहर मे सात ठाम आब नव चैती दुर्गा पूजा होइत छैक- एको टा पूजा समिति कें अपन पूॅजी वा संरक्षण नै छैक। चन्दा वसूली आधार छैन्ह। जे पूजा ठनलैन से आब

चन्दा लेनिहार कतहु टोकि देताह। अतिरूद्र यज्ञ - महाविष्णु यज्ञ - श्री राम यज्ञ - शान्ति यज्ञ - चाना न ठोप लगौने लोकक आवाजाही लगले रहैत अछि। आई कि त' बाबाधाम सं किओ अयलाह - त किओ बनारस आ कामख्याक नाम कहताह। किछु ने किछु चन्दा धार्मिक भावना जगाए लऽ कऽ निकलि जयताह। अष्टयाम - नवाह - मानस पाठ - भागवत कथा - ई सब तऽ लगले रहैत अछि

परदेश कमाईत छैथ– एतुका लोक सब फूलो पान लऽक पूजा करबे करताह– चलु शुरू भऽ गेल चन्दा अभियान– स्थायी दाता–बैरियर खसा कैं– सब डेरा वाला सॅ– सब ठाम जिल्द लऽक घुमनिहार युवक सब मुस्तैद–केओ छुटए नहिं, पूजा–नाच–तमाशा सम्पन्न। जुड़ शीतल में सेहो ओएह गति– माटि– थाल– गोबर–गाइद लोटा बाल्टी–फुचकारी मे रखने महादेव पार्वती बनल दस–बीस लोकक टोली–तिरबेनिया मे रामा नहाए–खोलू भैया बजर केवरिया सब केओ नशा भांग गाजा मे मातल– ठर्रा, देशी–विदेशी गंध गमकैत–चन्दा दिअऽ। पच्चास–पच्चीस दियऊ वा नहिं तऽ ओकर गोबर– गाइद आ नाली वला माटि डिस्टेम्पर देवाल पर निरहट्ट भऽ फेंक देत। गज भरि ने हारी – थान भरि हारी – कि करब ? देबय पड़ैत अछि।

जेठ – अषाढ़ – बाढ़ि – पानि – गामक – गाम दहा गेल। कोशी अंचल मे भयंकर तबाही – कमला मैया उफान पर – बागमती – गंडक – गंगा सब नदी बान्ह तोड़ि देलह। खंड प्रलय – राहत – बयान – राजनीति – बाढि पीड़ितक सहायतार्थ मुख्यमंत्री राहत कोष मे एक दिनका वेतन। एम्हर डेरा सं सड़क धरि पीड़ित मानव सेवा – वस्त्र – पाई – अन्न जे दी। किछु वास्तविक – किछु व्यवसाय – कि करब ? देबहि पड़ैत अछि। चारि टोलक छौड़ा सबहक हुजुम – हाथ मे टीन रखने ओकरा पीटैत – गेट लग ठाढ़ – मुहर्रम का चन्दा दीजिए – तजिया उठेगा – जलसा होगा – ततेक टीन पीटत – किछु देने कुशल। विद्यापति जयन्ती – पत्र – पत्रिका मैथिली जागरण – मैथिली उत्थानक सवाल छैक – चन्दा लेनिहार कतहु टोकि देताह। अतिरूद्र यज्ञ – महाविष्णु यज्ञ – श्री राम यज्ञ – शान्ति यज्ञ – चाना न ठोप लगौने लोकक आवाजाही लगले रहैत अछि। आई कि त' बाबाधाम सं किओ अयलाह – त किओ बनारस आ कामख्याक नाम कहताह। किछु ने किछु चन्दा धार्मिक भावना जगाए लऽ कऽ निकलि जयताह। अष्टयाम – नवाह – मानस पाठ – भागवत कथा – ई सब तऽ लगले रहैत अछि – मोन सं वा कुमोन सं चन्दा देवहि पड़त। जन्माष्टमी–झूलन मे तऽ कतहु रासलीला छैक–कतहु गीता पाठ–ठाकुर बाड़ी, नव रतन, स्थाल मठ, एहि सब ठाम चन्दा नहिं देवए पड़ैत अछि मुदा ई गली–कुची आ बजार वला सब तऽ रिक्सा रोकि–कूपन–कूपन कहि छोट–छोट–छौड़ा सब दू टका पांच टका बला पकड़ा चंदा लऽ लईत अछि। गणेश पूजा मे तऽ बजारक भीआईपी चन्दा वसूली टीम जिल्द पर राशि भरि लिफाफ मे दए गेट लग फेकि चल जाइत अछि आ दोसरा दिन चारि टा युवक मोटर साईकिल पर वसूली मे पहुँच जेताह–चन्दा देवहि पड़त। गणेश पूजा मे आब सासुरो चौक पर छः दिन पूजा होइत छैक, चंदा संग–संग विदागरि वाला अलगे झंझट। शरदेय दुर्गापूजा में तऽ डेरा सॅ लऽ के गाम तक–दस दिन पहिने सॅ चन्दा अभियान शुरू, स्थाई सदस्य– सब वेर दइत छियैक एहि बेर बढ़ा दियौक मंहगी छैक– नाचक पाई गछि लियहु– जेनरेटर अहीं नाम पर– कुमारि भोजनक भार आहां पर– पंडितक दक्षिणा महाल उठा लियऽ सप्तमी अष्टमी बला होम मे जे खर्च लगैक अहां दियौ–बच्चा सब अहीं सॅ नाटकक खर्चा चाहैत अछि। पंडाल सजावट अहीं के देवए पड़त– येन केन प्रकारे चंदा केर हाइटेक रूप में संलग्न लोकक आमद भोर सॅ सांझ धरि लगले रहैत अछि। काली पूजा में तऽ चन्दा रसीद संग–संग लॉटरी वाला टिकट संगहि रहत। दीवाली में लॉटरी खुजत– भाग्योदय होयत– अहि टिटकारी पर पाई देनहिं कुशल। छठि मे घाट सफाई नाम पर तऽ चंदा देबे करियौ–भोरका अर्घ्य में दक्षिणा अलग सॅ– ठकुआ भूसवा असूली केर ठौर बनले रहैत छैक। एवम प्रकारे भरि साल चन्दा सॅ परेशआन रहैत छी। आमदनी केर दशांस चंदे मे देवए पड़ैत अछि। बाढ़ि, भूकम्प, अगिलगी, राष्ट्रीय आपदा, सुनामी– ई सब अकस्मात चन्दा जॅ नहियों लागत तइयो सिर्फ पूजा, कार्यक्रम साहित्य, सृजन–जयन्ती आदि मे चन्दा दईत नाकोदम्म भऽ जाईत अछि। आ ई चंदा प्राख्यान मे कविजी आई ततेक उत्तेजना मे छथि जे चाह रखले–राखल ठंढ़ा भऽ गेल। तमाकू केर सेप घोंटि गेलाह। हम मूक श्रोता बनि सब गप सुनि गेलहुँ इएह स्थिति तऽ हमरो सबहक बनल अछि। सिक्का चढ़ि देखा–सब घर एकहि लेखा– की करबैक कविजी–चन्दा चुटकी दऽ कें हमहुँ सब पिंड छोड़बैत रहैत छी– अपना सब कम सॅ कम रंगदारी तऽ नहि दइत छियैक– आब जे युग छैक ओहि मे अपना–अपनी बचवाक प्रयास करू। कारण उदण्ड समाज में प्रतिष्ठित बनि कें रहबैक तऽ चंदा चुटकी देबहि पड़त। ई खर्च ''मीसलेनियस हेड'' मे रहए दियौक– ककरा सॅ विरोध करब– नहि तऽ पुबारि ड्योढ़ी वाला बाबू सब जकॉ झांझी कुकुर दूई चारि टा पोसि लियऽ–एहेन जे व्यक्ति औताह हुनका पर हुलका देबन्हि–अन्यथा शहर मे रहब त चन्दा पराभव लगले रहत।

– पत्रकार,
बुद्धनगर, मधुबनी

मिथिलाक व्यंजन



शीला देवी झा

करैलक भरुवा बनावक समान–

1. करैला – 1 किलो
2. सरिसव – 1.25 ग्राम आधा पाव
3. प्याज – पाव भरि (250 ग्राम)
4. लहसुन – 50 ग्राम
5. मिरचाई के गुड़ा – चारि चम्मच
6. धनी के गुड़ा – चारि चम्मच
7. हरैद (हल्दी) – 2 (दू) चम्मच
8. नून (नमक) – स्वाद के अनुसार
9. (सरिसव) करु तेल – पाव भरि।
10. 2 चम्मच अमचूर या 2टा नम्हर टमाटर

सबस पहिने करैला के एक भाग स पेट चीर दियौ फेर ओकरा उसनि लियऽ ओकर बाद चीरला भाग सँ बीया बाहर काए लियऽ। बीया के लहसून, प्याज, सरसों के संग पीस लियऽ। एकटा लोहिया (कराही) में 50 ग्राम तेल ढारि कए पीसलहा बीया, लहसून, प्याज, टमाटर सरसों के संग नून, हरैद, धनी के गुड़ा आर मिरचाई के गुड़ा दऽक लोहिया मे भूजू। किछु कालक बाद देखबै जे मशाला के रंग लाल होमए लागत। मशाला लाल भेल के परान्त ओकरा उतारि लियऽ। ओकरा किछुकाल ठंडा होमय दियौ। जखन मसाला हाथ सहए बला भए जाए तखन एक–एक टा करैला मे ओकरा अकारक मुताबिक मसाला सँ भरि दियौ। जखन पूरा करैला मे मशाला भड़ल भए जाए तऽ फेर लोहिया (कराही) के चूल्हा पर राखि ओहि मे (200) दू सौ ग्राम तेल दए गरम होमय दियौ। फेर ओहि मे दू वा तीन टा करैला जे तेल मे डुबि सकए बारी–बारी सँ ओहि मे तरनाई (तलनाई) शुरू करू। जखन पूरा करैला तरल (तलल) भए जाए तखन बूझू जे ओ खाए बला भए गेल आओर ओकरा सूखल तरकारी के रूप मे खाए सकैत छी। अगर ओकरा झोड़ मे खाए चाहैत छी तऽ फेर लोहिया मे बचल तेल मे पच–फोरना दए दियौ तथा बचलाहा मसाला के ओहि मे दए ओकरा भूजू फेर मसाला भूजलाक उपरान्त ओहि मे पानि दए दियौ। जखन रस खौलए लागए तऽ ओहि मे तरलाहा करैला दए दियौ संगहि ओहि मे स्वाद के मुताबिक नून दए दियौ। किछु काल आर खौलेलाक बाद ओकरा उतारि लियऽ फेर थोड़ेक धनियापात के मेही–मेही काटि कए ओहि रस मे धए दियौ। किछुकाल ठंडा भेलाक बाद आगम सँ स्वाद लए–लए कए खाईत रहू। बुझना जाएत जे मछली खाए रहल छी।

ग्रा+पो. परजुआर पं. टोल
जिला – मधुबनी
मोबाइल नम्बर – 959129091, 9435048874



पावनि - तिहार

तारीख	दिन	तिथि/पावनि
01 जनवरी 11	शनिवार	तिथि/पावनि।
03 ,, ,,	सोमवार	अंग्रेजी वर्ष प्रारंभ/13 प्रदोष व्रत।
04 ,, ,,	मंगलवार	पौषी अमा, स्नान–दान।
11 ,, ,,	शनिवार	मकर संक्रान्ति/पुत्रदा एकादशीव्रत।
19 ,, ,,	बुधवार	पौषी पूर्णिमा, कौशिकी स्नान।
20 ,, ,,	गुरुवार	माघ में कमला स्नान।
26 ,, ,,	बुधवार	गणतंत्र दिवस।
01 फरवरी ,,	मंगलवार	नरक मिवारण 14 व्रत।
02 ,, ,,	बुधवार	माघी मौनी अमावस्या स्नान–दान।
08 ,, ,,	मंगलवार	वसंत पंचमी, सरस्वती पूजा।
14 ,, ,,	सोमवार	मासादि, मौमी 11 व्रत सभक।
18 ,, ,,	शुक्रवार	माघी पूर्णिमा, स्नान–दान।
28 ,, ,,	सोमवार	विजया 11 व्रत सभक।
03 मार्च ,,	गुरुवार	प्रदोष 14 व्रत, महाशिवरात्रि व्रत।
04 ,, ,,	शुक्रवार	फाल्गुनी अमा., स्नान–दान।
05 ,, ,,	शनिवार	जनकपुर परिक्रमारंभ।
16 ,, ,,	बुधवार	मासादि, आमलफी 11 व्रत सभक।
19 ,, ,,	शनिवार	फाल्गुनी पूर्णिमा, निशाभाग में होलि का दाह।
20 ,, ,,	रविवार	सिन्दूर क्रीड़ा, सप्ता डोरा बंधन।
30 ,, ,,	बुधवार	पाप मोचिनी 11 व्रत सभक।

प्रस्तुति : पं. देवनारायण झा
हनुमान मंदिर, भजनका भवन, दिसपुर, गुवाहाटी, मो. 986444425







उदयपुर (त्रिपुरा राज्य) स्थित मां त्रिपुर सुंदरीक भव्य मंदिरक दृश्य। जें आदिकाल सं मैथिलक पूज्यस्थल अछि।







प्रो. उदयनारायण सिंह 'नचिकेता' केऽ सम्मनित करैत मिसांससक सदस्यगण।









ब्रह्मपुत्रक घाट पर मनायल गेल छठ पर्वक किछु दृश्य।



गुवाहाटी कें फाटासील आमबाड़ी स्थित बनैत 'मिथिला भवनक' सीढ़ीक एक दृश्य



मिथिला भवन : महल संऽ पहिने मड़ैयाक एक दृश्य।





मिथिला भवनक जागह पर पहिल बेर दीया-बाती पर्व मनबैत मैथिल-मैथिलानी।